

# ***Whisper of the Cosmos***

***Ram Naam Chitta Sadhana-2***

***राम नाम चित साधना-2***

***Inspirations from Teachings of  
Swamiji Satyanandji Maharaj  
(1868-1960)***

***स्वामीजी सत्यानन्दजी महाराज***

***की शिक्षाओं पर आधारित***

***(1868-1960)***

***Dr. Gautam Chatterjee***

***Series Editor: Sunita Gunjoo***

***Translation: Anupama Mahajan***

**DEDICATED TO**

**Param Guru Ram  
Sat Guru Swamiji Satyanandji Maharaj Shree  
Param Pujya Premji Maharaj Shree  
Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree**

**समर्पित**

**परम गुरु राम  
सद्गुरु स्वामी सत्यानन्दजी महाराजश्री  
परम पूज्य प्रेमजी महाराजश्री  
महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री**

## **ABSTRACT BEAUTY OF RAAUM**

*Hey Raaaum  
You are nirakar jyoti  
Yet most loving beauty of body  
With excellence of eyes and face  
In this aesthetic abstract  
Your beauty multiplies and grow  
As most powerful prem bhava  
That sweeps the mind of sadhana  
As sadhak perceives the concept of  
Eternal Prem in You  
O my loving Raaaaaauuum.*

## **राम का निराकार सौंदर्य**

*हे राम*

*आप निराकार ज्योति हैं*

*पर फिर भी आपश्री का अत्यंत प्रेममय सौंदर्य*

*आँखों व चेहरे का तेज है*

*इस निराकार सौंदर्य में आपका रूप कितने ही गुना बढ़ जाता है*

*जैसे ही सर्वशक्तिमान प्रेममय भाव*

*साधना में साधक के मन को अनंत प्रेम*

*की आप में अनुभूति होती है।*

*ओ मेरे प्यारे राम*

\*\*\*

### **JYOT OF RAAAM**

*O my loving Raaaauum  
You are the most precious of all  
You are oceanic flow of love  
You remain eternal O Ram  
I implement me in your love bhava  
You are my most beautiful and  
Sublime love  
Yet you are formless form  
Of eternal jyot  
Which emits only Prem Ras  
Hey my Raaaam.*

### **राम की ज्योत**

*ओ मेरे प्यारे राम*

*आप सबसे बहुमूल्य हो*

*आप प्रेम के महासागर हो*

*आप सदा शाश्वत हैं*

*मैं अपने आप को आपके प्रेम भाव*

*में लगाता हूँ*

*आप ही मेरे सबसे सुन्दर व दिव्य प्रेम हैं*

*पर फिर भी आप अनंत जोत निराकार स्वरूप हैं*

*जो केवल प्रेम रस ही स्कंदन करता है*

हे मेरे राम

\*\*\*

*Prarthana, Prerna, Prem, Prakash Prayaschitta all are part of Raaaaaaaaaaaaaaaaaam  
naaaaaaaaaaam aradhana.*

प्रार्थना, प्रेरणा, प्रेम, प्रकाश, प्रायश्चित्त राम नाम आराधना के अंग हैं।

\*\*\*

*Jaap, Jyana(Gyan), Jeevatman bodh, Jibodaya, comes with Raaaammmmm Naaaaaam.*

जाप, ज्ञान, जीवात्मन बोध, जीवोदय सब राम नाम से आते हैं।

\*\*\*

*Santushti, Santosh, Samagan, Suchita, Su-prarthana, are gains of Raaaaaaaaaaaauuuuuum  
Naaaaaaaaaam Aradhana.*

संतुष्टि, संतोष, समागन, शुचिता, सु-प्रार्थना राम नाम आराधना के फल हैं।

\*\*\*

*Sayyiam, Samarpan, Sannidhya, swadhyay all go for Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaum*

संयम, समर्पण, सानिद्धय, स्वाध्याय सभी राम तक जाते हैं।

\*\*\*

*Smriti, Shruti, Shravana, Simran all are Upto RAAAAAAAAUUUUUUUUUUUUUM.*

स्मृति, श्रुति, श्रवण, सिमरन राम तक जाते हैं।

\*\*\*

*O my Ram aap vishesh hain aur aap mey alaukik vishesh avasthit hai. Mujhey ye vishesh bann-  
ney ka ashirvad NA dey... hey prabhu. Mere maiey ko kabka apkey shree charno mey chod  
chuka hun. Hey Ram tere charan dhuli jarur bana rakhna ye ashish mangta hai ye bhikshu. TERE  
CHARNO KA DAS HUN MEY.*

हे मेरे राम आप विशेष हैं और आप में अलौकिक विशेष अवस्थित है। मुझे ये विशेष बनने का आशीर्वाद न दें  
..... हे प्रभु। मैं अपनी मैं को कबका आपके श्री चरणों में छोड़ चूका हूँ। हे राम अपनी चरण धूलि ज़रूर बना के  
रखना , ये बिखशु केवल ये आशीष मांगता है। तेरे चरणों का दास हूँ मैं।

\*\*\*

*Shree Raauum is Eternal Jyot, which means Eternal light of Universal knowledge which is  
brilliance of cosmic light that weaves the cosmos.*

श्री राम अनंत ज्योत है। उसका मतलब कि सार्वभौमिक ज्ञान की अनंत ज्योत जो कि ब्रह्माण्ड के प्रकाश  
की प्रतिभा है और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को उसमें पिरोती है।

\*\*\*

*He is as subtle as air. It's RAUM that breathes in Ram Naam Sadhak. So every time you breathe  
you actually breathe RAMAMAMAYE BHAVA*

राम हवा की तरह सूक्ष्म हैं। राम नाम के साधक में राम ही स्वाँस लेते हैं। सो हर समय जब आप स्वाँस लेते  
हैं तो आप असल में राममयभाव का ही स्वाँस ले रहे होते हैं।

\*\*\*

*Sukshma drishti is Ram Kripa. Every small thing you don't ignore is Kripa of Eshwar only.  
Sukshma Drishti gives Shukshma Bhava and that becomes suhukshmatama sewa too. सूक्ष्म दृष्टि  
राम कृपा है।*

हर छोटी से छोटी चीज़ जो आप अनदेखी नहीं करते वह ईश्वर की कृपा ही है। सूक्ष्म दृष्टि सूक्ष्म भाव प्रदान  
करती है और वह सूक्ष्मात्मा सेवा बन जाती है

\*\*\*

*Even for milli second if your heart cries for someone suffering then remember Ram is healing the person through your sukshma or subtle bhava. Experience Ram in such bhava*

अगर मिलीसैकेंड के लिए भी आपका हृदय किसी पीड़ित के लिए रोता है तो समझिए कि राम ही उस इंसान को आपके सूक्ष्म भाव के द्वारा नीरोग्यता प्रदान कर रहे हैं। ऐसे भाव में राम को अनुभव कीजिए

\*\*\*

*Ansu jab meetha lage mano Raamji padharey hain*

जब आँसू मीठा लगे तो मानो राम जी पधारे हैं।

\*\*\*

*Viakhunta bhava is that when you find love in everything and in all without discrimination.*

जब आप हर चीज़ में व हर में प्यार देखते हैं, बिना पक्षपात के, तब वह वैकुण्ठ भाव कहलाता है।

\*\*\*

*Jab MERA MAIY khatam ho jaye to MANO RAM JI AAP MEY AVASTHIT HAIN.*

जब मेरा मैं खत्म हो जाए तो मानो राम जी आप मे अवस्थित हैं।

\*\*\*

*Glory of Ram is when your behaviour sounds to other as sublime flower both at look and aroma. The bliss or Ram Kripa we all experience but tend to ignore because we are basically agyani*

जब आपका व्यवहार दूसरों को उदात्त फूल की भाँति देखने व महसूस होने लगेगा तो यह राम नाम की महिमा ही है। राम कृपा हम सब अनुभव करते हैं पर अपने अज्ञानी होने में उसे नज़र अंदाज कर देते हैं।

\*\*\*

*In RAM NAAM ARADHANA when you are doing jaap and nothing outside situation is influencing your contempation then remember RAAAM HIMSELF IS WITHIN YOU TO DO JAAP. SUCH IS GURU KRIPA.*

राम नाम आराधना में जब आप जाप करते हैं और कोई भी बाहरी घटना आपके मनन को प्रभावित नहीं कर रही होती तो समझिए कि राम स्वयं आपके भीतर जाप कर रहे हैं। ऐसी है गुरु कृपा।

\*\*\*

*Guru keeps your company always but we tend to forget that so we suffer with loneliness. The subtle existence of Guru and its realization is BHAKTI and Kripa only.*

गुरु आपको अपना सानिध्य हमेशा प्रदान करते हैं पर हम भूल जाते हैं इसलिए अकेलेपन से ग्रस्त हो जाते हैं । गुरु की सूक्ष्म उपस्थिति और उनकी अनुभूति ही भक्ति व कृपा ही है ।

\*\*\*

*Glow in your face can come with huge ajapa jaap. RAM IS BIGGEST COSMETIC GLOW both at spiritual and physical level*

अत्याधिक अजपा जाप से चेहरे पर तेज आ सकता है । राम अध्यात्मिक व भौतिक स्तर पर सर्वोच्च अंगराग आभा प्रदान करता है।

\*\*\*

*Bhav Aradhana is begetting Ram. Vishwas only can bring you closer to RAM right here in this mortal chaotic world*

भाव आराधना से राम को पाया जा सकता है । विश्वास इसी नश्वर जगत में आप को राम के समीप लेकर आ सकता है।

\*\*\*

*Sublimity of Raaaum is when you bless unknown suffering or less fortunate people or entity with Aakash Jaap or just with sublime look then remember RAM IS LOOKING AT THEM THROUGH YOU. THIS IS EXPERIENCING RAAAUM and helping other souls too*

राम नाम की दिव्यता तब प्रकाशित होती है जब आप किसी अज्ञात ,कम भाग्यवान को आशीर्वाद देते हैं , या अक्षु जाप करते हैं या केवल दिव्य दृष्टि डालते हैं , तब याद रखिये राम ही उन्हें आप के द्वारा देख रहे होते हैं। इससे कहते हैं राम को अनुभव करना और अन्य आत्माओं की मदद करना।

\*\*\*

*RAM ARADHAK PRAYS FOR WHOLE GLOBE AS ONE EMPOWERS SELF WITH RAM NAAM UPASANA DHYAN AND BHAKT I*



राम आराधक जब अपने को राम नाम उपासना ध्यान और भक्ति से सशक्त कर लेता है तो वह सारे विश्व के लिए प्रार्थना करता है ।

\*\*\*

### **EXPERINCING RAAAAAUM.**

*Shree Shree Swamiji Maharaj Shree  
Had eternal encounter  
With Nirakar Jyoti Swarup Shabdik RAAM.  
Such aishwarik sadguru is our  
Swamiji Majaraj Shree.  
Param Pavan, Param Pujya Premji  
Maharaj Shree, himself was Anaht Naad Shree Hain  
"jinhoney karodo ko tada  
Ram Naam Siddhi Sey."  
Millions get respite even today by Premji Maharaj Shree.  
Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree  
"Maa aur Ram key mantrik siddhi sey  
Ram Naam ki aashta ko karodo logo mey samaya apni sidhi sey sab ko taraa"  
But He kept His anonymity as doer  
Rescuer and salvager..  
Such are our Gurujans  
Nay Anubhut Guruvareshu.*

### **राम को अनुभव करना**

*श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री  
का दिव्य मेल निराकार ज्योति  
स्वरूप शाब्दिक राम से हुआ।  
ऐसे ऐश्वारिक गुरु हैं  
हमारे स्वामीजी महाराजश्री*

परम पावन, परम पूज्य प्रेमजी

महाराजश्री, जो स्वयं अनहत नाद श्री हैं

" जिन्होंने करोड़ों को तारा

राम नाम की सिद्धि से"

करोड़ों को आज भी पूज्य श्री प्रेमजी महाराजश्री से

राहत मिलती है।

महर्षि स्वामीजी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री" माँ और राम के मंत्रिक सिद्धि से

राम नाम की आस्था को करोड़ों लोगों में समाया ....

अपनी सिद्धि से सब को तारा "

पर अपने कर्तापन, उद्धारक को गुप्त रखा

ऐसे हैं हमारे गुरुजन

न अनुभूत गुरुवरेषु।

उनके श्री चरणों में प्रणाम

\*\*\*

Pranam at their feet as I call upon

Param Guru Raaaaam

And request Him

for his shskshatkar to all

Ram Naam Sadhak.

मैं परम गुरु श्री राम का आह्वान करता हूँ

और याचना करता हूँ

*की वे सभी राम नाम साधकों को साक्षात्कार दें।*

\*\*\*

*O my Raaaaaaaaaaaaaaaaaauummm  
I love your name with utmost Shraddha  
And with absolute Vishwas.  
O my Raaaam you are the  
Sun of the Cosmos  
You are the eternal energy  
Or Para Shakti hai Raaaum.*

*Physicists to philosopher  
Can argue and discuss  
But nowhere they reach  
Until you bless them to experience you  
O my lord Ram.  
You are beyond logic known to human  
Yet you are the subtlest force  
That is the cause of Universe.  
You are ultimate intelligence  
Not comprehensible by our minds.  
You are cause of all  
Creation manifestation and decay  
But you are not doer of karma.  
You preside in our buddhi  
But we act out of our thought and option  
Then the karmik field  
Of gain and loss  
Happiness and suffering  
Come.  
We reason out with you  
O my Raaaam  
Ram only can intervene and elevate  
But karma is ours.  
The subtle bliss  
Ram Naam Sadhak experience  
Are nothing but experiencing Ram  
Who tools in us as Nirakar Shakti  
Rescue us from mundane  
Yet He smiles at our anubhuti.  
He is the beej mantra*

*As Swamiji Maharaj Shree  
Proclaimed.*

*Yes He is formless  
Even beyond naad  
Light of eternal intelligence  
Come with a whisk  
And cure or even rescue  
A sadhak.*

*Ram Naam Sadhak do experience Him.  
Still disbelief distances  
Maya rules.*

*ओ मेरे राम*

*मुझे आपके नाम पर पूर्ण विश्वास व श्रद्धा*

*के साथ प्यार है*

*ओ मेरे राम आप ब्रह्माण्ड के सूर्य हैं*

*आप अनंत शक्ति हैं*

*या पराशक्ति हैं राम*

*भौतिक शास्त्री से ले कर दार्शनिक तक*

*सब तर्क विर्क करके*

*आपको अनुभव नहीं कर सकते*

*जब तक आप उन पर कृपा न करें*

*ओ मेरे प्रभु राम।*

*आप तर्क के पार हैं*

*पर आप शूक्ष्मतम शक्ति हैं*

*जो इस ब्रह्माण्ड की वजह है*

आप ही सर्वोच्च ज्ञानशक्ति हैं

जो हमारी सोच से भी पार है।

आप ही हर रचना, प्रकट व क्षय का कारण हैं

पर आप कर्मों के कर्ता नहीं हैं

आप हमारी बुद्धि को चलाते हैं

पर हम अपने विचारों व विकल्पों

से जुड़े हैं

कर्मों के उतराव चढ़ाव में

सुख दुःख आते ही रहते हैं।

हम आपसे कारण भी पूछते हैं

ओ मेरे राम

राम ही केवल हस्तक्षेप कर सकते हैं और

उत्थान कर सकते हैं

पर कर्म तो हमारे हैं।

जो सूक्ष्म आनंद राम नाम साधक

अनुभव करता है

वह और कुछ नहीं पर

राम को ही अनुभव कर रहे होते हैं,

जो निराकार शक्ति के रूप में

सांसारिक झमेलों से हमें बचाते हैं  
पर हमारी अनुभूति पर वे मुस्कराते हैं।  
वे बीज मंत्र हैं  
जैसे स्वामीजी महाराजश्री ने उद्घोषणा की।  
जी वे निराकार हैं  
नाद के भी पार  
दिव्य ज्ञानशक्ति का प्रकाश  
और चुटकी में साधक को ठीक  
कर देते हैं या बचा लेते हैं।  
राम नाम साधक उसको अनुभव जरूर करते हैं।  
अविश्वास दूरी बना देता है  
और माया प्रभावशाली हो जाती है।

\*\*\*

*My Raaaaum though has a name  
Yet He is nameless yet  
All the divine entity is HE.  
Akshay Prem is the name  
I rename my loving Raaaauuuum.  
He is the bond  
He is the cause of manifestation  
He is the celestial Wisdom  
He is Mangalik thought for us  
His instrument of above karama  
Is love and love only.  
His love unites  
His love heals  
His love lifts all after failure*

*His love connects with universal mind  
Which is AKARAN PYAR  
Whose major attribute is  
Selfless love and this is the Bhakti  
This love is Para Shakti  
This love is beyond  
All knowable, perceivable and  
Touches the chord of atman  
Till it reaches and merges with Paramatman... and  
the process is eternal love.  
Its not sense driven passion of love  
Rather it is atmanbodh  
A deep, very deep call from within  
Where atman whispers  
I am Ram  
You are Ram  
Cosmos is Ram  
Loving bond in the subtlest form  
Is naad and anhat  
Sound and sound in silence  
Until the eternal jyot appears  
The brilliance of universal intelligence  
That runs on the fabric of love.  
Such is divine is my Raaaaaum.  
Hey Raaam  
Keep all of us at your lotus feet  
O my Raaaaauuum  
So eternally joyfully we merge with you again  
O my loving Nirakar Raaaaauuum.  
Aatmik Pranam MahaGuru  
PARAM GURU  
Sabko mauf kardo hey paramdayalu  
Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaum.*

*मेरे राम का नाम है*

*पर वे बेनाम हैं*

*पर फिर भी सम्पूर्ण दिव्यता उन्हीं की है।*

में अपने प्यारे राम का  
पुनः नामकरण करता हूँ  
अक्षय प्रेम हैं वे  
वे बंधन हैं  
वे प्रकट होने का कारण हैं  
वे दिव्य ज्ञान हैं  
वे ही हमारे मांगलिक विचार हैं  
वे कर्म के पार हैं  
वे प्रेम और केवल प्रेम हैं।  
उनका प्रेम जोड़ता है  
उनका प्रेम आरोग्य करता है  
उनका प्रेम हर विफलता का उत्थान करता है  
उनका प्रेम सार्वभौमिक मन के साथ जोड़ता है  
जो अकारण प्यार है  
जिनका मुख्य गुण निस्स्वार्थ प्रेम है  
और यही भक्ति है  
यह प्रेम पराशक्ति है  
यह प्रेम जानने, पहचानने से पार है  
और आत्मा को छूता है



जब तक वे परमात्मा तक नहीं पहुँचता और उस में विलीन नहीं

हो जाता और यह सारा क्रम

केवल दिव्य प्रेम से ही है।

यह इन्द्रियों द्वारा संचालित कामुक प्रेम नहीं है

अपितु यह तो आत्म बोध है

बहुत बहुत गहरी पुकार भीतर से

जहाँ आत्मा हलके से धीरे से बोलता है की

में राम हूँ

तुम राम हो

सारा ब्रह्माण्ड राम है

प्रेम का सूक्ष्म बंधन नाद और अनहत है

ध्वनि और मौन में ध्वनि

जब तक दिव्य ज्योति प्रकट होती है

सार्वभौमिक ज्ञानशक्ति का प्रकाश

जो प्रेम पर चलता है।

ऐसे दिव्य हैं मेरे राम।

हे राम

कृपया हम सब को अपने

चरण कमलों में रखना

ओ मेरे राम

ताकि अनंत हर्ष के साथ हम फिर से

तुममें विलीन हो सकें

ओ मेरे प्यारे निराकार राम

आत्मिक प्रणाम महागुरु

परम गुरु

सबको क्षमा कर दीजिये हे परमदयालु

राम

\*\*\*

*Duniya ke har rista tika hua hai Astha, Vishwas, Bharosa, shraddha, samman, santosh, sakaratmak soch, samarpan, prem, sannidhya, samanvai adi.*

दुनिया का हर रिश्ता टिका हुआ है आस्था , विश्वास , भरोसा , श्रद्धा ,सम्मान,संतोष,सकारात्मक सोच  
,समर्पण ,प्रेम ,सान्निध्य,सम्मानमय आदि

\*\*\*

*Jeevan bhar hum es taraha sey kaat detey hain fir bhi koi hamara puri taraha sey nahi ho pata!  
Kyon ki yeh hi to lila hai.*

जीवन भर हम इस तरह से काट देते हैं फिर भी कोई हमारा पूरी तरह से नहीं हो पाता क्योंकि यही तो लीला  
है।

\*\*\*

*If we dedicate 10% of our Faith, Dependence, Confidence, Respect, contentment, positivism, submission, love and coordination for RAM. Then Ram would Receptivate with 100%. SUCH IS VISHWAS OF RAAAAAAAAAAAAUUUUUM.*

अगर हम केवल १०% अपने विश्वास , सहारा ,आत्मविश्वास ,आदर ,संतुष्टि ,सकारात्मकता ,समर्पण, परम प्रेम और समन्वय यदि राम के लिए समर्पित कर दें तब राम १००% विनिमय ( Reciprocate) करते हैं. ऐसा राम के प्रति विश्वास चाहिए।

\*\*\*

*Maharishi told that every sadhak should pray to Ram and seek Vishwas the first element of Sadhana. And he urged "Vishwas ko maan key sadhako ko ek mala roj ferni chahiye".*

महर्षि ने कहा की हर साधक को राम से प्रार्थना करनी चाहिए और उनसे विश्वास , जो साधना का पहला तत्व है , के लिए विनती करनी चाहिए।

\*\*\*

*Yes vishwas aur shraddha key bheet key upar ram naam upasana ki bhav mandir banti hai jo bhavya aur dirghaa ki hoti hai. RAAM TU HI EKMATRA SATYA HAI. Hey Prabhu Raaaaaaaaaaaaaaaauum*

विश्वास और श्रद्धा के नींव के ऊपर राम नाम उपासना का भाव मंदिर बनता है जो भव्य और दीर्घाऊ होता है। राम तू ही एक मात्र सत्य है। हे प्रभु राम

\*\*\*

*Shree Ram the Supreme Jagannath of this world. He is the SWAMI. Our life is His Lila and we dwell in mindless I, me and mine as everything is THINE. Our Ego is only illusion. Doing all acts or karma on his behalf can give you solace, shanti and feeling of Sachitananda. THIS IS COMPLETE SURRENDER TO RAAAUUM AND EARNING COMPLETE FAITH IN ONESELF*

श्री राम इस विश्व के पूर्ण पुरुष जगन्नाथ हैं। वे स्वामी हैं। हमारी ज़िन्दगी उनकी लीला है और हम मूर्खों की तरह मैं , मेरा , में उलझे रहते हैं जबकि सबकुछ उनका है। हमारा अहंकार ही केवल माया है। सभी कृत्य प्रभु के होकर करें तो वह शांति और सद्चितानाद का भाव प्रदान करता है । राम पर यह सम्पूर्ण समर्पण हमें अपने पर पूर्ण विश्वास दिला देता है।

\*\*\*

*Life is not mine it is HIS. So Ram agya should be Sarvagya. Do act like Ram be an angel in others' life. Ram kripa is your deeds too that refelcts in your karmic report card. Raaaaaaaaaauuuuum*

यह ज़िन्दगी मेरी नहीं है, उसकी है। राम आज्ञा सर्वज्ञ होनी चाहिए। राम की तरह कार्य कीजिये , दूसरों की ज़िन्दगी में एक फरिश्ता बनिये।राम कृपा आपके कृत्य भी हैं ...जो आपके कर्मों के खाते में झलकते हैं।

\*\*\*

*"Ram Bhakt na rahey akela"... yes when you feel lonely, alone and even unattended. Have 100% vishwas in this divine thought. "*

“ राम भक्त नहीं रहे अकेला " जब आप अपने को अकेला महसूस करते हैं या कोई आप पर ध्यान नहीं दे रहा होता, उक्त दिव्या विचार पर पूर्ण १०० % विश्वास रखिये।

\*\*\*

## **EVERYTHING IS HIS.... THIS BE PRIMARAY TRUST OR VISHWAS OF NAAM SADHANA**

*TODAY Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Mharajji Shree declared that in Naam Sadhana....  
Vishwas ek unchi cheej hai.*

*Swamiji Maharaj Shree while creating and writing Grantha never kept his name in the fore as  
Swamiji Shree believed its All the Creations of Supreme and not by mortals. Such is the Vishwas  
which makes us rooted to eternity.*

*Explaining the context of root as vishwas Maharishi said a small plant grows with beautiful  
flower and leaves then suddenly one boy comes and uproot the plant so the plant dies.  
Majorashi said vishwas is root of our existence and being rooted means having unquestioned  
faith...or Vishwas.*

*Maharishi said having absolute faith in scriptures and words of Saints are primary prerequisites  
of sadhana.*

*He explained the context of Vishwas. Maharishiji explained the unique element of the world it appears or get birth, then it grows, with growth it changes as manifestive nature till it dies. We are same entity of the world we get birth then grow and manifests till we become old and become ill to facilitate death. This is universal for the world. And over and above there is one Swami or Lord Supreme who runs this system and contols everything including us. This is the primordial vishwas we must have that NOTHING IS MINE AND EVERYTHING IS HIS.Raaaam*

*Thus Maharishi explained that we say our family our children our relations our property or even wealth but in reality nothing is ours its HIS and HIS Only. Param Guru has given us all these and He can only take away all these which we claim as MINE or OURS. This is the misnomer. Even WE are HIS and we do not have any right over self ....proclaimed Majorishi. THIS IS THE CORE OF VISHWAS TOWARDS ABSOLUTE TRUTH OF RAM or any single name where one has full Vishwas.*

*Maharishi told us a story. There lived a Brahmin who used to live on bhiksha. One time came the village boycotted him as he was of no good and he has taken loan from all and returned to none. Here Maharishi gave a subtle message about our deed of taking help and conveniently forgetting to pay back.*

*Well for greener pasture Brahmin set out to a new village in the early dawn. And saw a old man and his son were ploughing. Suddenly boy had fallen and died. The old man took the body of his son and kept him aside in his eternal sleep. Then old man after collecting himself started ploughing. The Brahmin got curious and reached the father farmer .Before Brahmin could say the elderly man said " you are going to the village on the way you would meet my daughter in law so do tell her my son has died and she should bring today one lunch for him only".having said the farmer started ploughing again.*

*Brahmin with awe left the place snd met the daughter in law and brahmin truthfully conveyed the words of farmer. The lady nodded and took only one lunch for her father-in-law. She was calm.*

*Brahmin got shock as she has not cried for her husband's death. Brahmin went to the Seth house and asked for bhiksha saying that none are giving him dakshina nowadays so he should give him... brahmin pleaded. Seth gave one thousand mudra in a cotton bag. Brahmin was visibly happy. He then narrated the story what brahmin saw in the field. Seth then angrily snatched the bag and said " you dont have Vishwas that everything is of Paramatman nothing is ours" Actually Seth meant the elder farmer knew his son is of Parmatman so his daughter in law also believed or had Vishwas that whatever we have is HIS and HIS only so He can take away anything which He gives (like the Seth who took away from Brahmin the bag full of money) what He gave as Swami, paramatman and Ram would give and take as all these are His. So never question Parmatman. The Vishwas is eternity is the corest of core and then only we can experience eternal solace when we even have no right over the self. EVERYTHING IS THINE O MY RAAAAAUM.*

## सर्वस्व उसका है ..... यह हमारी नाम साधना का मुख्य विश्वास होना चाहिए

आज महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजजी श्री ने घोषणा की कि नाम साधना में ..... विश्वास एक ऊंची चीज़ है। स्वामीजी महाराजश्री ने जब रचनायें कीं, तब वे कभी अपना नाम सामने नहीं लाये क्योंकि स्वामीजी महाराजश्री ने यह सदा माना कि सभी रचनायें उस पारब्रह्म परमात्मा की ही हैं नश्वर जीवों की नहीं। ऐसा विश्वास हमें दिव्यता से जोड़ देता है।

विश्वास के सन्दर्भ में कहा कि एक छोटा पौधा उगता है, उस पर बहुत सुन्दर फूल व पत्ते आते हैं और अचानक एक दिन एक लड़का आता है और पौधे को जड़ से उखाड़ देता है और पौधा मर जाता है। महाराजश्री ने कहा कि विश्वास हमारे अस्तित्व की जड़ है और जड़ होने का तात्पर्य है निर्विवाद विश्वास होना।

महर्षि ने कहा कि शास्त्रों में व संतों के कथनों पर पूर्ण विश्वास होना साधना के प्रमुख आधार हैं।

उन्होंने विश्वास के सन्दर्भ में समझाया कि संसार का यह अनोखा अंग है कि जन्म होता हुआ दिखता है, बढ़ता हुआ दिखता है, बढ़ने के साथ परिवर्तन आता है और फिर मर जाता है। हम भी इस संसार के तत्व हैं, हम भी जन्म लेते हैं, बढ़ते हैं और प्रत्यक्ष रूपांतरित होते हैं, जब तक मृत्यु को सुविधा प्रदान करने के लिए वृद्ध व बीमार न हो जाएँ। यह सारे संसार के लये सार्वभौमिक है। और इन सब के ऊपर एक ही स्वामी परम पुरुष परमात्मा हैं जो इस सारे सिस्टम को चलाते हैं और नियंत्रित करते हैं। यह मौलिक विश्वास हमारे अंदर होना चाहिए कि मेरा कुछ नहीं है और सब कुछ उसका है। महर्षि ने समझाया कि हम कहते हैं की हमारा परिवार, हमारे बच्चे, हमारे संबंधी, हमारी जायदाद और पैसा पर असलियत में हमारा कुछ नहीं राम का ही है केवल उसी का। परम गुरु ने हमें ये सब दिए हैं और वे ही केवल ये सब ले सकते हैं जिन्हें हम अपना कहते हैं। यह एक मिथ्या है। हम भी उसी के हैं और हमारा अपने ऊपर तक अधिकार नहीं है ...ऐसा महाराजश्री ने कहा। राम के पूर्ण सत्य की ओर यह विश्वास का मूल है।

महर्षि ने एक कहानी सुनाई। एक ब्राह्मण भिक्षा पर अपना निर्वाह करता था। एक समय आया कि गाँव वालों ने उसका तिरस्कार कर दिया यह कह कर कि वह किसी काम का नहीं है और उसने सभी से उधार ले रखा है और किसी को भी नहीं लौटाया। इधर महर्षि ने सूक्ष्म सन्देश दिया हमारे कृत्यों की ओर कि हम मदद ले लेते हैं और आराम से उसको लौटना भूल जाते हैं।

तो भोर होते ही अपनी आमदनी के लिए ब्राह्मण एक नए गाँव में गया। और उसने देखा की एक वृद्ध और उसका पुत्र खेत जोत रहे थे। अचानक लड़का गिरा और मर गया। वृद्ध ने अपने पुत्र का शरीर लिया और बाजू में रख दिया। वृद्ध उठा और खेत जोतने लग गया। ब्राह्मण को उत्सुकता हुई और पिता के पास गया। इससे पहले वह कुछ कह पाता बुजुर्ग किसान बोला कि आप गाँव की ओर जा रहे हैं तो मेरी बहु से कहियेगा कि मेरे पुत्र की मृत्यु हो गयी है तो आज केवल मेरे लिए ही भोजन लाये। ये कह कर वह फिर से खेत जोतने लग गया।

ब्राह्मण अति विस्मय भाव से वहाँ से आगे बढ़ा और किसान की बहु से मिला और पूर्ण सत्यता से किसान का सन्देश दिया। बहु ने सिर हिलाकर सहमति दी और एक ही भोजन ले गयी अपने ससुर के लिए। वह शांत थी।

ब्राह्मण को धक्का लगा कि वह अपने पति की मृत्यु पर रोयी तक नहीं। ब्राह्मण सेठ के घर गया और भिक्षा की मांगी की कि उसे आज कल कोई दक्षिणा नहीं दे रहा इसलिए उससे देनी चाहिए ..... ब्राह्मण ने कृपा याचना की। सेठ ने एक हजार मुद्राएं एक मलमल की थैली में रख कर दे दी। ब्राह्मण बहुत खुश था। फिर उसने खेत की कहानी सुनाई जो भी उसने देखा वहाँ। तब क्रोधित हो कर सेठ ने वह थैली वापिस ले ली और बोला कि तुम्हें विश्वास नहीं है की सब कुछ परमात्मा का है और हमारा कुछ नहीं है। असल में सेठ का तात्पर्य था कि वृद्ध किसान को ज्ञात था कि उसका पुत्र परमात्मा का है , और उसकी बहु को भी वैसा ही विश्वास था की जो भी हमारा है वह उसी का है और केवल उसी का इसलिए वह उसे ले सकता है जो भी वह देता है ( सेठ की भाँती जिसने पैसों की थैली उससे ले ली ) परमात्मा पर कभी भी प्रश्नचिन्ह न लगाएं। विश्वास अनंत काल है और मूल का भी मूल है और तभी हम अनंत शान्ति अनुभव कर सकेंगे जब हमारा अपनी आत्मा तक पर कोई हक नहीं रहेगा।

सर्वस्व आपका है ओ मेरे राम

\*\*\*

*Shrishti is Raaam  
Drishti is Raaaaaam*

सृष्टि राम है

दृष्टि राम है

\*\*\*

## **RAM NAAM AARTI**

*Hey Raaum  
I know not any mantra  
But  
Raaaaaaaaaaaaaaaaaum  
This is how I do ahovan  
Merey Raauuum  
As taught by Maharishi.  
You O Naad Shree  
You come down on earth  
As Divine Avataram with  
RAAAAAAAM Rath  
You spread Raam Bhava in all  
RAAAM becomes bond yet  
Salvation too.  
Shraddha is My Dhup  
Bhakti is my Deep or Diya  
O my Raaaauum.  
My tears are my Naibidya  
O my Raaum.  
Raam Naam is my pavan gaan  
Raam--- you are my Eshta  
You are my Raaaam Supreme  
You are my aradhya  
My aradhana and sadhana  
You are my Siddhi  
O my loving Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum.*

## **राम नाम आरती**

*हे राम*

*मैं कोई मंत्र नहीं जानता*



केवल

राम

में ऐसे आहवाहन करता हूँ

मेरे राम

ऐसा मुझे महर्षि ने सिखाया है।

आप ओ नाद श्री

इस धरती पर

दिव्य अवतरण

राम रथ

के रूप में आते हैं

राम भाव सब में फैलाते हैं

राम एक बंधन बनता है और मुक्ति भी।

ओ मेरे राम

श्रद्धा ही मेरी धूप है

भक्ति मेरा दीपक।

मेरे अश्रु मेरा नैवेद्य हैं

ओ मेरे राम।

राम नाम मेरा पावन गान

राम----- तुम मेरे ईश्ट हो

तुम मेरे राम सम्पूर्ण

तुम मेरे आराध्या

मेरी आराधना और साधना

तुम मेरी सिद्धि हो

ओ मेरे प्यारे राम

\*\*\*

*Shree Raam feeds and sustains all atman beyond body and in body He is Dev Bhava within for Ram Naam Sadhana.*

श्री राम हर आत्मा को सँभालते हैं व पोषण करते हैं, शरीर के पार व शरीर के अंदर। वे अंतर में राम नाम साधना के लिए देव भाव हैं

\*\*\*

*In toughest time the supreme faith in Ram works wonder. RAM LOVES you as He loves His name. Such is loving Raaaam.*

विषम समय में राम पर सम्पूर्ण भरोसा आश्चर्य जनक कार्य करता है। राम आपसे उसी तरह प्रेम करते हैं जैसे वे अपने नाम को करते हैं। ऐसे प्यारे हैं राम ।

\*\*\*

## **RAM SHAKTI**

Hey Raaum  
Life is full of surprises  
Problem poses  
Conflict looms  
Opposition arises.  
Ailment attacks  
But Ram Naam sadhak  
Moves on

*Undettered  
As eternal shakti  
Empowers  
Ram Dhun Rings on  
Maya of problems  
Fades out  
Absolute Truth Raam Naam  
Smears its sadhak  
Paramdayalu Ram presides  
Ram Naam Sadhak moves on  
With Ram Naam Dharan and Dharana  
Saguna Raam is absolute faith  
O my Raaaaaaaaaaaauuuuuum*

## **राम शक्ति**

*हे राम*

*ज़िन्दगी आश्चर्यजनक*

*क्रियाओं से भरपूर है*

*मुश्किलें आती हैं*

*संघर्ष उमड़ता है*

*विरोध बढ़ता है*

*रोग आक्रमण करते हैं*

*पर राम नाम साधक*

*बिना रुके*

*चलता जाता है*

*क्योंकि दिव्य शक्ति*

उसे शसक्त करती है  
राम धुन गूँजती है  
और मुसीबतों की माया  
धुंधली पड़ जाती है।  
सम्पूर्ण सत्य राम नाम  
अपने साधक को लपेट लेते हैं  
परमदयालु राम की कृपा बरसती है  
राम नाम साधक आगे बड़ता जाता है  
राम नाम को धारण किये और सगुण राम  
ही पूर्ण विश्वास हैं यह धारणा लिए।  
ओ मेरे राम

\*\*\*

### **Shield of Raam**

*On the path of  
Ram Naam sadhana  
Much challenges visit  
Pain and conflicts looms large  
Yet Ram Naam sadhak  
Crosses over criticism  
"Ninda apaman and apavad".  
Raam Naam  
Resides in your temple of self  
None could harm you for good.  
Raam Naam is eternal shield  
You need not to react*

*Shun your aggression  
Be in your daiva bhava  
Rest Raam protects your  
Shuddha Aatman.  
Such is my Raaaaauuum.*

### **राम का कवच**

राम नाम के पथ पर  
बहुत चुनौतियों का सामना  
करना पड़ता है  
दर्द व संघर्ष ने घेरा होता है  
पर राम नाम साधक  
आलोचना, निंदा, अपमान  
व अपवाद को लांघ जाता है।  
राम नाम  
आपकी आत्मा के मंदिर  
में विराजमान हैं  
कोई कुछ भी आपका बिगाड़ नहीं सकता।  
राम एक दिव्य कवच हैं  
बस आप प्रतिक्रिया न करें  
अपने आक्रोश को त्यागें

और अपने दैव भाव में रहे

बाकी राम आपकी शुद्ध

आत्मा की रक्षा करेंगे।

ऐसे हैं मेरे राम

\*\*\*

### **O My LOVING RAAAAUM**

O my Raaaam  
I have absolute faith in you  
You are my karma  
You are my resting space  
You are my jyoti  
You are my vac  
You remain my maun  
Just Ram he Ram.  
RAAM RAAM RAAM RAAM.

### **ओ मेरे प्यारे राम**

ओ मेरे राम

मुझे तुम पर पूर्ण विश्वास है

तुम्हीं मेरे कर्म हो

तुम्हीं मेरा आश्रय

तुम्हीं मेरी ज्योति

तुम्हीं मेरे वचन

तुम मेरे मौन हो

केवल राम ही राम

राम राम राम राम

\*\*\*

*Sudden thought dawned. I am sharing...*

*We Ram Naam Sadhak do keep one photo of all the Guru. Do you know Guru has millions of wall hangings in His heart those are photo of Shishya or sadhak. For Guru no sadhak is unimportant so He remembers you personally. Only thing all the photo He has are touch screen one and He watches us live whenever He wishes to keep a watch on all. This is Gurutattwa and guru prem for His Shishya. Koti koti PRANAM GURUVARESHU. ATMIK Pranam PARAM GURU RAAAAM.*

अचानक एक विचार आया। मैं बाँट रहा हूँ ..... हम राम नाम साधक गुरुजनों के चित्र अवश्य रखते हैं। क्या आप जानते हैं कि गुरु के हृदय में करोड़ों वॉल हैंगिंग होते हैं जो कि उनके शिष्यों या साधक की फोटो होती है। गुरु के लिए कोई भी साधक मामूली नहीं, वे हर शिष्य को निजी रूप से स्मरण करते हैं। खास बात यह है कि उनके पास फोटो टच स्क्रीन वाले हैं और वे हमें कभी भी देख सकते हैं जब उनकी इच्छा हो। यह गुरु तत्व है और अपने शिष्य के लिए गुरु का प्रेम। कोटि कोटि प्रणाम गिरुवारेशु। आत्मिक प्रणाम परम गुरु राम

\*\*\*

*Shree Raam key Padma Charn ko ahovan kijeye. Alaukik gati deti hain aapkey Shree charan O merey Raam.*

श्री राम के पद्म चरण का आह्वान कीजिए। आलौकिक गति देते हैं आपके श्री चरण ओ मेरे राम।

\*\*\*

*I looked for a flower! I got one with beautiful look and aroma... so refresing! But still I look for flower of eternal kind which may no have fragrance may not be as delicate as rose and will not decay...yes eternal it must be an eternal one.*

*I found the flower. From birds eye view its like Manas sarovar. It is replete in Indian classical architecture. Its a symbol of temple archicture. Its a heritage of 5000 years. It is referred with kundalini path and chakra of elevation and emancipation. Shree Shree Swamiji Maharaj Shree made it the feet of Shree Shree Adhistan ji Shree who is nirakar jyoti with Shabdik presence. It is Shree Charan of Param Guru Raaaaum ...lotus the eternal Padma the glorious symbol of Ram Naam Aradhana.*

*PRANAM AT THOU LOTUS FEET HEY RAAAAAAAAAAAAAAAAUUUUUUUUUUUUUUUM.*

मैं एक फूल ढूँढ रहा था! मुझे एक मिला जो बहुत सुन्दर था और सुगन्धित भी ..... इतनी ताज़गी थी उसमें ! पर अभी भी मैं उस शाश्वत फूल की खोज में हूँ जिसकी खुशबू तो न हो बेशक, एक गुलाब की तरह नाजुक भी न हो और क्षेय भी न करे ..... जी वह दिव्य ही होना चाहिए।

मुझे मिला वह फूल। दूर से वह मानसरोवर प्रतीत होता है। वह भारतीय शास्त्रीय वास्तुकला से परिपूर्ण लगता है। वह एक मंदिर की वास्तुकला का स्तम्भ लगता है। उसकी विरासत ५००० वर्ष की है। वह कुण्डलिनी पथ और चक्र उत्थान और मुक्ति से उल्लेखित है। श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री ने उन्हें श्री अधिष्ठानजी, जो की निराकार ज्योति स्वरूप शाब्दिक उपस्थिति के संग हैं , उनके श्री चरण बनाये। वे श्री राम के चरण कमल हैं। आपके चरण कमल में प्रणाम हे राम.

\*\*\*

*O my Jeevatman  
Remember what  
Shree Swamiji Maharaj shree  
Taught us...  
Ram is param shanti dham.  
It is with Raam  
Jeevatman embalmed  
With chaitanya Chitta of Ram.  
Ram Naam purifies the self  
Raamamaye is final solace  
This much our soul must know.  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum.*

*Even Raam Naad can be Seen*



*Ram Rang is divine frequency  
Being with Raam is seeing  
Many hues in aakash.  
Ram krupa is such  
We see the dancing Naad  
In eternal sublimity  
Yet being in the Ram Aradhit body.  
This is the signature of Guru's presence  
Guru avataran and Guru Kripa.  
Raaaaaaaaaaaaauuum*

*मेरे जीवात्मा  
स्मरण करो  
श्री स्वामी जी महाराज श्री  
ने हमें क्या सिखाया  
राम ही परम शांति के धाम हैं।  
जीवात्मा राम के चैतन्य चित  
के संग से ही लिपटे हुए हैं  
राम नाम आत्मा का पवित्रीकरण करता है  
राममय भाव ही अंतिम संतुष्टि है  
इतना हमारी आत्मा को ज्ञान होना चाहिए।  
राम*

*राम नाद को भी देख सकते हैं  
राम रंग एक दिव्य आवृत्ति पर है  
राम के संग  
कितने ही आकाश के रंग  
दिखते हैं।  
राम कृपा ऐसी है*

*कि राम, आराधित के शरीर*

में होते हुए भी हम

अनंत दिव्यता में

नाद को

नृत्य करते हुए देख सकते हैं ।

यह गुरु के हस्ताक्षर हैं

गुरु अवतरण व गुरु कृपा ।

राम

\*\*\*

### **PARAM PREM... RAAM**

Hey My loving Raaaam  
You are epitome of Divya Prem.  
Raam the word is divine love  
As He percolates in us  
Through simran and jaap  
We beget sublime love  
Such loving you are my Raaaaaauum.  
Raaaam naam hai prem dham  
Sarvatra shanti hi hai eshwar gaan.

**परम प्रेम .. राम**

ओ मेरे प्यारे राम

आप सर्वोच्चतम दिव्य प्रेम हैं

राम शब्द ही दिव्य प्रेम है

वे हमारे अंतःकरण में

सिंमरनव जाप के माध्यम से

में प्रवेश करते हैं

जिससे हमें दिव्य प्रेम की प्राप्ति होती है

ऐसे प्यारे हो आप मेरे राम ।

राम नाम है प्रेम धाम

सर्वत्र शांति ही है ईश्वर गान ।

\*\*\*

*When chill is in the air, biting cold somewhere and heat of sharir tattwa dominates. Then do convert that in warmth of prakriti. Raam Naam is eshwar shakti which emits heat in cold and warmth in chill and solace in body. RAAM BHAVA CAN DO ALL. THESE MIRACLES ARE PHYSICAL WORLD. Japo Ram Japo Ram Raaaam Raaaam Raummmmmmm.*

जब हवा में ठंडक हो और कड़ाके की सर्दी पड़ रही हो और शरीर तत्व का ज्वर ही प्रधान होता है । तब उसे प्रकृति की गर्मी में रूपान्तरित कर दीजिए । राम नाम ईश्वर शक्ति है जो सर्दी में ऊर्जा प्रदान करती है और ठण्डक में गर्मी तथा शरीर को संतुष्टि । राम भाव यह सब चमकत्कार इस भौतिक जगत में कर सकता है । जपो राम जपो राम राम राम राम राम

\*\*\*

*A TV newsreader reads through tele prompter (which audience can't see) and world acknowledges their spontaneity.*

*Similarly to get spontaneity in Ram Naam sadhana one must do intensive dhyān fixing their mind in agya chakra with closed eye. Agya Chakra contemplation gives one the divine spontaneity to negotiate life and beyond. It's like mortal teleprompter in a news channel. So many Ram naam sadhak create awe amongst varous sects as naad sadhana in agya chakra allows great momentum. Dhyān with Raaaaaaaam in mind empowers.*

*Sayyiam swayam ko Shree Raam ke shree charan yogya banata hai. Ram Naam Simran sayyiam ko surya endhan praddan karti hai aur swayam ko pavan karma aur soch sey prerit karti hai.*

एक टी वी पर खबरें पढ़ने वाली टैलिप्राम्प्टर के द्वारा खबरें पढ़ती है जो कि दर्शकों को नहीं दिखता और दुनिया उनकी स्फूर्ति की सराहना करती है ।

इसी तरह राम नाम साधना में स्फूर्ति लाने के लिए हमें गहन ध्यान अपनी आँख बंद करके आज्ञा चक्र पर मन केंद्रित करके करने की आवश्यकता है । आज्ञा चक्र पर मनन करना एक दिव्य स्फूर्ति प्रदान करता है जो कि भौतिक एवं लौकिक जीवन को जूझने में सहायक होता है । यह एक नश्वर टेलिप्रोम्टर की तरह ही है जो news channel में उपयोग में लाया जाता है । कितने ही राम नाम के साधक दूसरे पंथों में एक तरह की धाक जमा लेते हैं क्योंकि आज्ञा चक्र में की गई नाद साधना बहुत गति प्रदान करती है । राम का ध्यान मन को सशक्त कर देता है

\*\*\*

*Sayyiam swayam ko Shree Raam ke shree charan yogya banati hai. Ram Naam Simran sayyiam ko surya endhan praddan karti hai aur swayam ko pavan karma aur soch sey prerit karti hai.*

संयम स्वयं को श्री राम के श्री चरण के योग्य बना देता है । राम नाम सिमरन संयम को सूर्य ईंधन प्रदान करता है और स्वयं को पावन कर्म और सोच से प्रेरित करता है ।

\*\*\*

*Su-sangati, su-vani, su-sangit, su-vichar ebam Su-Shravan RAM NAAM TAPASYA KA ADHAR HAI. Naad Shree ke pavan tarang, naam sadhana ko siddhi bana deti hai.*

सु- संगति, सु- वाणी, सु- संगीत, सु- विचार एवं सु- श्रवण राम नाम तपस्या का आधार हैं । नाद श्री के पावन तरंग, नाम साधना को सिद्धी बना देती है ।

\*\*\*

*Akaran pyar of Raaam is bliss out of Upasana the soul is doing for several births.*

*Pure Upasana Heals. This is divine work of Shree Ram. Eternal Healer is Raam only. DO NAAM JAAP INTENSIVELY AND GET HEALED AND PURIFIED.*

राम का अकारण प्यार आत्मा की उपासना का फल है जो वह कितने ही जन्मों से कर रहा है ।

पवित्र आत्मा आरोग्यता प्रदान करती है । यह श्री राम का दिव्य कार्य है । दिव्य वैद्य तो राम ही हैं । गहन रूप से नाम जाप करिए और आरोग्य व पवित्र हो जाइए ।

\*\*\*

*Manas filled with Ram Bhava seeks none but Raaaaaauuuuuuum. Manas then brings harmony of thought in our mind that controls the "pagal ghoda jaisa ye Maan."(Wondering mad horse called maan/heart)*

राम नाम भाव से परिपूर्ण मानस केवल राम चाहता है । मानस फिर हमारे मन के विचारों को शांति प्रदान करता है ( पागल घोड़े जैसा यह मन )

\*\*\*

*The Self is an ENIGMA.  
My " I " Which was humbled  
Can see the SELF  
quite distinctly and  
that is Mystique "I"  
Which has distanced from SELF  
Yet 'I' can smile at myself.. No self...  
Nay! He is having the final smile  
Well He smiles..the smile of Buddha  
....Raaaaaauuuuuuum.  
The self is amused!*

*आत्मा एक पहेली है ।*

*मेरी "मैं" जिसे विनम्र बना दिया गया*

*अब आत्मा को बहुत स्पष्ट रूप से देख सकती है*

*और वह रहस्यमयी "मैं" है जिसने*

*आत्मा से अपने को पृथक कर लिया है*

*फिर भी "मैं" अपने आप पर पर मुस्करा सकता हूँ.. नहीं आत्मा ...*

*न! वे ही आखिरी मुस्कान ले रहे हैं*

*वे मुस्कराते हैं... बुद्ध की मुस्कराहट*

"राम"

आत्मा प्रसन्न है ।

\*\*\*

*I will light up millions of Manas Diya this Deepawali as my mind does Ram Ram Simran. Every simran of Ram Naam will light up one MANAS DIYA. And every diya will be offered to sucharan of Guruvareshu. At your feet Param Guru. Raaaaaaaauuum.*

*Raam Kripa beams through every candle and diya we light up. If we light up others heart who are at low will be great kipa of Raaam. Jyot sey jyot jalalo sab ko sumangal kari naad mey perodo..sabko anandmaye banado Hey my loving Raaaam.*

जैसे मेरा मन राम नाम सिमरन करेगा वैसे ही मैं आज करोड़ों मानस दीपक इस दीपावली जलाऊँगा ।हर एक सिमरन राम नाम का एक मानस दीपक जलाएगा ।और हर दीपक गुरुवारे शु के सुचरणों में अर्पित होगा । सर्वस्व श्री चरणों में परम गुरु । राम

राम कृपा हर एक मोम्बत्ती व दीपक जो हम जलाएँगे उससे चमकेगी । अगर हम दूसरों के हृदय जो उदास हैं उनको रौशनी देंगे तो यह राम की असीम कृपा होगी ।जोत से जोत जलालो..... सबको सुमंगलकारी नाद में पिरो दो .... सबको आनन्दमय बनादो .... हे मेरे प्यारे राम

\*\*\*

*O Ram light up the Lamp  
That crashes my ego.  
I must tell to myself million times  
Its Gurutattwa in me working  
Am no body, no entity.  
Raam Bhaava  
Most pious Diya.  
Let we light up that  
This Deepawali.*

ओ राम ऐसे दीपक को जला दीजिए

जो मेरे अहंकार को ध्वंस कर दे

मुझे अपने आप को करोड़ों बार

बताना पड़ता है

कि गुरुत्व ही मेरे

भीतर कार्य कर रहे हैं।

मैं कुछ नहीं हूँ

मेरा कोई अस्तित्व नहीं है

राम भाव सबसे पावन दीपक

चलिए यह जलाएँ हम इस दीपावली।

\*\*\*

*Today light up all the eternal Diya. BUT HOLD YOUR HAND, DONT POUR OIL TO YOUR WISH DIYA. This only causes our fall and factor for our mayavi sufferings.*

*Ram Naam Sadhak do only pray with Mangalick Shakti of Raaaam. Create a list of 5 people who are suffering. Pray for them. Cry for them. Put your sadhana shakti to bring solace in their lives. Then you would see Ram Himself would pray for you. Its mystique Raaaaam Tattwa.*

*Ram Naam Naad is unique tool of conflict resolution. Remove all conflict and confusions at home and outside. Raam Naad pardons all go for truce and reach out to all at this hour. Do Prove your lord Ram a truce tattwa of selfless love that bridges all in the spirit of bond, love and oneness Raaaaaaaaaaaauuuuuum bridges this Naam Bhava Deepawali.*

*Hey Raaaauuuum you are Universal Healer... make me your medium as I wish to pray for all who are unable to do prayer to you as they are suffering. Heal all prabhu Heal all.Raaaauuuuuum*

*Begin your deepawali with Atmik naman to Param Guru Ram and koti koti shastanga pranam to Guruvareshu. Raaaaam is the eternal shakti but nothing we realize without Guru. This is the hour of mending. We seek mercy O my Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuuuum.*

*Smell the sumangalkari Raaaum. Spread the aroma of raum and aura of Self (ram naam atman bodh) of loving Raaaaaum all over. RAAAUUUM*

आज अपना दिव्य दीया जलाइएगा । अपना हाथ आगे बढ़ाइयेगा पर अपनी इच्छाओं को तेल मत दीजिएगा । यही हमारे पतन का कारण है और मायावी यातनाओं का ।

राम नाम साधक केवल राम की माँगलिक शक्ति के सहारे ही प्रार्थना कर सकते हैं । ५ लोगों के बारे में सोचिए जो कष्ट में हैं । प्रार्थना कीजिए उनके लिए । उनके लिए अश्रु बहाइए । अपनी साधना शक्ति को उनके जीवन में शांति लाने के लिए उपयोग कीजिए । तब आप देखेंगे कि राम आपके लिए प्रार्थना करेंगे । यह रहस्यमय राम तत्व हैं ।

झगड़ों को सुलझाने के लिए राम नाम नाद एक अद्वितीय यंत्र है । सभी घरेलू व बाहर के झगड़ों को मिटा दीजिए । सभी से संधी करिए और सभी को प्रेम से मिलिए । राम नाम सभी को क्षमा कर देता है । यह साबित कर दीजिए कि आपके राम सम्बंधी व निस्वार्थ प्रेम के तत्व हैं जो सभी को प्रेम व एकता के बंधन में जोड़ने का कार्य करता है । राम यह नाम भाव दीपावली को जोड़ता है ।

हे राम तुम सार्वभौमिक अरोग्यता प्रदान करने वाले हो... मुझे अपना यंत्र बना लो क्योंकि मैं उन सब के लिए प्रार्थना करना चाहता हूँ जो अपने लिए प्रार्थना नहीं कर सकते क्योंकि वे कष्ट में हैं । हे प्रभु सबको सबको निरोग्य कीजिए । राम

अपनी दीपावली का शुभारम्भ परम गुरु राम को आत्मिक नमन कीजिए और गुरुवेशु को कोटि कोटि शाष्टांग नमन । राम अनंत शक्ति हैं पर हम गुरु के बिना कुछ भी अनुभव नहीं कर सकते । यह हमारा सुधरने का समय है । हम क्षमा की विनती करते हैं ओ मेरे राम ।

सुमंगलकारी राम की सुगंध को सूँघिए । राम नाम की सुगंध तथा राम नाम आत्म बोध को हर तरफ फैलाइए । राम

\*\*\*

*Do hear the sweetest communication of Raam as Ram Naad Su-sanchar is renting the air.  
Eternal Shree Naad awakening the dawn of Deepawali.Raaaaaaaauuumm*



राम के मधुरतम संचार को सुनिएगा जैसे राम नाम सुसंचार हवा में फैल रहा है ।दिव्य श्री नाद दीपावली की  
भोर को जागृत कर रहे हैं । राम

\*\*\*

## **RAM NAAM DEEPAWALI**

*Here ushers in  
RAM Naam Deepawali  
The sacred Time to empattern  
Pious space all over.  
Dispeller of Darkness  
Ram Naam lights up  
Within the Ram Naam Sadhak  
Experience the eternal jyot  
Through Dasham dwar  
As Nirakar Raam enflames the third Eye.*

## **राम नाम दीपावली**

*आज राम नाम दीपावली*

*के आगमन पर*

*इस पावन समय में*

*हर तरफ पवित्रता को विस्तृत कीजियेगा ।*

*अन्धकार को दूर करके*

*राम नाम के साधक के अंतर में*

*राम नाम प्रकाशित होता है*

*दिव्य ज्योति को दशम द्वार से उसे अनुभव कीजिये*

जैसे ही निराकार राम की लौ  
भृकुटि स्थान पर प्रज्वलित होती है।

राम

\*\*\*

### ***The Shree Naad ...Mantrik Raaaam***

*Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuuuuuum.  
The Shree Naad ...Mantrik Raaaam  
Passed through the Siddhi of Guru  
Then RaamTattwa coloured  
Our Atman by Guru Siddhi on Diksha.  
Since then Gurukripa lights our path  
To see the Eternal Jyot Shree Raaam  
The Param Guru of ours.*

*With Charan Vandana of  
PARAM GURU SHREE RAAUM  
We look for sacred light  
to light up our atman.*

*At the feet of SadGuru  
Shree Shree Swamiji Satyanadji Maharaj Shree  
We bow million times for blessing us  
With Ram Naam Bhav naad Path  
For our elevation and emancipation.*

*Koti koti pranam to  
Param Punya Param Pujya  
Shree Prem Shree Maharaj Shree  
And  
We are particles of dust at the feet of Guruvareshu  
Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree  
Aatmik Pranam from all of us  
As we pray at this Pious Conjunctions  
Of Shree Deepawali  
Where Maaa is Raaam  
SHAKTI manifesting in Naad Bhakti.*

*We pray at your feet O my loving Raam.  
I am nobody but you and you only  
nothing called self is there.  
Remove my ego  
and you remain the Doer O My Ram.*

*Let I only see you O Ram  
in all and I must know to humble myself  
Further to rever and respect all as  
all are my Raaaaum.  
Give me this Bhava  
Let my love be selfless  
Let I live a life of Prayer  
For all in my secrecy of my Bhava Karma.  
My thought  
My words or vac  
And my deeds be Ramamaye  
And I must fight every day to  
Overcome my shallowness and vices.  
I must not rest till I purify  
at least my  
Bhava-atman if not body.*

*O my Ram my micro body  
Is Rama Consciousness of Cosmos.  
You be within to purify me  
O my Lord.  
Billions of Ram Naam jaap  
You must allow to make your  
Temple. i.e me  
worth your Name O Ram.  
Your Ram Naam Daan is biggest Gift  
O my Param Guru Raaaaum.  
I must be allowed to mend my deeds in  
This birth. This you can allow only.  
Without your blessings  
I cant take even your name O my Sakha.*

*Bhav Naad upasana  
Is in your Name O my loving RAAAUM.  
You are Maa  
Most merciful of divine  
Please pardon our faults and flaunting deeds.  
Make us your worthy Sadhak Hey Raam.*

*You are Sadhana You are Siddhi  
You are Saguna Nirakar jyot  
O my Raam.  
Light up our soul O Ram  
Let we cross over maya  
And merge in you --- O my Raam.  
Allow your Company  
Hey Guru Tattwa  
O Raam Tattwa  
We are at your feet  
At your mercy  
O lord light up our Atman  
So that we see your Eternal Rup  
O My Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum.*

### **श्री नाद... मंत्रिक राम**

*दीक्षा के दौरान*

*गुरु की सिद्धि से गुज़र कर*

*गुरु की सिद्धि के द्वारा*

*राम तत्व हमारे आत्मा से लिप्त हो गए ।*

*तब से गुरुकृपा हमारा मार्ग दर्शन*

*करती हैं ताकि हम श्री राम, जो हमारे परम गुरु हैं*

*उनकी दिव्य ज्योत के दर्शन कर सकें।*

*परम गुरु श्री राम को चरणवंदना करके*

*हम उस पावन ज्योति को दूढ़ते हैं*

ताकि अपने आत्मा को प्रकाशमय कर सकें।

अपने सद्गुरु श्री स्वामीजी महाराजश्री के चरण कमलों में

हम करोड़ों बार नमन करते हैं

कि उन्होंने ने हमपर अहेतुकी कृपा करके

राम भाव का नाद पथ दिया

ताकि हम अपना उत्थान व उद्धार कर सकें।

कोटि कोटि प्रणाम परम पुण्य परम पूज्य

श्री प्रेमजी महाराजश्री

और हम तो गुरुवरेषु महर्षि डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री

के चरणों की धूलि के कण हैं

हम सब की ओर से आत्मिक प्रणाम स्वीकार कीजियेगा

जैसे ही हम दीपावली के इस पावन संयोजन पर प्रार्थना करते हैं।

जहाँ राम माँ हैं

और शक्ति नाद भक्ति में प्रकट होती है।

हम आपके श्री चरणों में प्रार्थना करते हैं मेरे प्यारे राम।

मैं कुछ नहीं हूँ पर केवल तुम ही तुम हो

यहाँ तक कि आत्मा भी कुछ नहीं।

मेरा अहंकार मिटा दीजिये

और आप ही सदा मेरे कर्ता हैं मेरे राम!

कृपया मैं केवल आपको ही सब में देखूं मेरे राम

मुझे विनम्र बनाकर दूसरों को सम्मान व आदर

देना सिखाइये क्योंकि सब ही मेरे राम हैं।

कृपया मुझे यह भाव दीजिये

की मेरा प्रेम सभी के लिए निस्स्वार्थ हो

और मैं अपना प्रार्थनामय जीवन का कर्म

पूर्ण गुप्त भाव से निभाऊं।

मेरे विचार

मेरे वचन

और मेरे कृत्य

सब राममय हों

और मैं हर दिन अपनी कमजोरियों व

बुराइयों के साथ युद्ध करूँ।

मैं तब तक न थकूँ जब तक

मैं अपने आत्म भाव को पवित्र न कर लूँ

बेशक शरीर न हो सके।

ओ मेरे राम मेरा सूक्ष्म शरीर

ब्रह्माण्ड की राममय चेतना है

हे प्रभु,

आप मेरे भीतर हैं मुझे पवित्र करने के लिए।

खरबों राम नाम जाप का आशीश दीजिये

ताकि आपका ये मंदिर

जो मैं हूँ

आपके नाम के काबिल हो सके।

आपका नाम दान सबसे बड़ा उपहार है मेरे लिए

ओ मेरे परम गुरु राम!

मुझ पर कृपा कीजिये कि मैं इसी जन्म में ही

अपने कृत्यों को सुधार सकूँ। यह केवल आप ही कर सकते हैं।

बिना आपकी कृपा के तो मैं आपका नाम भी नहीं ले सकता मेरे सखा!

भावमयी नाद उपासना आपश्री के नाम में ही है

ओ मेरे प्यारे राम

आप माँ हैं

पूर्ण दिव्य कृपामयी

कृपया हमारे दोषों व अकड़े हुए कृत्यों को क्षमा कर दीजिये।

*हमें अपना काबिल साधक बना दीजिये हे राम!*

*आप साधना हैं और आप सिद्धि भी*

*आप ही सगुण निराकार ज्योत हो*

*ओ मेरे राम।*

*हमारी आत्मा को प्रकाशमय कर दीजिए*

*हमें माया से पार कर दीजिये*

*और अपने में विलीन कर दीजिये ---ओ मेरे राम*

*अपना संग दीजिये*

*हे गुरुत्व*

*ओ राम तत्व*

*हम आपके श्री चरणों में*

*आपकी दया की भीख मांगते हैं*

*हे प्रभु हमारे आत्मा को प्रकाशमय कर दीजियेगा*

*ताकि हम आपका दिव्य अनंत रूप देख सकें।*

*ओ मेरे राम*

\*\*\*

*One boy used to write millions times Ram Ram. He was happy and go lucky boy. He became man earned his own livlihood. He bought one computer. He started writing ram naam on it and he was blessed and happy as ever and with tranquility he grew. Now he was having less time. So he wrote on computer Ram Ram for say 100 times then whole day whenever he got time he used to copy and paste ram ram as many number he wanted. Slowly he became very busy and SHREE RAM SHARNAM, NEW DELHI [WWW.SHREERAMSHARNAM.ORG](http://WWW.SHREERAMSHARNAM.ORG) | [WWW.IBIBLIO.ORG/RAM/](http://WWW.IBIBLIO.ORG/RAM/)*



*could not find time to write ram naam so he started pasting old ram naam on new day as nothing new ram naam was ever written. One day he suffered great loss and all solace gone he became a worried man. He prayed to Ram with huge emotion and kept on crying. Finally Ram appeared with smile and listened to his story as he kept narrating.*

*Then Ram said "Ram Naam aradhana is no copy- cut - paste theory ... its a sadhana. You start again Ram Naam and have patience and give time to me I will give you all but no short cut in this bhav naad sadhana". The man thereafter lived a self chosen modest life and naam sadhana became his base and he always tell all "at least don't cheat Ram who is your eternal sakha"!*

एक लड़का करोड़ों बारी राम राम लिखता था। वह खुश मिजाज़ का था। बड़ा हुआ , कमाने लगा। कम्प्यूटर खरीदा और राम नाम उस पर लिखना शुरू कर दिया और उस पर कृपा बरसी और आगे से भी जादा खुश व शांत हुआ और तरकी हुई। पर अब उसके पास कम समय था। तो उसने अपने कम्प्यूटर पर १०० बार राम राम लिखा और जब भी फिर उसे समय मिलता तो राम राम कॉपी पेस्ट करके लिख डालता जितनी भी बार। धीरे धीरे और व्यस्त हो गया तो राम राम अब लिखने का बिलकुल ही नहीं समय मिला तो पुराने राम राम कॉपी पेस्ट करना शुरू कर दिया। एक दिन उसे भारी नुकसान उठाना पड़ा, सब शांति खत्म हो गयी और चिंताओं में घिर गया।

बड़े भाव से राम से प्रार्थना की और रोता गया। फिर एक दिन राम आये और मुस्कराते हुए उसकी कहानी सुनते रहे।

राम फिर बोले - कि राम नाम आराधना कॉपी कट पेस्ट सिद्धान्त नहीं है। यह साधना है। तुम फिर से राम नाम लेना शुरू करो , धैर्य रखो और मुझे समय दो , मैं तुम्हें सब कुछ दूंगा पर भाव नाद साधना में शॉर्ट कट बिलकुल नहीं।

उसके बाद उस आदमी ने एक भरा जीवन जीना शुरू कर दिया और नाम साधना उसका मूल बना और वह हमेशा कहने लगा - राम को तो धोखा मत दो जो तुम्हारे अनंत के सखा हैं।

\*\*\*

*ParamGuru Raam is Eternal supreme as declared by Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree. Thereafter all Gurus lived and preached for glorification of ParamGuru Ram and Sadguru shree swamiji maharaj shree only.*

*PARAM PUNYA PARAM PUJYA PREMJI MAHARAJ SHREE and MAHARISHI SWAMI Dr VISHWA MITTEEJI MAHARAJJI LIVED FOR PARAM GURU AND SADGURU AS their "NAUKAR" Such is the EGOLESSNESS of Gurutattwa we have seen. This teaches us selflessness ,a Ram Naam Sadhak must subscribe and practice in life.*

*RAAUM is only and ultimate Truth be our bhava....Hey Param Guru give this thought to all of us and light up the eternal Diya of Dev Deepawali in all. Atmik Pranam to Guruvareshu in this conjunction or sandhya of Shubha Deepawali.Raaaaaaaaaaaaaaaauuuuuuuuuum.*

श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराजश्री ने उद्घोषणा की कि परम गुरु राम सर्वशक्तिमान हैं । तत्पश्चात् सभी गुरुजनों ने परम गुरु राम व सद्गुरु महाराजश्री की है महिमा गाई ।

परम पुण्य परम पूज्य प्रेमजी महाराजश्री और महार्षी स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजजी परम गुरु राम के "नौकर " बनकर जिए । हमने ऐसी अहंकार शून्यता गुरुत्व की देखी है । यह हमें निष्कामता सिखाती है जो एक राम नाम साधक को स्वीकार करके जीवन में उतारनी चाहिए ।

राम ही केवल व परम सत्य है, ऐसे हमारे भाव होने चाहिए ..... हे परम गुरु कृपया यह विचार हम सबको दीजिए और सब में देव दीपावली का दिव्य दीपक प्रकाशित कर दीजिए । इस शुभ दीपावली की संध्या पर आत्मिक प्रणाम गुरुवारेशु ।

"राम"

\*\*\*

*Ram Naam is absolute Truth. Ram Naam saves us from illusive and deceptive sects and group of people who caters to self glorification and selfishness. RAM NAAM IS ETERNITY IT IS BRAHAMA NAAD. ITS PARAMANTMAN SHREE RAM.*

राम नाम परम सत्य है । राम नाम हमें मायावी व धूर्त पंथों व लोगों से बचाता है जो स्वयं की ही महिमा का गुण गान करते हैं । राम नाम सनातन है वह ब्रह्मानन्द है । वह परमात्मन् श्री राम है ।

\*\*\*

*Ram Naam ek anmol gyan kosh hai jo Ram Naam Aradhana sey hum paa saktey hain. Purna astha aur purna vishwas es divya gyan ki khdkhi khool ti hai.gurutattwa ka adesh sey ramtattwa ko pateny hain. Raaaaaaaaam*

राम नाम एक अनमोल ज्ञान कोष है जो राम नाम आराधना से हम प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण आस्था और पूर्ण विश्वास द्वारा इस दिव्य ज्ञान की खिड़की खुलती है। गुरुत्व के आदेश से रामत्व को प्राप्त करते हैं। "राम"

\*\*\*

*Ram Naam is creative force with its constant manifestation of Prakriti. Its code and norms draws the dynamic of colour of life and vegetation. Similarly Ram Naam upasana takes one to the cosmic unseen eternal manifestation of divine codes n norms where Atman realizes and relishes RAMANANDA eternally. RAMM ARADHANA IS SUCH HIGH CONTEMPLATION. NAAD in silence blasts with dynamic hues of colour as Jyoti. This is why Shree Swamiji Maharaj Shree Described Ram Naam as Nirakar Jyot as He saw the eternity and the absolute truth of Ramamayness. AATMIK PRANAM PARAM GURU AND SAD GURU.*

राम नाम क्रियात्मक शक्ति है जो प्रकृति की सतत अभिव्यक्ति है। इसके संकेत व नियम जीवन व प्रकृति के विभिन्न रंग उजागर करता है। इसी तरह राम नाम उपासना हमें ब्रह्माण्ड के संकेत व नियमों के अदृश्य अभिव्यक्ति करता है जहाँ आत्मा रामानन्द को अनुभव करता है व आनन्द लेता है। राम आराधना इतना उच्च चिंतन है। मौन में नाद, ज्योति के विभिन्न रंगों का विस्फोट करता है। इसीलिए श्री स्वामी जी महाराजश्री ने राम नाम को निराकार ज्योति के रूप में वर्णन किया क्योंकि उन्होंने राममय भाव का दिव्यता व परम सत्यता दृष्टिगोचर की थी।

आत्मिक प्रणाम परम गुरु व सद्गुरु।

\*\*\*

*Ram Naam is Sarvashaktiman Mantrik Sadhana. Depth and well anchored intends only allow this Aradhana. Raauuummm.*

राम नाम सर्वशक्तिमान्मांत्रिक साधना है। गहरे व अच्छे से सिद्धे हुए के लिए ही यह आराधना है। "राम"

\*\*\*

*Ram Naam works as creative conjunction it runs the SHRISHTI 24 x7 with the given norms and all the karmic elements are blended and dictate of destiny dawns. Ram naam sadhana elevates our karmic levels and mend our deeds so that we remain more on the higher plane of creative conjunction of Ram bhava keeping the mundan pains of life away. Such is Raaaaauuum*

राम नाम क्रियात्मक संयोजन की तरह कार्य करता है। वह 24x7 सृष्टि नियमों में चलाता है और सभी कर्म तत्व आपस में घुल जाते हैं और नियति के नियमों की भोर होती है। राम नाम साधना हमारे कर्मों के स्तर का उत्थान कर देती है और हमें सुधार देती है ताकि हम राम भाव के संयोजन से जीवन के व्यर्थ दुख दर्द को दूर रखकर क्रियात्मकता के ऊँचे स्तर पर रहें। ऐसे हैं राम।

\*\*\*

*Ram Naam has an eternal movement. Its subtlest form of universal knowledge, on which higher and even eternal thought travel as benefic power. RAM is manifestive and progressive power that always on the move as Ram Naam Avatar.*

राम नाम की दिव्य गति है। उसके सार्वभौमिक ज्ञान का सूक्ष्म स्तर है, जहाँ ऊँचा व दिव्य विचार एक कृपामय शक्ति के रूप में यात्रा करता है। राम अभिव्यक्त व प्रगतिशील शक्ति है जो सदा राम नाम अवतार के रूप में चलायमान है।

\*\*\*

*WHEN WE READ "Echha of Ram" then it means that HE is the source of Inspiration for Ram Naam Sadhak. It's His wish we are able to take His name and His kripa through jaap we find ourself elevated and we are able to pray for others too. This is my Raaaaaaaaaaaaaaaauum.*

*"RAM ECHAA" is eternal seed and embodiment of benefic Tree of the world which is processed by Ram Naam Sadhak for universal good and eternal salvation as well. Such is Raaaaaauum.*

जब हम "राम इच्छा" पढ़ते हैं तब उसका तात्पर्य है कि राम ही सब राम नाम साधक के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। हम उन्हीं की इच्छा के कारण उनका नाम ले पा रहे हैं और उन्हीं की कृपा के जाप से हम स्वयं का उत्थान देखते हैं और दूसरों के लिए प्रार्थना भी कर सकते हैं। यह मेरे राम हैं।

"राम इच्छा" दिव्य बीज है और कृपामय वृक्ष के अवतार, जो राम नाम साधक द्वारा सार्वभौमिक सद्भावना व शाश्वत मुक्ति के लिए प्रक्रिया करता है। ऐसे हैं राम।

\*\*\*

*Guru Kripa is actually living in the space of Raam Shakti Kavach. Keep Guru around you, no matter what you do. Never question HIM please. Never ever blame Him for your problems. Our karma has given us our problems. HE ONLY EMPOWERS YOU TO WITHSTAND THE STORM OF THE TIME. It is Ram Shakti. RAM IS NOT ONLY MOST POWERFUL BUT MOST MERCIFUL TOO.*

गुरु कृपा असल में राम शक्ति कवच के क्षेत्र को कहते हैं। गुरु को अपने अंग संग मानिए, चाहे कुछ भी आप करें। कभी उनपर प्रश्न चिह्न न लगाएँ। कभी उन्हें अपनी समस्याओं के लिए दोषी न ठहराएँ। हमारे कर्मों ने हमें समस्याएँ दी हैं। वे समय का तूफान सहने के लिए केवल हमें सशक्त करते हैं। वे राम शक्ति हैं। राम सर्वशक्तिमान ही नहीं बल्कि सबसे क्षमावान भी हैं।

\*\*\*

*Ahankar ka visharjan tab hota hai jab Naam Shakti aap shree pe virajti hai. Raam hi ahankar ko mita shakti hai. Aham ko meetana Ram Naam Aaradhana hai.*

अहंकार का विसर्जन तब होता है जब नाम शक्ति आपश्री पर विराजित होती है। राम ही अहंकार को मिटा सकते हैं। अहम् को मिटाना राम नाम साधना है।

\*\*\*

*Ram Naam is subtlest context of Shakti which resides in you and that mirrors the cosmos. As we all are micro cosmos within reflecting the Macro cosmos that is Ram.... Brahamanda. It's pure divine Shakti that is omnipresent. RAM naam upasana connects this with ease.*

*Ram Naam is cause and effect of all we are surrounded with. Ram Naam sadhana connects you with the first reason of cosmos which got a creative movement called the World.*

राम नाम शक्ति का सबसे सूक्ष्मतम प्रसंग है जो हममें विराजमान है तथा ब्रह्माण्ड को प्रतिबिंबित करता है। हम सब सूक्ष्म ब्रह्माण्ड हैं और सकल ब्रह्माण्ड को जो प्रतिबिंबित करते हैं वे राम हैं ... ब्रह्मानन्द। वे पवित्र दिव्य शक्ति हैं जो सर्वव्यापक हैं। राम नाम उपासना इससे आसानी से योग कर लेती हैं।

राम नाम कारण व प्रभाव उन सभी के हैं जिनसे हम परिवृत हैं। राम नाम साधना आपको ब्रह्माण्ड के प्रथम कारण संसार से योग करवाते हैं जिससे क्रियात्मक गति हुई थी।

\*\*\*

*Ram is SU-SHAKTI . Ram is SU-BHAKTI. Ram is CHETAN GYAN. Ram is Param Purush. Ram is DAYAMAYI, GYANMAYE, KARUNAMAYE... MAAAAAAAAAAAA.*

राम सुशक्ति हैं , राम सु भक्ति हैं । राम चेतन ज्ञान हैं । राम परम पुरुष हैं । राम दयामयी, ज्ञानमयी , करुणामयी ... माँ हैं !

\*\*\*

A knowledgable does business with Gyan or information of content.  
But a person with Ram Naam Chetna only spreads Divine wish.

एक ज्ञानी ज्ञान के साथ व्यापार करता है ।पर जिस मनुष्य के पास राम नाम चेतना है वह केवल दिव्य इच्छा ही विस्तृत करता है ।

\*\*\*

*Nirakar Ram is Nirakar Gyan or Universal Wisdom. It's all in script akkar of Raam Naam. Shree Akar is Shabdik Raaam.*

निराकार राम निराकार ज्ञान हैं या सार्वभौमिक ज्ञान । यह सब राम नाम आकार की लिपि में होता हैं ।श्री अकार ही शाब्दिक राम हैं ।

\*\*\*

*The supreme feeling of me in Ram...in Nirakar Raamm...and nothing is mine or left to be mine is Rama Chaitnaya Bhava.*

राम की मेरे भीतर परम भावना ..... निराकार राम में ... और कुछ भी मेरा नहीं या मेरा नहीं रहा राम चैतन्य भाव है ।

\*\*\*

*Nirakar Sarvashaktiman RAM holds the key of all knowledge that manifests. In the eternal knowledge of Ram He Himself resides.*

*Thus Ram Gyan Aradhana is Naam Aradhana.*

*Shree RAM is epitome of Universal Knowledge. He is Purusha in Prakritic manifestive context.*

निराकार सर्वशक्तिमान राम हर ज्ञान जो अभिव्यक्त होता है उसकी कुंजी रखते हैं। राम के शाश्वत ज्ञान में राम स्वयं विराजमान रहते हैं।

राम ज्ञान आराधना नाम आराधना है।

श्री राम सार्वभौमिक ज्ञान के सार हैं। वे प्राकृतिक अभिव्यक्ति के संदर्भ में पुरुष हैं।

\*\*\*

*Shree Ram is eternal Supreme and most powerful in the cosmos. He is most potent power that resides in any entity or things we see around. He is supreme in Chetna Shakti. RAAAAAAAAUUUUM*

श्री राम परम शाश्वत हैं और ब्रह्ममाण्ड में सर्वशक्तिमान। वे सबसे प्रबल शक्ति हैं जो किसी भी सत्ता या जो भी हम अपने आस पास देखते हैं उसमें विराजमान हैं।

\*\*\*

*Gurutattwa is sublime space and eternal position where every soul is put on fast track of realization of eternal truth.*

*Guru heals all but absorb many pains and injury of others. They internalize others pain. Such is Guru Tattwa.*

गुरुत्व उदात्त क्षेत्र है और दिव्य स्तर जहाँ प्रत्येक आत्मा को दिव्य सत्य की प्रबुद्धता की तेज़ गति पर चढ़ा दिया जाता है।

गुरु सब को आरोग्यता प्रदान करते हैं और सबके दर्द व कष्ट अवशोषित कर लेते हैं। वे दूसरों की पीड़ा भी अंतरंग कर लेते हैं। ऐसे हैं गुरु तत्व।

\*\*\*

*Tears create rope to shake even Parmatman. Such is power of Prayer.*

*Ram bhava in Naam Yog is no emotion of self but emotive possession of Saguna Raam Himself.*

*Ram Tattwa is only constant content in this manifestive cosmos.*

*Spiritual journey starts and end with disillusionment or removing of moha and maya. It's pure and rude.*

*We all seek merger with Paramatman Ram. But after merger it is pure detached Nirguna sthithi where no attachment is dearer to you and nonattachment keeps equi distance.*

\*\*\*

परमात्मन् को हिलाने के लिए अश्रु एक सेतु की रचना करते हैं । ऐसी शक्ति है प्रार्थना में ।

राम भाव नाम योग में कोई स्वयं की भावना नहीं है अपितु स्वयं सगुण राम का भावात्मक अधिकार है ।

इस ब्रह्माण्ड की अभिव्यक्ति में राम तत्व ही एक नित्य सामग्री है ।

आध्यात्मिक यात्रा का आरम्भ और अंत मोह माया के दूर होने से होता है । वह पावन व उद्धत है ।

हम सब परमात्मा राम से मिलन चाहते हैं । पर विलीनता के पश्चात एक पूर्ण अनासक्त निर्गुण स्थिति होती है जहाँ कोई आसक्ति आपको प्रिय नहीं होती और अनासक्ति आपको सम दूरी पर रखती है ।

\*\*\*

*Spiritual viraha is Ramamayeness. You have it in you yet you miss it.*

आध्यात्मिक विरह राममय भाव है । यह आप में है पर आपसे अनदेखा हो जाता है ।

\*\*\*

*Empty mind is a void that helps spiritual journey to start. But Being in SUNNYA is not void but nearer to a float in space. Here one is free from gravitational control but possessed by nothing yet thoughtfulness of spiritual height.*



खाली मन एक शून्य है जो आध्यात्मिक यात्रा प्रारम्भ करता है। पर शून्य में होना खालीपन नहीं है अपितु अंतरिक्ष में बहने के समान है। यहाँ गुत्वाकर्षण के नियंत्रण से बाहर होते हैं पर आध्यात्मिक ऊँचाइयों के चिन्तन के अधिकार में होते हैं।

\*\*\*

### **PRAYER TO RAAM...Pardon us...**

*Maharishi singing with all Sadhak Today.*

*Kshama karo mere Ram Raghunath  
Ab tak key sarey aparadh.  
Kshama Karo...*

*This dhun rented Shree Ram Durbar....*

*Nature's fury has enveloped the world somewhere it is devastating flood somewhere its disasterous Earth Quake thus calamities all around. This happens due to disbalance in Nature's harmony declared Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree. It is due to our anatural or unnatural and anti nature attitude and behaviour we invite this natures' fury said Maharaj Shree.*

*He said that it is the nature of Nature or Prakriti to punish all as Prakriti knows not to pardon anyone. Maharishi declared it is Merciful Ram ...Parmatman only who can stall this natures' fury and stall the ongoing destruction which has plagued the world.*

*He stressed humankind keeps on doing paap and continues to be in anti nature indulgence year after year that angers Prakriti.*

*He further said "We do not know due to whose fault or Paap the Nature has become so angry." He asked that let all together seek mercy from Paramatman" and the proces of prayer brought flood in all eyes of sadhak as he kept on crying like innocent child seeking pardon on behalf of all from Parmatman. The tears rolle,, voice cracked and the situation in SRS became such karunamayi that even Parmantmans heart must have melted. We all were in tears as Maharishi fuut fuut key ro rahey thee... can't be expressed in words. Some of his prayer which I recollect is written here just few words.....*

*He asked all to sit for dhyana and prarthana....*

*Hey Raam hamarey paap ke karan ye prakritik apada... ye bhishan prakop....*

*O lord pardon us  
We regret for our doings  
Mauf karo hey prabhu  
You know all  
Please realize that you are  
MOST MERCIFUL  
YOU ONLY CAN ORDER NATURE  
TO STOP THIS CALAMITIES.  
Kshama karo kshama karo kshama karo he uttered and cried profusely.  
So much emotive ahovan  
Led to avatara surely  
as every soul was soaked in tears.*

*Maharishi asked all to recite Shree Amritvani and concluded with  
Heart rendering prayer  
Sarvashaktimatet Shree Ramaye Namaha...*

*Well I experienced Ram again once again  
Hey Maharishi Atmik Pranam.*

## **राम से प्रार्थना ..... हमें क्षमा करें**

आज महर्षि सभी साधकों के साथ यह धुन गा रहे थे

क्षमा करो मेरे राम रघुनाथ

अब तक के सारे अपराध

क्षमा करो ....

राम दरबार में यह धुन गूँज रही थी .....

प्रकृति के प्रकोप के कारण विश्व के किसी न किसी कोने में त्राहि मची हुई है ,कहीं बाढ़ से पीड़ित है तो कहीं भूकम्प से। यह प्रकृति के सामंजस्य में आये असंतुलन की वजह से होता है ऐसा महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री ने कहा। प्रकृति के विरुद्ध भावनाओं व व्यवहार के कारण हम प्रकृति के प्रकोप को निमंत्रण देते हैं।

वे बोले कि प्रकृति का स्वाभाव है सज़ा देना, वह किसी को क्षमा करना नहीं जानती। महर्षि बोले कि वे परम दयालु राम , परमात्मा ही हैं जो प्रकृति के इस प्रकोप को रोक सकते हैं जिसने सारी दुनिया में केहर मचाया

हुआ है। उन्होंने कहा की मानव जाति पाप करती जाती है , प्रकृति के विरुद्ध जाती है , सालों सालों , जिससे प्रकृति क्रोधित ही जाती है। वे बोले , की हमें नहीं पता कि किसके पाप के कारण प्रकृति इतनी क्रोधित हो जाती है .... उन्होंने सबके लिए परमात्मा से उनकी कृपा व दया मांगने का आग्रह किया और इस प्रक्रिया में सभी साधकों के आंसुओं की बाढ़ आ गयी क्योंकि वे परमेश्वर से सब की ओर से क्षमा प्रार्थना करते हुए एक मासूम बच्चे की तरह बिलख बिलख कर रोने लगे। आंसुओं की बरसात से , आवाज़ के टूटने पर श्री रामशरणम् में ऐसा करुणामयी वातावरण बना कि परमात्मा का हृदय ज़रूर पिघल गया होगा। हम सभी के आंसू निकलते जा रहे थे जैसे जैसे महर्षि फूट फूट के रो रहे थे ... शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता।  
उनकी कोई एक प्रार्थना जो मुझे याद रही .....

उन्होंने हमें ध्यान व प्रार्थना में बैठने को कहा। ....

*हे राम हमारे पापों के कारण यह प्राकृतिक आपदा .... यह भीषण प्रकोप ....*

*हे परमेश्वर क्षमा कीजिये*

*हमें अपनी करनी पर पश्चाताप है*

*माँफ कर दीजिए प्रभु*

*हे प्रभु आप सबसे दयालु हैं*

*आप ही प्रकृति को आदेश दे सकते हैं*

*की वह ये प्रकोप को रोक दे*

क्षमा करो क्षमा करो क्षमा करो वे बोले और अति वेदना के साथ रोये।

इतना भावात्मक आवाहन के कारण ज़रूर अवतरण हुआ होगा क्योंकि हर आत्मा आंसुओं से भीगी हुई थी।

महर्षि ने सभी को श्री अमृतवाणी का पाठ करने को कहा और समाप्ति हृदय को हिला देने वाली प्रार्थना से हुई।

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

मैंने राम को एक बार फिर अनुभव किया

## हे महर्षि आत्मिक प्रणाम

\*\*\*

### ***Bhav Mandir of Ram Naam Within***

*I the body ...  
mine entity is in the ruins...  
A temple discarded long back  
With shrubs growing all around  
No icon, no puja, no priest visits it,  
None steps in to worship.  
I was abandoned and termed as  
Prachin Mandir  
With no name, no icon,  
And lost in time  
Was my identity of Ruined Temple.*

*Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree  
Came and halted before me and  
Declared me "Supatra"  
I was amazed!  
He within half an hour  
With His Ram Siddhi and Maa Shakti  
Cleaned the temple called Me.  
Shrubs were removed  
Sprinkling of Ram Naad  
Awakened me  
A new lease of life given to  
This Prachin broken Mandir  
Called Me.*

*He installed Ram Naam  
And declared that He has kept  
Param ShaktiMaan beej Mantra Raam  
Which is Nirakar and Jyoti Swarup  
As icon of self and within self.*

*Since then every brick of my body  
chants Ram Ram  
Whatever bhava comes from outside  
As devotee gets purified*

*As Ram resides in this Temple  
Called the body digged out of Ruins  
By Maharishi.*

*Ram Naam celebration  
Happens here all the time  
In isolation of anhat naad  
And all sandhyas are  
Naad aradhana.  
The same goes on with all  
The Ram Naam Sadhak.*

*Here icon is Ram, Priest is Ram  
Siddha Mantra is Raam  
Upasana is Ram  
Upasak is Ram  
Prashad is Raam  
Ambiance of arupa is  
Ramamayeness  
Where good wishes for all echoes.*

*Self becomes Ram Bhava Mandir  
With Ram Naam Chanting  
Maharishi told.  
He asked in the process of  
Building Ram Bhava mandir  
"Don't stop until it becomes  
RAM DURBAR and  
you get reduced to ram dhuli or dust.  
The dust at the feet of Nirakar Ram.  
Such is the order of Maharishi.*

*Maharishi asked all  
To make their respective body  
As Ram bhava Mandir  
And Sayyam, Sampoorna Samarpan  
Simran of Raam Naam are to be followed  
for ahuti of self Ego  
Which is only Bali or  
sacrifice Maa asks for  
In your Ramalaye.*

*Ram Naam the cosmic Seed  
Planted in us by Guru*

*and processed by their Siddhi  
Can not go waste.  
Let's rebuild the Bhav Mandir  
called self.  
Manas Suddhi or pure thoughts  
and intensive RamNaam Naad upasana  
can help us to find Ram once again  
within as we saw  
Ram avataran earlier in our life.*

*At the feet of Param Guru  
and Gurujans our Ego remain as dust  
of this Ram Bhav Mandir called self  
Raaaaaaaaaaaauuuuummmmm.*

## **अंतर में राम नाम का भाव मंदिर**

*में शरीर ...*

*मेरा अस्तित्व टूटा फूटा है*

*एक मंदिर जिसे बहुत पहले ही त्याग दिया गया*

*जिसके चारों ओर झाड़ियों का उगना*

*जिसमें कोई पूजा नहीं, कोई पुजारी नहीं आते*

*कोई नहीं आता भीतर उपासना के लिए*

*जिसका परित्याग कर दिया गया और एक प्राचीन मंदिर*

*की उपाधि दे दी गयी*

*कोई नाम नहीं, कोई मूर्ती नहीं*

*समय में खो गया हुआ*

मेरा अस्तित्व एक बंजर मंदिर था।

महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री का आगमन हुआ

वे मेरे आगे रुके व मुझे सुपात्र कहा

मैं चौंक गया !!

केवल आधे घंटे की अवधि के अंतर

अपनी राम सिद्धि और माँ शक्ति द्वारा

उस मंदिर को स्वच्छ कर डाला, जो मैं था ।

झाड़ियों को उतार दिया

राम नाम के पावन छिड़काव से

मुझे जगा दिया

उस टूटे हुए प्राचीन मंदिर को

जो मैं था

एक नया जीवन प्रदान किया।

राम नाम को स्थापित करके वे बोले कि

उन्होंने परमशक्तिमान बीज मंत्र राम

जो निराकार व ज्योति स्वरूप हैं

जो आत्मा के प्रतीक हैं, अंतर में रख दिए हैं।

तब से रोम रोम मेरे शरीर का राम राम जपता है

जो भी भाव बाहर से आता है

जैसे जैसे एक भक्त पावन होता चला जाता है

जैसे राम इस मंदिर रूपी शरीर जिसे विनाश से महर्षि ने निकाला

में विराजमान होते हैं

राम नाम का उत्सव

निरंतर यहाँ होता चला जाता है

अकेले में अनहत नाद और हर संध्या

नाद आराधना बन जाती है।

ऐसा हर राम नाम के साधक के साथ होता है।

इधर प्रतीक रूपी मूर्ती राम है, पुजारी भी राम

सिद्ध मंत्र राम

उपासना राम

उपासक राम

प्रसाद राम

रामयभाव का वातावरण

जहाँ सभी के लिए सद्भावना गूंजती है।

आत्मा राम भाव मंदिर में रूपांतरित हो जाता है



राम नाम के जाप के साथ

ऐसा महर्षि के बताया।

वे बोले की राम भाव मंदिर के निर्माण हेतु

तब तक नहीं रुकना

जब तक यह

राम दरबार नहीं बन जाए

और तुम

राम धूलि न बन जाओ

धूलि निराकार राम के श्रीचरणों की।

महर्षि ने ऐसा आदेश दिया।

महर्षि ने सभी को

अपने शरीर को

राम भाव मंदिर बनाने को कहा

अहंकार की आहुति देने के लिए

संयम, सम्पूर्ण समर्पण, सतत सिमरन

की अति आवश्यकता है।

हमारे रामलय में

केवल यही एक बलि या त्याग

माँ हमसे मांगती है ।

राम नाम जो बीज मंत्र हमारे गुरु ने  
हममें बोया और उनकी सिद्धि से जो प्रगति हुई  
वह हम बेकार नहीं जाने दे सकते।

आइये फिर से भाव मंदिर जो आत्मा है

उसका पुनर्निर्माण करें

मानस शुद्धि

और गहन राम नाद उपासना

हमारी मदद कर सकता है राम को फिर से

ढूढने के लिए

जैसे हमने उसे राम अवतरण के समय देखा था।

परम गुरु व गुरुजनों के श्री चरणों में

इस राम भाव मंदिर जो हमारी आत्मा है

हमारा अहंकार धूलि क समान हो जाए।

\*\*\*

Who I am?

AM I Gautam meaning from darkness to light. NAY I AM NOT.

*Am I a Chetna or Consciousness!*  
**NAY I CANT BE CONSCIOUSNESS.**  
*Am I Atman, all knower, who enter and exists body after body!*  
**YES I AM ATMAN BUT NOT ALL KNOWER.**  
*Who I am to be for becoming All knower?*  
**WHO TAKES FINAL REFUGE IN GURUTATTWA and SADHNA BEGINS.**

*Atman Tattwa and Guru Tattwa become all knower?.*  
**NAY GURUTATTWA PROCESSES THE ATMAN WITH GURU SIDDHI.**

*Atman when begets Guru siddhi prashad becomes Atman that is All Knower?*  
**NAY ATMAN WITH THE HELP OF GURUTATTWA GETS INTO SADHANA AND INCH TOWARDS  
RAMATATTWA.**

*Sadhana of Atman for Rama Tattwa makes Atman that is all knower or Universal Mind?*  
**NAY ATAMAN WITH THE EMPOWERMENT BY GURUTATTWA LIFE AFTER LIFE PROCESS  
THROUGH SIDDHI UNTIL GETS SALVATION!**

*Atman who gets Salvation from birth and Rebirth with the help and of grace of Guru Tattwa  
merges with Rama Tattwa?*  
**YES BRILLIANCE OF ETERNAL MERGER IS ATMAN BECOMING UNIVERSAL COSMIC MIND THAT IS  
NIRAKAR YET JYOTI SWARUP RAMATATWA. BUT IS IT FINAL SALVATION AND SOUL BECOMES  
NIRGUNA? NAY.**

*Saguna Mukta OR LIBERATED Soul is divine entity and they are Gurutattwa becoming Deva  
Tattwa and help all for their manifestive salvations BEYOND MANY TIME AND SPACE.  
(These are my very personal perceptions and realizations rest ram janey)  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum*

**में कौन हूँ?**

**क्या मैं गौतम हूँ, जिसका मतलब अंधकार से प्रकाश की ओर....। नहीं मैं वो नहीं हूँ।**

**क्या मैं चेतना हूँ?**

**नहीं मैं चेतना नहीं हो सकता।**

**क्या मैं आत्मा हूँ, सर्वस्व जानने वाला, जो एक के बाद दूसरे शरीर में आता है और उसमें बसता है?**

**हाँ मैं आत्मा हूँ, पर सर्वस्व जानने वाला नहीं।**

मुझे क्या करना होगा सर्वस्व जानने के लिए?

गुरुतत्व में सम्पूर्ण रूप से शरणागत होकर और साधना आरम्भ!

आत्मा तत्व और गुरुतत्व मिल कर सर्वज्ञाता बन जाते हैं?

नहीं..... गुरुतत्व आत्मा की प्रक्रिया करके गुरुसिद्धि प्रदान करता है।

आत्मा को जब गुरुसिद्धि प्रसाद प्राप्त हो जाता है तब आत्मा सर्वज्ञाता हो जाता है?

नहीं.....आत्मा गुरुतत्व की सहायता से साधना रत हो जाता है और रामतत्व की ओर अग्रसर होता है।

रामतत्व को पाने की साधना क्या आत्मा को सर्वज्ञाता बना देगा?

नहीं..... आत्मा गुरुतत्व से सशक्त होकर जन्म जन्मान्तरों की सिद्धि प्राप्त करके अंतः मुक्ति प्राप्त करता है!

आत्मा जिसे जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति मिल जाती है गुरुतत्व की कृपा से, क्या वह रामतत्व में विलीन हो जाता है?

जी..... शाश्वत मिलन का प्रकाश तब जब आत्मा सार्वभौमिक दिव्य मन बन जाता है जो कि निराकार होते हुए भी ज्योति स्वरूप रामतत्व बन जाता है। पर क्या यह अंतिम मुक्ति है और आत्मा निर्गुण बन जाता है?

नहीं

सगुण मुक्त आत्माएँ दिव्य आत्माएँ होती हैं और वे गुरुतत्व देवतत्व बन जाती हैं और सबकी मदद समय व क्षेत्र के पार मुक्ति के लिए करती हैं।

(यह मेरे व्यक्तिगत एहसास व अनुभव हैं। ... आगे राम जाने)

\*\*\*

*A blind man, a Ram Naam Sadhak, was carrying lantern at night. A passerby asked 'if you are blind what you are doing with the light?' Gentelman said "Ram Ram ji I am blind but your are not, so this light is for you to see me and this works for both of us... safety".  
Ram Naam enlightened both.*

एक नेत्रहीन व्यक्ति, राम नाम साधक, रात्रि में लालटेन लेकर जा रहा था । राह में चलने वाले ने पूछा ' यदि तुम नेत्रहीन हो तो प्रकाश के साथ क्या कर रहे हो ? सज्जन बोले " राम राम जी । मैं नेत्रहीन हूँ पर आप नहीं , सो यह प्रकाश आपको मुझे देखने के लिए है और यह हम दोनों के लिए कार्य कर रहा है ... सुरक्षा " राम नाम ने दोनों को प्रबुद्ध कर दिया ।

\*\*\*

*Ears form first in the womb before even the body. Let the soul hear Ram Naam right from the womb.*

गर्भ मे सम्पूर्ण देह की रचना में सबसे पहले कान बन जाते हैं। गर्भ से ही आत्मा को राम नाम सुनाइएगा ।

\*\*\*

*I am beyond my body and mind. Who I am?*

*I am soul or atman travelling through many body tunnels and travelling upto merger of eternal kind called Paramatman. Till then I am a nameless I or atman longing for a name which one gets on salvation only. RAM.*

*Living for others is wonderful experience. And absorbing others pain and praying for others gives highest satisfaction for many selfless souls.*

*I wish to be that flower offered at pyre so that at the end I can hear "Ram Naam Satya Hai".*

*Short sentences are like a flower that gives beautiful meaning to life. But wisdom lies in garlands with lot many flowers in a row.*

*Spiritualism is like a garland and there is no short cut for such wisdom.*

*Beautiful mind must not only see and think beauty of cosmos but share the divine beauty with all as that Heals body mind and soul.*

मैं शरीर व मन के पार हूँ । कौन हूँ मैं?

मैं आत्मा हूँ जो कितने ही देह की सुरंगों से गुज़रता हुआ दिव्य आत्मा जिसे परमात्मा कहते हैं उसमें विलीन होने के लिए तत्पर है । तब तक मैं अनामिका "मैं" हूँ या आत्मा जो नाम के लिए तरस रहा है, जो उसे केवल मुक्ति पर ही मिलता है । राम

दूसरों के लिए जीना , एक बहुत सुंदर अनुभूति है । और दूसरों के कष्ट अवशोषित करना तथा दूसरों के लिए प्रार्थनाएँ करना कितनी ही निष्काम आत्माओं को सर्वोच्च संतुष्टि प्रदान करता है ।

मैं वह फूल बनने का इच्छुक हूँ जिसे चिता पर अर्पित किया जाता है ताकि अंत समय में " राम नाम सत्य है" श्रवण कर सकूँ ।

छोटे वाक्य फूल की भाँति हैं जो जीवन को बहुत सुंदर बना देते हैं । पर ज्ञान तो उन हार में निहित है जो बहुत से फूलों के साथ गूँथा गया है ।

आध्यात्मिकता एक फूलों के हार के समान है और ऐसे ज्ञान के लिए कोई सुगम मार्ग नहीं है ।

सुंदर मन न केवल ब्रह्माण्ड की सुंदरता देखते व विचारता है अपितु दिव्य सुंदरता सभी के संग बाँटता है क्योंकि वह तन,मन व आत्मा को आरोग्यता प्रदान करता है ।

\*\*\*

*When we socially do good to others its huge work but a Ram Naam sadhak does good to others selflessly and mostly keeping their deeds a secret. This is Ram Naam Upasana.*

जब हम सामाजिक तौर से दूसरों के लिए अच्छाई करते हैं तो वह बहुत बड़ा कार्य होता है । पर राम नाम साधक दूसरों के लिए निस्वार्थ सेवा करता है और वह भी गुप्त रूप से । यही राम उपासना है ।

*Respect all give and space even to young ones which makes you a real sadhak and ram naam sadhana a reality.*

सबको सम्मान दीजिये और अपने से छोटों को भी , यह आपको एक असली साधक बनाता है और राम नाम साधना को एक वास्तविकता प्रदान करता है।

*Keep the Manas at the lotus feet of Guru so that our mind improves and deeds get mended.*

अपने मानस को श्री गुरुचरणकमलों में रखिए जिससे हमारा मन सुधरे और कृत्यों में सुधार हो ।

*I am not special before Guru not before Ram. At least a million time I tell this to me in a day to tame my EGO because Ram Naam upasana starts with subjugation of one's ego.*

अपने गुरु के लिए या अपने राम के समक्ष मैं कोई खास व्यक्ति नहीं हूँ ।अपने अहंकार को बस मैं करने के लिए,मैं कम से कम करोड़ों बार यह अपने आप को बोलता हूँ । राम नाम उपासना अहंकार के अधीन होने पर ही आरम्भ होती है।

*If I dont respect my parents and elders then Gurutattwa will illude me forever.*

अगर मैं अपने माता पिता व बड़ों का सम्मान नहीं करूंगा , तो गुरुतत्व सदा मुझे अपने से दूर रखेंगे।

*As character makes a person socially similarly the attributes of our inner nature and outer character help spiritual elevation. Character builds Sadhak and pious character make siddhi a real possibility.*

जिस तरह चरित्र हमें सामाजिक मानव बनाता है , उसी तरह हमारे भीतर के गुण व बाहर का चरित्र आध्यात्मिक उत्थान करता है। चरित्र साधक को बनाता है और पावन चरित्र सिद्धि को वास्तविकता प्रदान करता है।

*Realizing Sublime emotions for Ram within becomes a possibility when our mind shuns cleverness and wicked thoughts and we encounter our own innocence where Nirakar Ram resides.It becomes jyoti swarup with our enriched consciousness.*

राम के लिए अंतर्मन में दिव्य भावनाएं अनुभव करना तभी संभव है जब हमारा मन चालाकी और दुष्ट विचारों को दूर कर देता है और हमें अपनी ही सरलता का साक्षात्कार होता है जहाँ निराकार राम विराजमान होते हैं। हमारी समृद्ध चेतना के साथ वे ज्योति स्वरूप में परिवर्तित हो जाते हैं।

*Clean mind, clear heart or Maan and clean body are prerequisites for Ram Naam Sadhana.*

साफ़ मन , साफ़ हृदय और स्वच्छ शरीर राम नाम साधना के आधार हैं।

*Our mind has all the smaskars. Rediscover the sadhna satata within that begets Ram Naam Siddhi.*

हमारे मन के पास सभी संस्कार हैं। साधना की अवस्था का पुनः अन्वेषण कीजिये जो राम नाम की सिद्धि को प्राप्त कर सकती है।

\*\*\*

### **LEARNING SHISTACHAR FROM SWAMIJI MAHARAJ SHREE.**

*Shistachar is measured behaviour, mannerism, Etiquettes, one's nature, samskars, behavioural attributes, Shreejan bhava, Shalinta, sayyam avam Swabhav. Thus SHISTACHAR is no simple word which Swamiji Maharaj Shree picked up and explained in Shree Bhakti Prakash.*

*He wrote:*

SHISHTA SRIJAN WAH JANIYE  
KAREY KARMA SUVICHAR  
NITI RITI VIDHI VINAY SEY  
KAREY SABHI VEYVAHAR.

*Our Sadguru's words are divine. Ram Naam Aradhana is not just limited to a sadhana with Jaap Simran Swadhaye and Maun. Ram Naam mends the sadhak, purifies the sadhak and elevates the sadhak for Sadhana and Shistachar is constant reminder He gave for mid course correction*



*of our life and Sadhana. Then siddhi becomes feasible with purity of nature, character and behaviour.*

*At the feet of Swamiji Maharaj Shree I am relearning Shistachar and sharing with you. Please have patience to learn and introspect for unlearning. RAAAAAAUUUUM.*

*Hey Raam bless us  
So that Concept of Shistachar  
becomes our life  
and we do our karma  
with the parameters  
Benevolence and restrain  
And delete all Paap from life.  
O Ram purify my deeds and karma  
Let subudhhi prevails  
And we live for well being of all.*

*Elderly be respected with  
utter humility  
and not to utter out of turn  
rather we need to restrain our Vac.*

*Never behave with crooked mind  
as this causes fall  
So O lord shun our  
Negations for good.  
Purify our soul, thoughts and action.*

*Judgemental when we become  
we invite conflict and clash.  
Ram Naam sadhana is all about  
Love, respect, peace and conflict resolution.*

*Smile and sublime mind  
loving words create bridges  
and tranquility is begotten  
for Ram Naam Aradhana.*

*Kind and being humane  
are the basics of shistachar  
that allows a reverence  
and space to others.*

*Love, respect, mutual concern of  
each others well beings*

*makes our social entity better  
and the positive energy stoke  
our spiritualism with ease, harmony and tranquility.*

*Hey Ram you bless all  
so that we nurture pure and pious thought.  
As we rever parents and elder  
with respect and serve them with  
due dilligence and duty  
then Ram Sadhana progresses.*

*Swamiji Maharaj Shree taught us  
never live a thankless life,  
never encroach in others' private space  
Never waste others' time*

*by unwanted engagements and words.  
He taught never criss cross two persons  
as this is unbecoming of good behaviour.*

*Reverance for all is civilizations beauty  
behaviour in small and big assembly  
are epitome of our Shistachar.*

*O Ram give your grace  
so that we keep our words  
and promises we made to our Guru  
and do our deeds with pious nature.  
Suvichar or good thought  
respectable dressing and clean self  
make a sadhak full of purity  
that propels into sadhana mode.*

*A purified mind  
a pious thinking being  
a person with sublimity and smile  
a being with character that is pure  
well articulate at Vac or utterance level  
the person who has reverance for elders  
respect for all no matter who is who  
finally vinamrata and innocence  
remain prerequisites of Ram Naam Sadhana.*

*Hey Raam make us humane  
correct our thinking and karma*

*make us first worth of a sadhak  
so that we can continue  
RAM NAAM SADHANA  
with Swacha body, mind and soul.  
Hey Ram make us worth of your Upasana.  
Bless us that we humble our ego  
and follow every words of wisdom  
of our Sadguru  
Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree  
Atmik Pranam hey guruvareshu  
O my Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum.*

## स्वामीजी महाराजश्री से शिष्टाचार का ज्ञान

शिष्टाचार नपे हुए व्यवहार को कहते हैं। तहज़ीब, संस्कार, स्वयं का स्वभाव, चाल चलन, श्रीजन भाव, शालीनता, संयम भाव एवं स्वाभाव। शिष्टाचार कोई मामूली सा शब्द नहीं है जिस पर स्वामीजी महाराज श्री ने ध्यान दिया और भक्ति प्रकाश में समझाया।

उन्होंने लिखा :

*शिष्ट सृजन वह जानिये*

*करिये कर्म सुविचार*

*नीति रीति विधि विनय से*

*करिये सभी व्यवहार*

हमारे सद्गुरु के शब्द अलौकिक हैं। राम नाम साधना लेवल जप, सिमरन, स्वाध्याय व मौन तक ही सिमित नहीं है। राम नाम, साधक का सुधार करता है, पवित्रीकरण करता है और साधक की साधना के लिए उत्थान करता है तथा अपने जीवन व साधना को सुधारने के लिए हमें उन्होंने शिष्टाचार एक सतत स्मरण के रूप में दिया। व्यवहार, संस्कार और चाल चलन के पवित्रीकरण से तब सिद्धि संभव हो जाती है।

स्वामीजी महाराज श्री के चरणों में बैठ कर मैं फिर से शिष्टार को समझने की कोशिश कर रहा हूँ और आपकी साथ बाँट रहा हूँ। कृपया इसे फिर से सीखने व मनन करने के लिए धैर्य रखें।

हे राम हम पर कृपा कीजिए  
कि शिष्टाचार की अवधारणा  
हमारा जीवन बन जाए  
और हम अपने कर्म  
करुणा व संयम के  
मापदण्ड के सहयोग द्वारा करें  
और पाप को जीवन से निकाल दें  
ओ राम मेरे कृत्य व कर्म पवित्र कर दीजिए  
और सदबुद्धि का वास हो  
और सभी के प्रति सद्भावना के लिए यह जीवन हो ।  
बड़ों का मान पूर्ण विनम्रता के साथ करें  
और कभी बिन पूछे न बोलें  
बल्कि अपनी वाणी पर संयम रखें ।  
कभी कपटी मन से व्यवहार न करें  
क्योंकि यह पतन लेकर आता है  
हे प्रभु हमारी नकारात्मकताओं को  
कृपया सदा के लिए दूर कर दें ।  
जब हम दूसरों के प्रति अनुमान लगाते हैं

हम संघर्ष व टकराव को आमंत्रण करते हैं ।

राम नाम साधना प्रेम, आदर, शांति व

संघर्ष का समाधान करना है ।

राम नाम आराधना से

मुस्कान, उदात्त मन

प्रेममय शब्द सेतु बनाती है

और शांति प्राप्त होती है ।

दया और मानवी बनना

शिष्टाचार के मूल सिद्धान्त हैं जो

दूसरों के प्रति आदर व दूसरों को स्वतन्त्रता

प्रदान करती है ।

प्रेम, आदर व एक दूसरे के प्रति सद्भावना

हमारा सामाजिक स्तर भी अच्छा करती है

और सकारात्मक ऊर्जा

हमारी आध्यात्मिकता को बहुत

आसानी से, शांति से व सामन्जस्य से ईंधन देती है ।

हे राम आप सभी पर कृपा बरसाते हैं

ताकि हम पावन व पवित्र विचार उपजा सकें ।

राम साधना की प्रगति होती है

जब हम माता पिता को आदर सम्मान

देते हैं और उनकी सेवा

पूर्ण निष्ठा व कर्तव्य के साथ करते हैं ।

स्वामी जी महाराजश्री ने हमें सिखाया

कि कभी कृतघ्न जीवन नहीं जीना

कभी दूसरे के व्यक्तिगत क्षेत्र में

हाथ नहीं डालना

कभी दूसरे का समय व्यर्थ

वार्तालाप व कार्य से नहीं नष्ट करना ।

उन्होंने इधर की बात उधर करने से मना किया

क्योंकि यह अच्छे व्यक्तित्व के चिन्ह नहीं है ।

सभ्यता की सुंदरता ही इसी में है

कि सभी के लिए आदर हो

तथा छोटी या बड़े संगठन में हमारा व्यवहार

शिष्टाचार का सार है ।

ओ राम कृपा करें

ताकि हम अपनी कही हुई बात पर

और जो हमने वचन अपने गुरु को दिए

उन पर खरे उतरें

तथा अपने कृत्य पवित्र भाव से करें ।

सुविचार, सम्मानित वेश भूषा

स्वच्छ देह साधक को पवित्रता से भर देते हैं

जो कि उसे साधना के साधन में प्रेरित करता है ।

एक पवित्र मन

एक धार्मिक इंसान

एक इंसान जो उदात्त है व जिसके पास मुस्कान है

एक इंसान जिसके पास पावन चरित्र है

जो ने तुले वाक् उच्चार सकता है

वह, जिसके पास बड़ों के प्रति आदर है

चाहे कोई, कोई भी हो, उनके लिए सम्मान है

और अंतः विनम्रता और सरलता

राम नाम साधना के पूर्व निश्चित आधार हैं ।

हे राम हमें दयालु बनाइए

हमारी सोच व कर्मों को सुधारिए

ताकि हम राम नाम साधना

स्वच्छ देह, मन व आत्मा से कर सकें ।

हे राम हमें अपनी उपासना के क्राबिल बनाइए ।

कृपा कीजिए कि हम अपने अहंकार

को विनम्र करके और अपने

सद्गुरु श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराज श्री

के ज्ञान के प्रत्येक शब्द पर अग्रसर हो सकें ।

आत्मिक प्रणाम हे गुरुवारेशु

ओ मेरे रामममममममममममममम

\*\*\*

*Raaaum Naam purifies Ram Bhava and elevates Naam sadhana. I realize hey Raaaauuuum.*

राम नाम , राम भाव को पवित्र तथा नाम साधना का उत्थान करते हैं। मैं यह अनुभव करता हूँ हे राममममम

\*\*\*

*Suddenly a thought came to my mind. RAAM himself chanting His own name Raaaauuuum so lovingly!*

अचानक मन में एक विचार आया। राम स्वयं इतने प्रेम से अपना नाम राममममममममम उच्चार रहे हैं ।

\*\*\*

*Even virtual cyber space becomes Shree Ram Darbar....such is the sublime Ram Kripa ..such is His loving bond with all Ram Naam Sadhaks He keeps.Its Gurukripa that we are bathing in Ram Kripa all the time. RAAAAAAAUUUUUMMMMMMM.*

आभासी साइबर क्षेत्र भी श्री राम दरबार बन जाता है ..... ऐसी दिव्य है राम कृपा..... राम नाम के साधकों के साथ ऐसा है उस प्यारे का प्रेममय संबंध । यह गुरु कृपा ही है जिसमें हम नित निरंतर पावन स्नान कर रहे हैं..... राम.

\*\*\*

*You need not to get artificially pious to beget Ram. Ram spreads sacredness in you as it is He who has to stay in you. But He settles in us when Raam Naam fills all the space of our body. The akasha within must rent Ram Dhun for Ram to stay in you. Raam naam is pavan Dhvani and He creates Pavan Dham where He resides. Such is Ram Kripa.*



राम को पाने के लिए कृत्रिम रूप से धार्मिक होने की आवश्यकता नहीं होती। राम आप में स्वयं ही पवित्रता का विस्तार करते हैं क्योंकि उन्होंने ही तो आप में विराजमान होना होता है। पर वे तब विराजित होते हैं जब राम नाम हमारे शरीर के एक एक कोने में समा जाता है। शरीर के आकाश को राम धुन किराये पर लेनी पड़ती है ताकि राम आप में रह सकें। राम नाम एक पावन ध्वनि है और वह पावन धाम की रचना कर देते हैं जहाँ भी वे विराजमान हो जाते हैं। ऐसी है राम कृपा!!

\*\*\*

*Ram Naam empowers the mind and strengthens our will power. But deep unfailing vishwas on Ram is the corner stone of this Ram Naam energy Connect.*

राम नाम मन को सशक्त करता है और हमारे मनोबल को प्रबल बनाता है। पर राम पर गहरा अटूट विश्वास ही राम नाम शक्ति संयुक्त का मूल है।

\*\*\*

*Ram Kripa is most potent positive energy that runs all the cosmos. All the creative pulses are hidden in Ram Naam.*

राम कृपा सबसे प्रबल सकारात्मक शक्ति है जो सकल ब्रह्माण्ड में से विचरती है। सभी रचनात्मक स्पंदन राम नाम में ही निहित हैं।

\*\*\*

*Creative thinking flowers with excellence when we invoke Raaaaam before creating. Its Ram Kripa I have always been blessed by HIM as I sincerely believe nothing is mine for sure. It is for Him and Him only we live.*

यदि हम किसी रचना के पूर्व राम का आह्वान करते हैं तो रचनात्मक विचार उत्कृष्टता से फलित होते हैं। यह राम कृपा ही है कि मुझे सदा परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है क्योंकि मुझे पूर्ण निष्ठा से यह विश्वास है कि मेरा कुछ भी नहीं है। हम केवल और केवल परमेश्वर के लिए ही जीते हैं।

\*\*\*

*Ram Naam Dhyana, Dharana, Chintan, Gayan, Paath, Jaap and simran lead to Ram Kripa. BUT TO START THE PROCESS TAKE REFUGE IN HIS NAME.*

*Ram we beget with Ram Kripa only.*

राम नाम ध्यान, धारणा, चिंतन, ज्ञान, पाठ, जाप और सिमरन राम कृपा प्राप्त करने के साधन हैं। पर यह प्रक्रिया आरम्भ करने के लिए परमेश्वर के नाम में शरण लीजिए। हम राम को राम कृपा से ही प्राप्त कर सकते हैं।

\*\*\*

*Ram Kripa only can douse our wish diya of lure and lust. Desires must banish with Ram Naam Aradhana. SUDDHA manas and sattvik life is result of Ram Kripa only*

*Ram Naam is eternal love. But to beget Ram Bhava we must surrender ourselves To Ram with UNFAILING FAITH AND TRUST aur Atut Vishwas.*

*Ram Kripa only mends our behaviour and corrects our deeds. RAM kripa be earnestly sought stoking our inner innocence of Manas.*

राम कृपा ही हमारी इच्छाओं व कामनाओं के दीपक को बुझा सकती है। राम नाम आराधना से इच्छाओं का अंत हो जाना चाहिए। राम कृपा से ही शुद्ध मानस व सात्विक जीवन प्राप्त होता है।

राम नाम दिव्य प्रेम है। पर राम भाव प्राप्त करने के लिए हमें राम पर संशय रहित व अटूट विश्वास के साथ समर्पण करना आवश्यक है।

राम कृपा ही हमारे कृत्यों व व्यवहार में सुधार लाती है। मन के भीतर की सरलता को जागृत करके सच्चे मन से राम कृपा को प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए।

\*\*\*

*Ram dhun is mode of Ram Kripa avataram that solves many mortal conflicts and ills.*

राम धुन राम कृपा अवतरण का साधन है जो कितने ही संसारी झगड़े व बिमारियों का समाधान करती है।

\*\*\*

*Ram only permits Ram Naam jaap. Thus Ram Naam Jaap is first Ram Kripa.*

राम ही राम नाम जाप की आज्ञा देते हैं। राम नाम जाप ही प्रथम राम कृपा है।

\*\*\*

*Cosmic sur jhankar is Raam Naad.*

दिव्य सुर झंकार ही राम नाद है ।

\*\*\*

*In acoustic silence the Shakti vibrates and connects with eternal MAA.*  
ध्वनि के मौन में शक्ति कंपन करती है और दिव्य माँ के साथ संयुक्त कर देती है ।

\*\*\*

*Spiritual BLISS remains in Aatmik level. Never relate with materialistic Happiness. Though spiritualism and materialism live together but their attributes from the same body emits differently.*

आध्यात्मिक आनन्द आत्मिक स्तर पर ही रहता है । कभी इसकी सांसारिक सुख के साथ तुलना नहीं करनी । चाहे आध्यात्मिकता और सांसारिकता एक साथ रहते हैं किन्तु उनके गुण एक ही देह से विभिन्न रूप में विस्तृत होते हैं ।

\*\*\*

***NIRAKAR RAM is ETERNAL MAA.***

*Raam Naam Sadhana is MAA Upasana*

*I am recalling Maharshi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharajji told me that whosoever worships Ram as Maa bhava finds the bliss. This was a very personal communication I have had. Today a strange thing happened which I am sharing right now that may help all.*

*I realize within me Ram Naam going as Maaaaa Maaaaaaa I was told within that if you worship Raaaaam as Maaa and you be a child and passionately call maaaaaa maaaaaaa(as if bilakh bilakh key) then Raam is found as Maaa inseparably. The bliss pours in. Maa bhava simran of Raam are so close I realize now and absolute satya vachan of Guruvachan meaning Maharishi's words is being reslized.*

*I am sharing this secret sitting beneath the lotus feet of gurujans and at the feet of all ram naam sadhak ...am at your feet maharishi. I just want to convey Maa Bhava or with passion of calling Maa if you call Raam one can feel the bliss. I am sure many have silently realized this and many will realize this as part of Ram Naam Sadhana.RAAAAAAAAUUUMMMaaaasaa*

## निराकार राम ही शाश्वत माँ हैं

राम नाम साधना माँ उपासना है ।

मुझे स्मरण हो रहा है कि महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजजी ने मुझे बताया कि जो भी राम की माँ भाव में उपासना करता है आनन्द प्राप्त करता है । यह एक बहुत ही निजी वार्तालाप मेरी उनके साथ थी । आज एक बहुत ही विचित्र घटना हुई जो मैं आप के साथ बाँट रहा हूँ ताकि यह आपकी सहायता कर सके ।

मैंने अनुभव किया कि मेरे अंदर राम नाम माँ माँ के रूप में चल रहा था । मुझे बताया गया था कि यदि आप राम को माँ के रूप में उपासना करेंगे और एक शिशु बन कर अति भावपूर्ण होकर माँ माँ पुकारेंगे ( बिलख बिलख कर ),तब राम माँ के रूप में अवियोज्य मिलते हैं । आनन्द बहता है । माँ भाव और राम सिमरन इतने निकट हैं मैं यह अब अनुभव कर रहा हूँ और परम सत्य गुरुचवन यानि महर्षि के शब्द अनुभव कर रहा हूँ ।

मैं यह गुप्त रहस्य गुरुजनों के चरणकमलों में व राम नाम साधकों के चरणों में बैठ कर बाँट रहा हूँ ... मैं आपके चरण कमल में हूँ महर्षि । मैं केवल माँ भाव के बारे में सूचित करना चाहता था कि यदि आप राम को माँ कह कर पुकारेंगे आप आनन्द महसूस करेंगे । मुझे विश्वास है कि बहुतों ने यह अनुभव किया होगा और बहुत यह अनुभव करेंगे राम वाम साधना के अंतर्गत । " रामां "

\*\*\*

### **Power of PRAYER in RAM NAAM ARADHANA.**

*Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree proclaimed the ultimate truth of Ram Naam upasana --"-UPASANA MEY PRARTHANA BADI CHEEJ HAI".*

*Yes Prayer bridges and bring harmony in life and nature; life and inanimates; life and lives; micro mind and universal mind; Atman and Paramatman. Thus its prayer in lips and wellness in heart bring a unity of minds and goodness prevails.*

*I am an upasak. Ram naam is my mode and my eshta as spiritual destination.  
I pray to lord*

*I wish good for all  
Let my Ram Naam heal all  
Ram Naam cures mindsets n karma  
Ram Naam prayer diminishes fear  
Ram Naam cares all secretly  
As we do Bhakti upasana of Ram Naam.  
Ram Naam brings harmony in nature  
Ram Naam saves sadhak from  
Natures' fury.  
Ram Naam brings ecological balance  
As the positive tarang or vibration  
Bridges Prakriti and Purusha.  
Ram Naam sadhak never prays for self.  
Even in thick of trouble and trauma  
An ardent upasak wants just  
RAM be with them to face the life.  
Ram Naam sadhak is selfless  
Ram Naam Sadhak prays for others.  
Ram Naam upasak finds Ram  
In their Prayer.  
In His name a sadhak rides  
To experience bliss or kripa  
And His mercy too.  
Ram Naam is Param Dayalu  
And matri rupi Shakti  
As compassion flows from Ram Naam.  
Ram Naam Sadhana is loving all  
Selflessly and yet hiding the self  
While praying for other souls.  
Ram Naam upasana  
Brings harmony in universal mind.  
Ram bridges and brings all under  
The celestial umbrella of Eternal Ram  
Beaming eternal love  
And demystfying maya.  
Ram Naam prayers is Ananda  
As Ram in self is encountered.  
I wish to pray at least once for a  
suffering soul everyday.  
At least once my prayer goes to Nature  
A thanks giving once in a day.  
I wish to relish Ram Naam Upasana  
As a servant who only knows*

*how to nurse others  
through my prayer of Ram Naam.  
Ram Naam is sachitananda only  
When we know how to pray for others  
Who are all Ram For Me.  
Hey Raaaauum I pray for those  
Whose eyes ran through the loving  
Raaaaaaauuuuumm.*

## राम नाम आराधना में प्रार्थना की शक्ति

श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराजश्री ने राम नाम उपासना की परम सत्यता की उद्घोषणा की --" उपासना में प्रार्थना बड़ी चीज़ है "

प्रार्थना जोड़ती है व शांति लाती है -जीवन व प्रकृति में ; जड़ व चेतन में ; जीवन में व ज़िन्दगियों में ; सूक्ष्म मन व समिष्टी मन में; आत्मा व परमात्मा में । अधरों पर प्रार्थना और हृदय में सद्भावना मननों में एकता लाती है और अच्छाई स्थापित होती है ।

मैं एक उपासक हूँ । राम नाम मेरा साधन है और मेरे इष्ट आध्यात्मिक गंतव्य ।

*मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ*

*सबके लिए सद्भावना रखता हूँ*

*मेरे राम सबको आरोग्य करें ।*

*जैसे हम राम नाम की भक्ति उपासना करते हैं*

*राम नाम मन व कर्मों को निरोग करते हैं*

*राम नाम प्रार्थना भय मिटा देती है*

*राम नाम गुप्त रूप से सबकी देख भाल करता है।*

*राम नाम प्रकृति में संतुलन लाता है*

वह प्रकृति के प्रकोप से साधक की रक्षा करता है

राम नाम परिस्थितियों में संतुलन लाता है

जैसे सकारात्मक तरंग

प्रकृति और पुरुष को जोड़ती है।

राम नाम साधक कभी स्वयं के लिए नहीं प्रार्थना करता।

भारी विपदाओं व विषाद में

एक सच्चा उपासक केवल

जीवन से जूझने के लिए राम को ही संग चाहते हैं।

राम नाम साधक निष्काम होता है

राम नाम साधक दूसरों के लिए प्रार्थना करता है।

राम नाम उपासक राम को ही प्रार्थना में पाता है।

उसके नाम में साधक आनन्द या कृपा

तथा उसकी करुणा को अनुभव करता है।

राम नाम परम दयालु है

और मैत्री रूपी शक्ति भी

क्योंकि राम नाम से करुणा प्रवाहित होती है।

राम नाम साधना द्वारा

निष्काम भाव से सब के लिए प्रेम उमड़ता है

पर स्वयं को गुप्त रखकर

दूसरी आत्माओं के लिए प्रार्थना करता हूँ ।

राम नाम उपासना

समिष्टी मन में सामंजस्य लाती है।

राम सब को जोड़ कर तथा सबको एक साथ

दिव्य राम के शाश्वत छत्र के नीचे ले कर आते हैं

दिव्य प्रेम विस्तृत करते हुए

और माया को रहस्यमय नहीं रखते ।

राम नाम प्रार्थना आनन्द है

क्योंकि राम नाम यहाँ पाए जाते हैं ।

मेरी इच्छा है कि कम से कम एक

पीड़ित आत्मा के लिए हर रोज़ प्रार्थना किया करूँ ।

कम से कम एक बार हर रोज़

अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए

मेरी प्रार्थना प्रकृति के लिए की जाए।

मैं राम नाम उपासना रस पान करना चाहता हूँ

एक दास की भाँति

जिसे केवल राम नाम की प्रार्थना

दूसरों की सेवा हेतु करनी आती है ।

राम नाम सच्चिदानंद ही हैं



जब हमें दूसरों के लिए प्रार्थना करनी आ जाती है

तो सभी मेरे लिए राम हैं ।

हे राम मैं उन सभी के लिए प्रार्थना करता हूँ

जिनके दृष्टि प्यारे राम से गुज़री है ।

\*\*\*

*Maharishi yesterday taught us that whole cosmos is His and there is nothing called mine even the self ; this is the core of VISHWAS a sadhak champions. So at his feet I am trying to read inbetween the word Vishwas to unveil what are its hidden dynamics through peeling off VISHWAS.*

**V**

*Vishwas is Pure Trust and Faith with ultimate Shraddha. There can't be any scope of doubt in this Vishwas.*

**I**

*"I" surrenders to the Lotus feet of Ram for all parts of karma. this is absolute surrender to Ram with Raam Bhava.*

**S**

*Sublime of eternity is filled in this body with Ram Naam jaap and no void is left. This Filled self or Raam Bhava work on His behalf with no entity of the self left.*

**H**

*He is in Me, so what I think, see , utter and do be of Raam. So He remains witness of my work, nay His Work ..through the body of Mine. Such be the Vishwas.*

**W**

*Whatever Guru said wrote or heard about them are divine. This be the Trust level. Nothing can be untrue which are written or said by Guru.*

**A**

*Attributes of Ram Naap are Marg for salvation of Souls. THIS BE THE ULTIMATE VISHWAS.*

**S**

*Subtle Gurutattwa takes our Jeevattawa for eternal merger with Ramatattwa. This is Dhruva satya. Have absolute Vishwas in this.*

**SUCH IS THE GURU KRIPA MAHARISHI SHOWERED ON US.**

**Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuummm.**

कल महर्षि ने हमें सिखाया की सारा ब्रह्माण्ड परमेश्वर का है और ऐसा कुछ नहीं है जिसे हम मेरा कह सके ,यहाँ तक की स्वयं भी नहीं। यह विश्वास का मूल है। उनके श्री चरणों में मैं विश्वास शब्द के बीच छिपी गहरी गतिशीलता का परदा उतारने का प्रयत्न कर रहा हूँ

V

विश्वास पवित्र , भरोसा,निर्भरता श्रद्धा के संग। विश्वास में किसी भी तरह के संशय की गुंजाईश नहीं है।

"I"

"मैं " के सभी कर्मों का राम के श्री चरणों में समर्पण।राम को राम भाव के साथ, ये ही पूर्ण समर्पण है।

S

अनंत की दिव्यता इस शरीर में राम नाम के जाप से भरना ताकि एक भी छेद न रह जाए। यह राम भाव परमात्मा की ओर से कार्य करता है जिससे "मैं " का अस्तित्व ही नहीं रह जाता।

H

परमात्मा मुझ में है। जो मैं सोचता हूँ , देखता हूँ ,बोलता हूँ ,वह सब राम का। राम इस शरीर के ज़रिये, मेरे , नहीं अपने हर कार्य के साक्षी हैं ..... । ऐसा विश्वास होना चाहिए।

W

जो भी गुरु ने लिखा या उनके बारे में सुना, वह दिव्य है। ऐसा भरोसे का स्तर होना चाहिए। कुछ भी असत्य नहीं हो सकता जो गुरु द्वारा लिखा व कहा गया हो।

A

राम जाप के गुण आत्माओं की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह परम विश्वास होना चाहिए।

S

सूक्ष्म गुरुत्व हमारी जीवतत्व को रामतत्व से दिव्य मिलन करवाता है। यह ध्रुव सत्य है। इसमें पूर्ण विश्वास रखिये।

ऐसी गुरुकृपा महर्षि ने हम सब पर बरसाई।

\*\*\*

*While in Ram Naam Simran you utter a wellwishing word for someone it would work as Healer and Raam Bhaava can smear the person. SUCH IS GLORY OF RAM NAAM PRAYER.*

राम नाम सिमरन करते समय यदि आप किसी के लिए शुभ भावना के शब्द उच्चारते हैं तो वह आरोग्यता प्रदान करने का कार्य करेगा और उस इंसान को राम नाम से ओत प्रोत कर देगा। ऐसी महिमा है राम नाम की प्रार्थना की।

\*\*\*

*Never underestimate your power of THINKING! This is Karma of your Atman. Keep it pure and pious as this THINKER in you is RAM and He is Mangalik power of the Cosmos.*

अपनी सोचे की शक्ति को कभी कम नहीं समझना। यह आपकी आत्मा का कर्म है। इसे पवित्र व पावन रखिये , क्योंकि जो सोच रहा है वह राम है और वे इस ब्रह्माण्ड की मांगलिक शक्ति हैं।

\*\*\*

*Measure the Divine Kripa  
Ram has been showering upon  
Since time unknown.  
Those" Akaran Pyar" for mortals  
But divine has a reasoning  
And design too.  
Guru Kripa  
Can convert everyself as SUPATRA  
So that all can store the BLISS of Ram.  
Raam is ANANDA.  
Raam is Mangalik Prayer*

*Raam is wellness symbol for all.  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum.*

*दिव्य कृपा को मापीये*

*जो राम अनंत काल से*

*अकारण प्यार*

*नश्वर जीवों के लिए*

*बरसा रहे हैं*

*पर उसका दिव्य विचार व अभिप्राय भी है।*

*गुरु कृपा*

*हर किसी को सुपात्र बना सकती है*

*ताकि सभी राम का आनंद संग्रह कर सकें।*

*राम आनंद हैं*

*राम मांगलिक प्रार्थना*

*राम सबके लिए सद भावना का चिन्ह है*

*\*\*\**

*TIME can be UNKIND to you.*

*But you can't be Unkind to TIME.*

समय आपके लिए दुष्ट हो सकता है

पर आप समय के लिए नहीं

\*\*\*

*Aham Bhajami Raamam...  
Satyam shivam mangalam...  
Live for SUVHA MANGALA SANCHAR....  
Script the Time anew with smile  
Yes it's another bright dawn  
with new hues and splash of hopes  
Ram Ram.*

*अहम् भजामि रामम्..*

*सत्यम् शिवम् मंगलम्..*

*सु मंगलाचार के लिए जीएँ...*

*समय की मुस्कुरा कर नव रचना करिए..*

*जी*

*नए रंगों व उम्मीदों की छींटों के संग*

*एक और नई भोर हुई है*

*राम राम*

\*\*\*

*Maharishi Dr Vishwa Mitterji ji Maharajji said everybody becomes victim of Maya even Sati became its victim who in course doubted Shiva. Thus Maya creates a dent on Vishwas and Trust deficit creates all the problems of life. So watchout for Mayabi elements which erodes your*

*foundation of life by diminishing your trust in others and cause fragmentation of all relations. Atut Vishwas is the cardinal principal for Sadhaks he declared.*

महर्षि डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री ने कहा कि सभी माया के शिकार हो जाते हैं, सति तक उसके अधीन हो गई थी और उसने शिव पर संशय किया था । इस प्रकार माया विश्वास पर एक धब्बा लगा देती है और विश्वास की कमि ज़िंदगी की बहुत सी मुसीबतों को जन्म देती हैं । मायावी तत्वों से बचिए जो दूसरों के प्रति विश्वास को कम करके आपकी ज़िंदगी की नींव को खा जाते हैं तथा संबंधों में दरार उत्पन्न करते हैं।

उन्होंने साधकों में अटूट विश्वास का होना एक प्रमुख सिद्धांत बताया ।

\*\*\*

### ***Ram Bhava Handles Turbulant Mind.***

*Swamiji Maharaj Shree asked all Ram Naam sadhak to evolve NISCHAY for Bhakti Yoga. The first thing of Nischay is to have singular focus of mind towards Ram. But this is most struggling point for all as defeating the turbulant mind filled millions of thoughts do poses a serious problem for a SINGULAR FOCUS.*

*In meditative mode, in contemplative mode, in simran mode or in jaap mode many stray thoughts appear that cause disturbances for our bhakti yoga. There are many proven methods to control that state of mind. Here I am sharing my discovery.*

*Human kind is blessed as s/he is gifted everytime with two options with well laid out consequences which are told clearly from within. And our deeds or karma is out of our choices we have been making. This is the base of our thought and action theory.*

*Similarly in us three personalites exist. One is Good and benevolent; other is normal which at times pretend to be neutral but in reality selfish. The third one is bad or embodiment of negations. Now we all have these at thought process and some percolate in actions or karma.*

*Now in Bhav aradhana of Bhakti yoga we encounter thoughts from these above categories and we face the turbulence and that destroys our divine contemplation. To negotiate this real mind situation we may try the following methods.*

*Apart from our persona GOOD, SELFISH or SELF CENTRIC and Then BAD we have a PURE DIVINE BEING within which is Reflections of God.*

*Imbibe this Divine element in you by invoking Ram in you. He is Pure Pious and Sublime. Soak your thought in this. Now whatever your thought appears let your divine self questions as if HE is Ram and critically snubbing you or telling you. Then you mend.*

*Example --- You are in dev bhava asking for divine avataram suddenly a thought comes (as if of selfish self) "look he is so wealthy did all the wrongs and still enjoying..Ram ka ye hi vichar hai and why I have to live hand to mouth". Now Ram in you snubs this thought "you are jealous and you want to be judgemental and do you question me your Ram. You dont have patitence and you forgot what all you did and despite of this I kept on pardoning you and today while seeking me you are in your jealous and regretting or negative mode?".*

*Likewise whatever thought comes we need to negotiate with the thought perspective of divine in you so that your natural attributes are stalled. Lajja, Lobh, kaam, ersha, krodh are some of the inner reality those are to be at one level be negotiated with strong critical view of Divine words emitting within you and at the second level we need to burry all our thoughts and trubulance with enermous divine bhava so that ocean within bcomes tranquil and our thoughts are put to order. The self discipline and our character plays a vital role for these thought negotiations.*

*Swamiji Maharaj always taked about discipline in life with high moral value based character making.*

*I know at first its bit complicated to understand and practice but its easy while you actually negotiate. All our non divine thoughts are to countered with Divine and pious logic and finally sending message to the self that let my ego be crashed and divine ego of RAM rule in my bhakti aradhana. This is my Nischay Hey my Raaaaaaaaaaaauuuum.*

## राम भाव अशांत मन को संभाल लेता है

स्वामीजी महाराज श्री ने सभी राम नाम साधकों को भक्ति योग के लिए अपने निश्चय को उभारने के लिए कहा। निश्चय होने के लिए पहली बात है कि एक मन से राम की ओर केंद्रित होना। पर एक मन होना ही सभी के लिए संघर्षपूर्ण विषय बन जाता है क्योंकि अशांत मन में करोड़ों विचार एक गंभीर समस्या प्रदान करते हैं।

ध्यान भाव में ,मनन भाव में , सिमरन भाव में या जाप भाव में बखरे हुए विचार समक्ष आ जाते हैं जो की भक्ति योग के लिए उपद्रव मचा देते हैं। मन की ऐसी स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए बहुत से साबित किये हुए ढंग हैं। मैं इधर अपनी खोज आप से बांटता हूँ।

मानव जाति पर कृपा है कि उसके समक्ष हर बार दो विकल्प सामने आते हैं, जो उसको अंतर्मन से बताये जाते हैं। हमारे कृत्य व कर्म, हमारे ही किये हुए कर्मों के परिणाम स्वरूप होते हैं। यह हमारे विचार व कर्म सिद्धांत की नींव है ।

इसी तरह हममें तीन व्यक्तित्व बसते हैं। एक है अच्छा, दूसरा सामान्य जो कि आम तौर पर निष्पक्षता का ढोंग करता है पर होता स्वार्थी है। तीसरा है बुरा या नकारात्मकता से परिपूर्ण। अब हम सब में यह तीनों, विचारों की प्रक्रिया के रूप में होते हैं पर कुछ कर्मों में भी परिवर्तित हो जाते हैं।

भक्ति योग की भाव आरधना में ऊपर कही श्रेणियों में से विचार आते हैं और हम अशांति अनुभव करते हैं जो कि हमारी दिव्य मननशीलता को भंग कर देता है। इस मानस स्थिति से जूझने के लिए हम कुछ तरीकों को अपनाते हैं।

अच्छे, स्वार्थी और बुरे व्यक्तित्व से साथ साथ हममें एक पूर्ण पवित्र व्यक्ति भीतर है जो परमात्मा की छवि के अनुरूप है।

राम का आहवाहन करके अपने आप में यह दिव्य तत्व लाइए। वे पूर्ण रूप से पवित्र व दिव्य हैं। अपने विचार को इस भाव में डुबो दीजिये। अब जो भी विचार उठता है, अपने दिव्य स्वरूप को उससे प्रश्न करने दीजिये जैसे की वह ही राम है और आपको वे बता रहे हैं या समीक्षा करके झिड़की दे रहे हैं। तब आप में सुधार हो जाता है।

उदाहरण: आप देव भाव में होकर दिव्य अवतरण की मांग कर रहे हैं और अचानक एक विचार आ जाता है कि देखो वो कितना धनी है पर सभी गलत काम किये और फिर भी मजे ले रहा है .... राम की यही विधि है ? मैं क्यों ऐसे तिल तिल के जी रहा हूँ "

अब राम आपको झिड़की देकर आपके विचार की समीक्षा करेंगे की " तुममें ईर्ष्या आ गयी है और तुम पक्षपात करने लगे हो और मुझसे, अपने राम पर प्रश्न कर रहे हो? तुममें धैर्य नहीं है और तुम अपना किया सब भूल गए और इन सब के विपरीत मैंने तुम्हें हर बार क्षमा किया और आज तुम मुझे पुकारते हुए अपने ईर्ष्या व नकारात्मक के भाव में आ गए ?

इसी तरह जो भी विचार आये, उससे हमें दिव्य परिपेक्ष्य से बातचीत करके अपने में प्राकृतिक गुणों की स्थापना करनी है। लज्जा, लोभ, काम, ईर्ष्या, क्रोध कुछ आंतरिक सच्चाई हैं जिन्हें दिव्य शब्दों द्वारा एक स्तर पर दृढ़ता से बातचीत करनी होगी और दुसरे स्तर पर इन सब विचारों व अशांति को असीम दिव्य भाव में दबा देना होगा जिससे हमारा आंतरिक समुद्र शांत हो सके और सभी विचारों को आराम मिले। इन विचारों की बातचीत में स्वयं का अनुशासन व चरित्र एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्वामीजी महाराजजी ने जीवन में अनुशासन को उच्च चरित्र के साथ हमेशा प्रार्थमिकता दी है।



मुझे ज्ञात है कि पहले इससे समझने में कुछ कठिनाई आ सकती है पर यह अत्यंत आसान है जब आप असल में बातचीत करते हैं। सभी विचार , दिव्य विचारों व पवित्र तर्क का सामना कर के आप स्वयं को सन्देश पहुंचाते हैं कि होने दीजिये मेरे अहंकार को ध्वस्त , और मेरी भक्ति आराधना में राम के अहंकार को राज्य करने दीजिये ।

यह मेरा निश्चय है हे मेरे राम.

\*\*\*

### ***In search of Inner Meaning of NISCHAY.***

*One elevated soul has asked me to peel off Nischay to get the inner meanings of the word uttered by Swamiji Maharaj Shree. Gururvareshu, Hey Ram atmik pranam please make me understand you....*

*No thought but Ram is mental focus of Bhakti upasana.*

*Innerself or atmik Shakti awakens with Bhakti*

*Sthithi of Self or State of Manas is purest of pure and sublime like of Raam.*

*Chetana to Chaitanya Bhava is realizing Ram and encountering His attributes.*

*Healer as Rama is the divine mirror bhava from where the first ray of oneness appears. Eternal love of Ram is felt within.*

*Aaradhak, Aradhana and Aradhya become one at Jeevatman level with Gurutattwa smears all over as all pervading Raamtattwa appears before us.*

*You are Ram, Ram is in you and you are in Ram.Yeild to this Ramamayness to beget the divine Nischay.*

*Pranam Gururvareshu pranam*

*Jai Jai Ram.*

***निश्चय के गहरे अर्थ की खोज में***

एक उत्कृष्ट आत्मा ने मुझसे 'निश्चय' शब्द, जिसका स्वामीजी महाराज श्री ने उल्लेख किया, उसका गहरा अर्थ खोजने के लिए कहा। गुरुवारेशु, हे राम आत्मिक प्रणाम, कृपया मुझे आपको समझने की अनुमति प्राप्त हो...

निर्विचार पर राम भक्ति उपासना का मानसिक केंद्र है।

आत्मिक शक्ति भक्ति को जागृत करती है।

आत्मा की स्थिति राम के भाँति सबसे पवित्र व उदात्त है।

चेतना से चैतन्य भाव का तात्पर्य है राम को अनुभव करना व उसके गुणों से अवगत होना।

राम जैसी आरोग्यता दिव्य जैसे भाव के समान है जहाँ से एक्य की पहली किरण अवतरित होती है। राम के लिए दिव्य प्रेम भीतर महसूस होता है।

आराधक, आराधना और आराध्य जीवात्मा के स्तर पर एक हो जाते हैं जब गुरुत्व जो सर्वव्यापक हैं हम सबको ओत प्रोत करके रामत्व हमारे सामने प्रत्यक्ष आते हैं।

आप राम हैं, राम आप में हैं और आप राम में हैं। इस राममय भाव के प्रति समर्पित होकर दिव्य निश्चय को प्राप्त कीजिए।

प्रणाम गुरुवारेशु प्रणाम

जय जय राम

\*\*\*

## "NISCHAY" TO MEET RAM

Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree declared that "Nischay" or determination is the foundation of Bhakti Marg. Even with determination one can meet the Eshwar. He further said if one's Nischay or determination is weak then with Eshwar Prarthana the empowerment can

*come to the sadhak as he said in Pravachan Piyush that "waha (eshwar) apki sahayata karengay tatha purna nischay dengey".*

*At the feet of Swamiji Maharaj Shree I am trying to understand its further depth.*

*The word NISCHAY referred by Swamiji is a huge concept in itself!*

*It means Will Power, Determination, Confidence, Strong Mind Set, Purity of Mind or Suchita, Atmik power, Self Belief, Trust or Vishwas, Purna Aastha etc.*

*He referred as every uttered word remains in the Brahmanda and that can be heard again through radio-- meaning frequency deciphering machine and by pin pointing the band (short wave and medium wave etc) and frequency one can hear the sound again as it happens in common radio. This point of reaching the perfect synchronised meter or point happens with Nischay. It also shows the perfection of determination one has to attend to witness God.*

*Again it is understood in Bhakti Marg a prarthana to Shree Ram is very important. Ram is so loving that He himself empowers sadhak through with His Kripa they can see and feel Ram. It means eshwar Shkshatkar is possible when Ramji blesses us. THIS IS RSM KRIPA.*

*Thus in Ram Bhava aradana we must discover the BHAKTI NISCHAY STHITHI of Self. Culture and treat our will power and mend our thought process. Pious and punya deed and truthfulness can make all the changes. Pure mind and clean atmik vision within and wellness in heart for all can take us to the higher order of Bhakti Yog which means merging with Rama Tattwa with eternal Bhakti Marg. At that state perhaps we encounter Ram and become His will and sublimity will be that engimatic when your heart might say... I AM THAT. Raaaaaaauuuuum please give us Bhakti and Nischay. Hey Guruvaresh be your Gurutattwa be around us while we develop our being and entity with bhakti Upasana.Raaaaaaauuuuummmmm.*

## राम से मिलने का निश्चय

श्री श्री स्वामीजी सत्यानन्दजी महाराज श्री ने उद्घोषणा की कि निश्चय भक्ति मार्ग की नीव है। हम दृढ़ निश्चय से भी ईश्वर से मिल सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि अगर निश्चय कमज़ोर है तो ईश्वर से प्रार्थना करके साधक सशक्त हो सकता है, जैसे की उन्होंने प्रवचन पियूष में कहा है की " वे (ईश्वर ) आपकी सहायता तथा पूर्ण निश्चय देंगे "

स्वामीजी महाराज श्री के श्री चरणों में इसे गहराई से समझने की कोशिश कर रहा हूँ।

निश्चय शब्द अपने आप में के एक विशाल संकल्पना है।

इसका मतलब है आत्मबल, दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास, मन की शुचिता, इच्छा शक्ति, विश्वास, पूर्ण आस्था, इत्यादि।

हर उच्चारण किया हुआ शब्द ब्रह्माण्ड में रहता है और उसे बार बार radio-- अर्थात् आवृत्ति गूढ़ रहस्य मशीन के माध्यम से और पिन द्वारा (short wave and medium wave etc) एक आम रेडियो की भांति सुना जाता है। उस बिंदु तक पहुंचना Nischay के साथ होता है। वह यह भी दर्शाता है कि परमेश्वर का साक्षात्कार पाने के लिए कैसी पूर्णतया निश्चय की आवश्यकता होती है।

भक्ति मार्ग में श्री राम से प्रार्थना का बहुत उच्च स्थान है। राम इतने प्यारे हैं कि वे स्वयं साधक को अपनी कृपा द्वारा सशक्त कर देते हैं ताकि वे राम को महसूस कर सकें व देख सकें। ईश्वर साक्षात्कार रामजी की कृपा से ही संभव है। यही राम कृपा है।

राम भाव की आराधना करते समय हमें स्वयं की भक्ति निश्चय स्थिति को दृढ़ निकालना होगा। अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ बनाएं और अपनी विचार धारा को विकसित करें। पवित्र व पुण्य कर्म और सत्यता बहुत बदलाव ला सकते हैं। पवित्र मन व साफ आंतरिक आत्मिक दृष्टि तथा हृदय में सबके लिए सद्भावना हमें भक्ति योग की ऊँचे स्तर पर पहुंचा देता है, जिसका मतलब है शाश्वत भक्ति योग द्वारा राम तत्व से मिलन। इस अवस्था में शायद हम राम से मिलते हैं और उसकी इच्छा शक्ति बन जाते हैं और दिव्यता इतनी प्रभावशाली होती होगी की हमारा हृदय ये बोल ही दे कि ..... मैं वो हूँ।

राम कृपया हमें भक्ति व निश्चय दान दें।

हे गुरुवरेण आप श्री अपने गुरुत्व में हमारे अंग संग रहिएगा जब हम अपना अस्तित्व भक्ति उपासना द्वारा बना रहे होंगे।

\*\*\*

*Beauty of the mind that does Ram Naam Jaap and it's the beauty of Lord whose name is nectarine sweet. Both are RAM. Both are most adorable for each other. This oneness is the theme of Ram Naam Sadhana.*

जो मन राम नाम का जाप करता है, उसकी सुंदरता और परमेश्वर के नाम का सौंदर्य अत्यधिक मधुमेह जैसे मीठे हैं। दोनों राम हैं। दोनों एक दूसरे के लिए आराध्य हैं। यह एकाकी राम नाम की साधना का आधार है।

\*\*\*

*Sadhak, Sadhana and Siddhi all are Raaaaaaaauuuuuuum.*

साधक , साधना और साधना सर्वस्व Raaaaauuuuuuum

\*\*\*

*Ram Naam simran ki jodi ho har suhag ki. RAM gunjey har maan mey. RAM Bhajey Har Pran mey. PAVANMAYYEE RAMAMAYYEE HO YEH KARWA CHAETH KI JYOTSNA. Raam Raam.*

*Raam is the consciousness or chaitaya bhava that demolishes all the illusions that makes one suffer. Ram is the cosmic Naad-- our eternal ropeway to Mukti.Raaaaauuuuuuum.*

*On this pious day I feel getting the innermost Ram Bhava is ANANDA itself and greatest gift from Raam. Remember Loving Ram can make our every moment every day an auspicious day if we stop nagging and surrender to HIM eternally. RAM is the purest bond of all the lives.*

*Atmik bodh or being conscious of Jeevatman comes with cleansing our karmic content or deeds which is ordained by Ram Naam Jaap. Ram Bhaj Ram Bhaj was celestial command received by Swamiji Maharaj Shree from Param Guru Himself. This must be in our mind always to cruise ahead in naam sadhana.*

राम नाम सिमरन की जोड़ी हो हर सुहाग की। राम गूंजे हर मन में। राम भजे हर प्राण में। पावनमय राममय हो यह करवा चौथ की ज्योत्स्ना। राम राम

राम नाम चेतनता है या चैतन्य भाव है जो सभी भ्रम, जिससे हम कष्ट भोगते हैं , उनको तोड़ डालता है। राम शाश्वत नाद है - हमारा मुक्ति के लिए दिव्य सहारा । राम

आज इस पावन दिन पर मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि गहन राम भाव होना आनन्द ही है, जो कि राम का सबसे बड़ा व अमूल्य उपहार है। प्यारे राम को हर पल स्मरण कीजिये और अपने जीवन का हर क्षण व हर पल को मांगलिक बना डालिये, अगर हम नुक्ताचीनी त्याग कर पूर्ण रूप से परमेश्वर की शरण ले लें। राम हर सजीव संबंध से सबसे पवित्र सम्बन्ध है।

आत्मिक बोध या जीवात्मा की चेतनता राम नाम जाप द्वारा निर्धारित अपने कर्मोंके पवित्रीकरण पर ही संभव है। परम गुरु द्वारा स्वामीजी महाराज श्री को राम भज राम भज का ब्रह्माण्डीय आदेश मिला था। यह हमारे मन में सदा चलता रहना चाहिए , नाम साधना में आगे बढ़ने के लिए।

\*\*\*

*Restless Maan and chaotic Mind are curse. To turn the table one must sincerely make efforts to take refuge in Ram. But doubtless mind is the only path. Have 100% astha so that you find Ram beside you whenever you need Him or Call Him. SUCH LOVING IS OUR RAAAUUUUM.*

बेचैन मन व अराजक मन एक अभिशाप है। उनका रुख बदलने के लिए राम की शरण ले कर ईमानदारी से प्रयास करने होंगे। संशयरहित मन ही केवल हमारा मार्ग है। १००% आस्था रखिये कि जब भी आप राम को पुकारें व आपके संग ही होंगे। ऐसे प्यारे हैं हमारे राम।

\*\*\*

*Mortal wishes are unending so with deeds our sufferings are unending. To douse TOO MUCH OF DESIRES Ram Naam Simran helps and one can realize the chaitanya bhava within. Such is Jadui Ram.*

संसारी इच्छाओं का अंत नहीं , तो हमारे कृत्यों के साथ हमारे कष्टों का भी अंत नहीं। राम नाम सिमरन सहायता करते हैं अध्यधिक कामनाओं को शांत करने के लिए और हम चैतन्य भाव को भीतर अनुभव कर सकते हैं। ऐसे हैं जादुई राम।

\*\*\*

*Trishna or thirst of our senses is so strong that it scripts our deeds through their inherent attributes. Ram Naam jaap and simran can super impose those elements of aberrations or indulgences with pure and pious powered attributes of Ram. Japiye Ram, Aradhiye Ram. RAM Ram Ram*

तृष्णा या इन्द्रियों की प्यास इतनी प्रबल होती है की वह अपने आंतरिक गुणों द्वारा हमारे कृत्यों को ही लिख डालती हैं । राम नाम का जाप और सिमरन इन सब गलत तत्वों व आसक्तियों को राम के पवित्र व पावन गुणों से अध्यारोपण कर सकते हैं। जपिए राम , आराधिये राम। राम राम राम

\*\*\*

*Mind your thought! It's always upto some mischief. Ram Naam jaap guards against these pit falls.*

अपने विचारों को देखिये ! वे सदा किसी शैतानी पर उतारू होते हैं। राम जाप इन भूल चूकों के प्रति रखवाली करता है।

\*\*\*

## **Ram Naam is Nadaupasana**

*The Primordial sound is called Nada. As per ancient treatise, the origin of Nada is described as "soul induces mind. This mind strikes the fire present in the naval portion, soul, mind, fire and air give rise to nada".*

*Again Nada is divided into ahata (that is struck) and anahata which is heard by yogies only.*

*Naad which becomes dhvani or transactional sound begins the journey of Ahata Nada till one reaches Anahata stage. Thus Nadaupasana of Ram Naam has huge philosophy of cosmos which Swamiji Maharaj Shree gifted us as Ram Naam Aradhana.*

## **राम नाम नदोपासना है**

मौलिक ध्वनि नाद कही जाती है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार नाद का मूल ऐसे बताया जाता है " आत्मा मन को प्रेरित करता है। ये मन नाभि में स्थित अग्नि पर प्रहार करता है। आत्मा , मन ,अग्नि और हवा नाद को जन्म देते हैं" ।

नाद को दो भागों में बांटा है : अहत और अनाहत ( ये योगियों द्वारा ही केवल सुनी जाती हैं )

नाद जो ध्वनि या व्यवहारिक ध्वनि बन जाती है उसकी यात्रा अहत नाद से आरम्भ हो कर अनहत तक पूर्ण होती है। राम नाम की नादोपासना में ब्रह्माण्ड का विशाल तत्वज्ञान है जो स्वामीजी महाराज श्री ने हमें उपहार राम नाम आरधना के स्वरूप में दिया है।

\*\*\*

*Vinamara Vak is the identity of Ram Naam Sadhak. If one is otherwise then the person is sadhak not doing sadhana.*

*Even a silent smile of ANANDA BHAVA can vibrate in cosmic sky to allow the shower of Bliss. SUCH IS RAM NAAM SADHANA.*

विनम्र वाक् राम नाम साधक की पहचान है । पर यदि ऐसा नहीं है तब वह व्यक्ति साधक है पर साधना रत नहीं है ।

एक आनन्द भाव की शांत मुस्कान भी ब्रह्माण्ड के आकाश में कंपन उत्पन्न करके आनन्द की वर्षा कर सकती है । ऐसी है राम नाम साधना ।

\*\*\*

*Sound of eternity can be touched with bhavamaye Ram Naam aradhana for Praying and Healing others.*

दिव्यता की ध्वनि को भावनामय राम नाम आराधना द्वारा दूसरों के लिए प्रार्थना व आरोग्यता प्रदान करने हेतु छुआ जा सकता है ।

\*\*\*

*Just lovingly, very lovingly, utter or think Raaaaaaaaaaaaam then you are in the sweetest bond with Raam forever until you merge with Him.*

बस प्रेम से , अति प्रेम से राम उच्चारिए या सोचिए , तब आप सदा के लिए राम के संग सबसे मधुरतम बंधन में बंध जाएँगे जब तक आप उसमें विलीन नहीं होते ।

\*\*\*

*Ram Naad Jaap creates the divine bond with Nirakar Jyoti Swarup Naam Raaaam.*

राम नाद जाप, निराकार ज्योति स्वरूप नाम राम के संग एक दिव्य बंधन की रचना करता है ।

\*\*\*

*Soundscapeing a mind of Ram Naam Sadhak would sound Raaaaaaaaaaaauuuuuuuuuuuuuuuuuum  
That  
HEALS  
PRAYS  
and does  
SADHANA to beget*



NAAD SIDDHI.  
It's Raam Naad Yoga.

राम नाम साधक के मन का यदि ध्वनिदृश्य किया जाए तो वहां राम ही सुनाई दे गा जो

आरोग्यता

प्रार्थना

और

नाद सिद्धी प्राप्त करने के लिए

साधना करता है ।

यह राम नाम योगा है ।

\*\*\*

*Mind the Music we hear! Music can work wonder. As RAM DHUN creates scalling of inner energy and connect to the outer energy. Sound can heal. Again sound of varied frequency can cause anxiety, even with some, mind can get aroused and thinking can become a corrupt one leading to even pervert actions. So please realize the impact of soundscape on our body. Sadhak must be watchful what kind of sound one creates and what they are listening because sound helps sadhana and one can walk towards Naad siddhi.Raaaaaaauuum*

ध्यान से देखिये कि हम कैसा संगीत सुनते हैं ! राम धुन भीतर ऊर्जा की रचना करती है और बाह्य शक्ति से जोड़ देती है। ध्वनि अरोग्यता प्रदान करती है। विभिन्न आवृत्ति की ध्वनि चिंता ला सकती है ,कुछ के साथ मन संदीप्त हो सकता है , विचार धरा भ्रष्ट हो सकती है जिससे विकृत कृत्य भी किये जा सकते हैं। ध्वनि का प्रभाव अपने शरीर पर अनुभव कीजियेगा। साधक को बहुत सतर्क रहना चाहिए कि कौन सी ध्वनि वे रचना कर रहे हैं और वे क्या सुन रहे हैं क्योंकि ध्वनि साधना में सहायक होती है और हम उससे नाद सिद्धि की ओर बढ़ सकते हैं। राम

\*\*\*

*Ram Naam upasana demands our Dhairya or patience and perseverance to constantly do Ram Naam Sadhana. Because life is all about bhog or experiencing good and bad of life. But Ram*

*Sadhana is to take our soul to another level where materialistic things subside and eternity awakens. But DHAIRYA is the pillar of begetting ANANANDA OF RAMAMSYENESS. And remember there should never be a Trust deficit for Ram. Maya does pose a problem of erasing Vishwas at the time we suffer. But suffering of Body is different and elevating the soul by constant awakening is different. RAM NAAM SADHANA NEEDS YOUR AASTHA AND VISHWAAS. RAM NAAM SIDDHI IS JUST A MATTER OF PERSEVERANCE AND PATIENCE. RAaaaaaauuuuUUmmmm*

राम नाम उपासना हम से सतत राम नाम साधना करने के लिए धैर्य व सहनशीलता की अपेक्षा करती है। जीवन केवल भोगने के नाम है: बुरे कर्म या अच्छे कर्म। पर राम नाम साधना तो हमारी आत्मा को अलग ही स्तर तक ले जाती है जहाँ भौतिक वस्तुओं का अस्तित्व ही नहीं रहता और शाश्वता जागृत होती है। पर धैर्य एक बहुत महत्वपूर्ण स्तम्भ है राममय आनन्द को पाने का। पर स्मरण रहे कि राम पर कभी भूल कर भी संशय नहीं करना। अपने विषम समय में माया ज़रूर विश्वास को मिटाने का कार्य करेगी पर शरीर का कष्ट सहना कुछ और है और आत्मा का उत्थान कुछ और। राम नाम साधना को आपके विश्वास व धैर्य की आवश्यकता है। राम

\*\*\*

*Nishtha, Shraddha, Bhakti, Satyata (truthfulness), archna, guru eshta bhav evam agyakari, binamra bhakti, sewa bhav, madhur vachan, shistachar, sahanshilata, sneha bhava, suchita are some of the prerequisites for progress in RAM NAAM ARADHAN. Maharshi told that all these above one gets through constant Ram Naam Simran and filling the body mind and soul with billions of Ram Naam jaap. Such is Guru Kripa and Ram Kripa of Ram naam bhav aradhana.*

निष्ठा, श्रद्धा, भक्ति, सत्यता, अर्चना, गुरु इष्ट भाव एवं आज्ञाकारी, विनम्र भक्ति, सेवा भाव, मधुर वचन, शिष्टाचार, सहनशीलता, स्नेह भाव, सुचिता राम नाम आराधन में प्रगति के लिए ये कुछ पूर्व अपेक्षित चिन्ह हैं, महर्षि ने कहा कि यह सब एक साधक को सतत राम नाम सिमरन द्वारा प्राप्त होते हैं तथा अपने शरीर मन व आत्मा को खरबों राम नाम के जाप द्वारा भरने से। ऐसी राम नाम भाव आराधना ही गुरु कृपा है और राम कृपा है।

\*\*\*

*Ram Naam is Bhav Aradhana. Devi Bhakti presides in this Bhakti Yoga. This brings the Universal Oneness of KQ or Knowledge Quotient that can transcend time and space which finally allows sadhak to experience subtle existence of Guru Tattwa and Ram Tattwa which happen through divine encounters. Ram Naam Sadhak do experience divinity through Bhav Aradhana. What a gift you gave us hey Swamiji Maharaj Shree. What a Sahaj Yog is this Ram Naam Aradhana. HAR*

ROOP MEY TUM AUR TUM NIRAKAR! JAI HO PARAM GURU JAI HO!  
Raaaaaaaaaauuummmmmmmmmmm

राम नाम भाव आराधना है। देवी भक्ति इस भक्ति योग में अध्यक्षता करती है। यह एक सार्वभौमिक ज्ञान की एकता का अतिक्रमण करता है जो समय व क्षेत्र को पार करता है और अन्तः साधक को सूक्ष्म स्तर पर गुरु तत्व और राम तत्व का अनुभव करवाता है जो कि दिव्य अनुभूतियों से संभव होता है। राम नाम साधक दिव्यता को भाव आराधना के माध्यम से अनुभव करते हैं। हे स्वामीजी महाराजजी आप श्री ने हमें ये कैसा अद्भुत उपहार दे दिया है। राम नाम आराधना कैसा सहज योग है। हर रूप में तुम और केवल तुम निराकार !! जय हो परम गुरु जय हो !!! राम

\*\*\*

*Ram Naam Bhakti itself is SHAKTI ARADHANA. Once Maharishi told me that those who worship Ram as Maa beget divine grace quicker. Thus in BHAKTI the SHAKTI resides.*

राम नाम भक्ति स्वयं ही शक्ति आराधना है। एक बार महर्षि ने मुझे बताया कि जो राम को माँ के रूप में मानते हैं उन्हें कृपा शीघ्र प्राप्त होती है। इसलिए भक्ति में शक्ति की निवास है।

\*\*\*

*Ram Naam Aradhana has a pure foundation which is Bhakti Bhava or huge energy resource of eternal love. This makes us selfless being and we can pray for others with our divine content of our heart and be a participating partner in Divine Healing by Ram Naam. This is unfathomable divine empowerment given to all of us by our Sadguru Shree Shree Swamiji Maharaj Shree. This is akaran kripa for soul like me. Such a grace you shower hey Guruvareshu....atmik pranam.*

राम नाम आराधना की पवित्र नींव है भक्ति भाव या शाश्वत प्रेम शक्ति स्वरूप का अथाह भंडार। यह हमें निस्वार्थ बना देता है और हम दूसरों के लिए हृदय खोल कर प्रार्थना कर सकते हैं और राम नाम द्वारा दिव्य अरोग्यता में साथी बन सकते हैं। इस असीम शक्ति से हम सब को हमारे सतगुरु श्री श्री स्वामी जी महाराज जी ने सशक्त किया है। यह अकारण कृपा है मुझ जैसी आत्मा के लिए। ऐसी कृपा आप बरसाते हैं हे गुरुवरेशु .... आत्मिक प्रणाम

\*\*\*

### ***What we should ask for ourselves from RAM!***

*Well, our Gurujans have told us to seek only BHAKTI from Shree Ram.*

SHREE RAM SHARNAM, NEW DELHI [WWW.SHREERAMSHARNAM.ORG](http://WWW.SHREERAMSHARNAM.ORG) | [WWW.IBIBLIO.ORG/RAM/](http://WWW.IBIBLIO.ORG/RAM/)

*When we get Bhakti then Shraddha automatically comes. The trust becomes deeper and deeper then descends Ram Kripa. This Ram Kripa allows us to experience Guru Kripa and bliss or Ananda thereof or Ramamayeness. This Bhakti is not just aradhana but Aradhya too. Bhakti it self is Devi Shakti. She erases doubts; she gives patience and perseverance; she makes one realize that there is no difference of upasak and eshta and she blesses us to be selfless and sattvik being. Without invoking Bhakti even Guru Taatwa illudes. Thus Bhakti Bhava is the greatest Ram Kripa for Ram Naam Sadhak.*

## हमें राम से अपने लिए क्या माँगना चाहिए ?

हमारे गुरुजनों ने हमें निर्देश दिया है कि हमें श्री राम से केवल भक्ति माँगनी चाहिए ।

जब हमें भक्ति मिलती है तो श्रद्धा अपने आप आ जाती है। विश्वास और गहरा होता चला जाता है और तब राम कृपा अवतरित होती है। यह राम कृपा हमें गुरु कृपा का अनुभव करवाती है और राममय भाव का आनन्द भी प्रदान करती है।

भक्ति केवल आराधना ही नहीं बल्कि आराध्य भी है। भक्ति स्वयं देवी शक्ति हैं । वे संशय धो डालती हैं, धैर्य व सहनशीलता प्रदान करती हैं, वे यह अनुभव करवाती हैं कि उपासक व इष्ट देव में कोई अंतर नहीं; और हम पर कृपा बरसाती हैं ताकि हम सात्विक व निःस्वार्थ रहें। बिना भक्ति के तो गुरुत्व भी नहीं मिलते। इसलिए भक्ति भाव सबसे उच्च राम कृपा है राम नाम के साधक के लिए ।

\*\*\*

## ***Some thoughts on Navaratra Maun Sadhana of Jhabua***

*At the culmination of Navaratra Maun Sadhana at Jhabua. SADHAKs cried like children as it was departure time yet sharing divine revelations and experiences they could not control their emotions. Many people witnessed All the Three Gurus as people prayed to Swamiji Maharajji that Pujya Premji Maharaj Shree and Maharshi Swami Dr Vishwa mitterji Maharaj Shree should be always around this sacred space. Yes Jhabua is surely Kashi for Ram Naam Sadhak.*

*One senior sadhak from Punjab almost in tears tried to explain that Gurujans were there all through be in akhand jaap or in maun. On Seventh night sudden lightening storm and rain around 8.50 for one hour was actually shree avataram of Premji Maharaj Shree (2nd Oct). It was huge turmoil yet it provided the sublime level jaap for all. Sharmaji said when turmoil was on he*

*felt on the lap of Maharishi who is consoling as nothing will happen. Mahan atman ko jab ahovan kiya jata hai aisa hi hota hai!*

*Another revered lady from Punjab expressed she got bouts of jerks in her spinal chord for at least four times as if it happens in kundulini jagaran.it was bliss. They encountered Gurujan had many alauki experence such life changing episode people experinced. Jitenderji said that all the 1.42 lakh jhabua sadhak should pray one mala for babu's health as impossible is being done here by Babu as Anandji Remains at the feet of gurujans.*

*Jai Jai Ram*

## झाबुआ की नवरात्र मौन साधना पर कुछ विचार

झाबुआ के नवरात्र मौन साधना के समापन पर साधक बच्चों की तरह बिलख बिलख कर रोये पर साथ ही दिव्य अनुभूतियाँ बांटते हुए अपनी भावनाओं के प्रवाह में बहते जा रहे थे। बहुत से साधकों ने तीनों गुरुजनों के दर्शन पाये और प्रार्थना की स्वामीजी महाराजजी से कि पूज्य प्रेमजी महाराज श्री व महर्षि डॉ विश्वमित्र जी महाराजजी कृपया सदा सदा इस पावन स्थली पर विराजित रहे। जी , झाबुआ राम नाम साधकों की काशी ही है।

पंजाब से एक वरिष्ठ साधक ने डबडबाती आखों के साथ बताया कि गुरुजन पूर्ण रूप से वहां थे चाहे अखंड जाप हो या मौन। सातवें दिन Oct 2 , जो परम पूज्य प्रेम जी महाराज श्री का अवतरण दिवस था , अचानक बिजली के कौंधने पर व तूफान व बारिश के आने से लग भाग १ घण्टा 8. 50 के आस पास , खलबली मची तो थी पर तब भी एक दिव्य स्तर जाप का सबके लिए बना रहा। शर्मा जी के कहा की जब तूफान ज़ोर पर था उन्होंने स्वयं को महर्षि की गोद में पाया जो की मानो आश्वासन दे रहे हो की कुछ नहीं होगा। महान आत्माओं को जब आहवाहन किया जाता है तो ऐसा ही होता है!

एक और आदरणीय साधिका पंजाब से बोली की उन्हें कम से कम चार बार रीड ही हड्डी में ज़ोर की झटके लगे जैसे की कुण्डलिनी जागरण के समय होता है। वहां पूर्ण आनंद था। साधकों ने गुरुजनो के संग जीवन को बदल देने वाले अलौकिक प्रसंग अनुभव किये। जीतेन्द्र जी बोले कि झाबुआ के 1. 42 लाख साधकों को एक माला रोज़ बापू के स्वास्थ्य सम्बन्धी करनी चाहिए क्योंकि वहां नामुमकिन कार्य बापू जी द्वारा किया जा रहा है। पर आनंदजी / बापू सदा सदा गुरुजों के ही श्री चरणों में नतमस्तक।

जय जय राम

\*\*\*

*At the time of my mortal departure no relation will matter as with me all will get fade away.  
Then the only jyot or Light will be Raaaauum with whom we will travel beyond. Swamiji  
Maharaj Shree gave this immortal gift.*

अपने भौतिक जीवन को छोड़ते समय, कोई रिश्ता नहीं मायने रखेगा क्योंकि मेरे साथ सबकुछ भी धुँधला पड़ जाएगा। तब केवल राम नाम की ज्योति के संग ही आगे यात्रा करनी होगी। स्वामी जी महाराज श्री ने हमें यह अनश्वर उपहार दिया है।

\*\*\*

*Ram is sakha of life beyond.  
He is the eternal Jyot  
He is Nirakar  
Yet He is seated in me  
He only created the asan  
By weaving Ram Naam  
And over that asan He sits  
As bhava murti of  
Nirakar Raam.  
Such loving is My Bhava Hey Raam.*

राम इस जीवन के भी पार के सखा हैं

वे दिव्य ज्योति हैं

वे निराकार हैं

पर वे मेरे भीतर विराजमान हैं

उन्होंने ही स्वयं राम नाम की

बुनाई का अपना आसन रचा

और उस आसन पर वे स्वयं ही विराजमान हैं

निराकार राम की भाव मूर्ति के रूप में।

ऐसे प्यारे हैं मेरे भाव हे राम।

\*\*\*

*Loving Ram is very intensive sadhana. Bhav aradhana with huge love for Him can make life simple. Simran of ram naam is not a forced exercise its like singing His name lucidly all the time and yet doing all the work. Ram Naam ka rishna bhav upasana hai.*

राम से प्रेम अत्यंत गहन साधना है। यदि उससे भाव आराधना द्वारा गाढ़ प्रेम किया जाये जिंदगी आसान बनाई जा सकती है। राम नाम का सिमरन कोई ज़बरदस्ती का कार्य नहीं है जैसे उसका पावन नाम हर समय काम करते हुए गा गा कर लेना। राम नाम का रोम रोम में रिसना भाव उपासना है।

\*\*\*

*Ram discriminates none. If one takes refuge in HIM He pardons even murderers. I have seen people who escaped gallows by sheer intensive Ram Naam Sadhana. So Beget this Ram Kripa and attend Salvation . RAM is most merciful.*

राम किसी से पक्षपात नहीं करते। यदि कोई भी उनकी चरण शरण में जाए तो वे हत्यारों तक को भी क्षमा कर देते हैं। मैंने ऐसे लोग देखे हैं जो केवल गहन राम नाम साधना के बल से फाँसी के तख्ते से बच निकले। ऐसी राम कृपा को पाइए। राम अत्यंत क्षमावान हैं।

\*\*\*

*Ram Naam be only pulse that must run through my nerve rest is Maya.*

राम नाम ही वह स्पंदन हो जो मेरी नस से गुज़रे। बाकि सब तो माया है।

\*\*\*

*There is only one RELATION that will never question you; that will not create a guilt in you; that will not ask for special attention or seek something in return. Its RAAAM.*

केवल एक ही रिश्ता है जो आपसे कभी प्रश्न नहीं करेगा; कभी आप में दोष भावना नहीं उत्पन्न करेगा; न ही आपसे खास ध्यान अपनी ओर केंद्रित करने की इच्छा करेगा या कुछ बदलें में चाहने की अपेक्षा करेगा; वे हैं राम ।

\*\*\*

### **SEARCHING RAAUM IN SUNYA!**

*There are times  
Mind not in its place  
Heart beckons in Viraha  
Sadguru is longed and deep desire  
gets awakened to merege with Ram.*

*World is felt as if 'nothing'  
Self swimming in Nothingness.  
Body sounds like cage faltering  
yet innerself is fluttering its wings  
though in captivity.*

*This is the sunya of self  
Never treat it as moment of  
Depression or  
incident of frustration.  
Here is an opportunity  
To encounter Raam.  
A new meaning dawns  
beyond body.  
Swim in the the thought light of  
Sadguru  
Remember Swamiji Maharaji  
who toiled within givens of small  
Fathomed philosophies after  
Philosophies  
be those were of oneness of  
Jain philosophy or Arya  
Adwita.  
Yet He encountered these bouts  
Of Sunya and finally  
Divine Descended.  
Nirarkar Jyoti Swarup Raam.  
Thus he spelt out  
Ram is just in you*



*Electrifying that divine connect  
was Ram Naam Simran.  
In Sunya state  
nothing we like  
that is the time  
to cry and cry before Paramatman  
Ram Naam simran of huge intensity  
Illuminates the inner self.  
Loneliness and aloofness  
are filled with attributes of Raam.*

*In this Sunya we realize  
this eternal proximity of  
Ramamayeness.  
Here Ram looks for our  
Bhavamaye worship.  
He wants us alone with Him  
Away from mundane.  
He fills the Sunya  
Sometime with commandments;  
At times corrects us as we repent;  
Also he nurtures your atman  
To remind of the journey beyond  
The being called self;  
Again He guides us to be creative  
And play the role of innovator  
In this world  
Well He does this lila  
To lift our soul.  
He appears in Sunya  
as power of Bhakti  
As a pure divine love  
which we then spread all around  
as divine well wishing  
and other call it Akaran Pyar.  
Ram in Sunya  
its like on lotus recoils  
Sadgurus' life and times  
His words and wisdom that  
Flowers for the beautiful aroma  
Of Ram Naam Sadhana and siddhi.*

*Sunya or void when you find next  
Try to cspitalize it as divine space*

*Talk and encounter with Ramm  
Try to refueal with the power of divinity  
To travel many lives with solace.*

*Sunya is the first space  
Our body can encounter  
Raaaaaaaaaaaauuuummm.  
Jai Jai Raum.*

## **शून्य में राम की खोज**

ऐसा समय आता है जब मन अपने आप में नहीं होता

हृदय में विरह छा जाता है

राम में विलीन होने के लिए

सद्गुरु को पाने की गहरी चाह

और गहरी तड़प जाग उठती है।

संसार ऐसा प्रतीत होता है की वह कुछ नहीं है

स्वयं शून्यता में तैरता है

शरीर एक पिंजरे के समान लगता है

और अंतरमन ऐसे तड़पता है की जैसे की कैद कर रखा हो

इसे स्वयं का शून्य कहते हैं

कभी भी इसे निराशा नहीं समझना

या निराशा की कोई घटना।

यह एक सुअवसर है राम से मिलने का।

शरीर के पार एक नए पड़ाव की भोर हुई है ।  
सद्गुरु की मानस सोच के प्रकाश में तैरिए  
स्वामीजी महाराजजी का स्मरण कीजिये  
जिन्हीने इतनी जी तोड़ मेहनत की  
कितने विभिन्न दर्शनशास्त्रो को गहराई से जानने के लिए  
चाहे वह जैन दर्शनशास्त्र हो या आर्य अद्वैत  
फिर भी उन्होंने इस शून्य का मुकाबला किया और अन्तः  
परमेश्वर उतरे निराकार ज्योति स्वरूप राम के रूप में  
फिर उन्होंने कहा की राम तो आप में ही हैं  
और दिव्यता को जोड़ने का कार्य करता है राम नाम सिमरन।  
शून्य में कुछ नहीं भाता  
और यही वह समय है जब हम  
परमेश्वर के समक्ष खूब रो सकते हैं।  
अत्यंत गहन भाव का राम नाम सिमरन  
अंतर मन को प्रकाशित कर देता है।  
अकेलापन व अलगाव राम के गुणों से भर जाते हैं।  
इस शून्य में हम राममय भाव के बहरी सामीप्य  
को अनुभव करते हैं।  
राम इस समय हमारी भावमय प्रार्थना का इंतज़ार करते हैं

वे इस पल हमें सांसारिक तत्वओ से दूर  
अकेला ही अपने संग पसंद करते हैं  
वे इस शून्य को कभी निर्देशों से भर देते हैं  
कभी हमें सुधारते हैं अगर हम पश्चाताप करें;  
वे हमारी आत्मा को भी पोषित करते हैं ताकि हमें  
अपनी अनंत की यात्रा का स्मरण रहे;  
वे हमें रचात्मक होने का पथप्रदर्शन करते हैं  
और इस संसार में एक प्रवर्तक की  
भूमिका निभाने के लिए प्रेरणा देते हैं।  
वे यह सारी लीला केवल हमारी आत्मा के उत्थान हेतु करते हैं।  
वे शून्य के रूप में प्रकट होकर  
भक्ति की शक्ति बनते हैं  
और पवित्र दिव्य प्रेम के रूप में आते हैं  
जिसे हम फिर हर तरफ फैलाते हैं  
उस दिव्य सद्भावना के रूप में  
जिसे दूसरे अकारण प्यार के नाम से भी जानते हैं  
शून्य में राम नाम इस तरह से होता है जैसे  
कमल पर सद्गुरु जनों की जीवन शैली  
एक सुन्दर व मीठी सुगंध के साथ उनके शब्द व ज्ञान

राम नाम साधना व सिद्धि को खिला देते हैं।  
जब अगली बार आप शून्य को अनुभव करें तो  
उसे दिव्य क्षेत्र समझें  
उस क्षेत्र में राम से मिलें व वार्तालाप करें  
दिव्यता के ईंधन से परिपूर्ण करिये  
जिससे अनंत जीवन की शान्ति में यात्रा कर सकें।  
शून्य एक पहला क्षेत्र है जो  
हमारा शरीर अनुभव करता है  
जय जय राम

\*\*\*

*Ram Naad and Naam sadhak imbibes the divine attribute which search for bridges everywhere than looking for gaps. Ram Naam is Universal Bridge in timelessness and spacelessness.*

राम नाद और नाम साधक दिव्य गुण अपनाते हैं जो फ़ैसलों की बजाए हर जगह सेतु ढूँढते हैं । राम नाम समयातीत और क्षेत्र के पार का सार्वभौमिक सेतु है ।

\*\*\*

## **ANGER MANAGEMENT WITH RAM NAAM**

*Krodh or anger disturbs the melody called inner tranquility. Anger comes when we bottle neck with pent up emotions or unexpressed elements of our sharir tattwa. But Ram Naad can do anger management. From Krodh we are seeking answer now.... RAAAAUUUM..Lets begin....*

*Karma or deeds determine the destiny. Pure n unarmful thinking and actions pave the path for elevation and tranquility.*

*Raudra bhav is only for Shiva margi karma where destruction creates space for construction and creation. Raudra is a sammuaa (sublime) as well...the tranquility of Shivalaye.*

*Openness and self talk allows one to get over negative emotion and make them constructive positive emotion expressed or otherwise.*

*Deliberate ignorance of self wishes do boil up for a blast. Ram Naam allows you to negotiate all your reasonings.*

*Hoping that world will go by your prescripts of "do's and don'ts" create most frustrations. Do guide and advise and then leave it to others for their own call. We all are unique individuals so our aspirations are different so we suffer and all that get expressed with KRODH. If we soak all that emotion with Ram Naam then we can surely act with our own unique anger management of spiritual kind.*

*Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuuuuuum.*

## राम नाम के साथ क्रोध प्रबंधन

क्रोध या गुस्सा भीतर की मधुर शांति को भंग कर देता है। जब हमने अपनी भावनाओं या शरीर के अव्यक्त तत्वों के प्रवाह को जबरदस्ती दबा कर रखा हो क्रोध आता है। पर राम नाम क्रोध प्रबंधन कर सकता है। अब हम क्रोध से ही उत्तर मांगेंगे।

राम .... चलिए शुरू करें .....

कर्म या कृत्य नियति निर्धारित करते हैं। पवित्र एवं शुद्ध विचार व कर्म उभारने व शान्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। रुद्र भाव केवल शिव मार्गी कर्म के लिए है जहाँ विनाश, रचना व निर्माण के लिए क्षेत्र सृजन करता है। रुद्र तो दिव्य भी है..... शिवालय की असीम शान्ति के सामान।

खुलापन और स्वयं से बातचीत नकारात्मक भावनाओं से पार करने में व उन्हें सकारात्मक भावना व्यक्त करने में सक्षम करते हैं।

स्वयं की कामनाओं के प्रति जानबूझ कर अज्ञानता का भाव एक विस्फोट को ही जन्म देता है। राम नाम आपको आपकी विचारधारा से बातचीत करना सिखा देने की अनुमति देता है। यह संसार आपके ही बनाये हुए " करें या न करें " पर अगर नहीं चलता तो वह जीवन की अधिकतर निराशाओं को जन्म देता है। दूसरों को प्रेरणा व दिशा जरूर दिखाइए पर उनका निर्णय उन्हीं को लेने दीजिये। हम सब अद्वितीय प्राणी हैं और हमारी आकांक्षाएं विभिन्न हैं और इसी कारण हम कष्ट भोगते हैं और वह क्रोध के रूप में सामने आता है। अगर हम वह सम्पूर्ण भावना राम नाम में डुबो दें तो हम एक अनूठे आध्यात्मिक तरीके से क्रोध प्रबंधन कर सकेंगे।

\*\*\*

### **SIMRAN Can Bring SAYYAM.**

*My break of dawn came with a word SAYYAM. I asked Raaaum "how one can master Sayyam!" The answer was loud clear and prompt. RAM NAAM SIMRAN. We are very well aware of these two words given to us by Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharajshree. These words then became siddhi shabda as it was uttered by Siddha Purush and Anubhut Gurus. I sit on their feet to know much more of their divine manas beyond these shabda. RAAAAAAAAAAAAUUUUMMMM.*

### **सिमरन संयम ला सकता है**

मेरी सुबह की भोर आज संयम शब्द से हुई। मैंने राम से पूछा " संयम पर विजय कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? " उनका उत्तर बहुत स्पष्ट व तात्कालिक था : राम नाम सिमरन। हम इन दो शब्दों से बहुत अच्छी तरह परिचित हैं जो हमें श्री श्री स्वामीजी सत्यानंदी महाराजश्री द्वारा दिए गए हैं। ये शब्द फिर सिद्ध शब्द बन जाते हैं जब इन्हें सिद्ध पुरुष व अनुभूत गुरुजनों द्वारा उच्चारण किया जाता है। मैं उनके श्री चरणों में बैठ कर उनके दिव्य मानस को जानने का प्रयत्न करता हूँ जो इन शब्दों से पार है। राम

\*\*\*

### **Subconscious and conscious surrender to the Divine Raaaam.**

*Innerself be coated with millions of Ram Ram inner chanting that purifies body. Materialistic lure and lust get sedimented with increased ram naam simran. Ram mantra is Siddhi of Sattwik self. Aradhana of our Manas is Ram Naam simran. It controls the mad Mann or bhava. Nothing is impossible to achieve if we submit and surrender to Nirakar Raaaum.*

And

*Self control both of conscious and subconscious mind becomes easy with Ram naam constant remembrance. Assurance of Ram is received when we take unconditional refuge in Raam. Yielding to mortal Lila and maya as all insects to man do are normal. But human being has control others don't. So becoming victim of wish, desire, lure and lust is our choice. Yieding to Nirakar Raam surely blesses you with Jyot of Sayyam. Then even saint bows to you and Guru*

*Tattwa blesses and Rama Tattwas accepts our Jeevatman. Aatmik suddhi comes with Ram Naam Simran and atmik siddhi comes with ram naam Sayyam. Music of divine is so tranquil and sublime that it never allows a sensual or mortal attribute to get activated within, such is the shield of Ram Naam simran. This is the way of BEGETTING SAYYAM THROUGH SIMRAN OF RAM NAAM.*

Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuummm

## दिव्य राम को चेतन और अचेतन समर्पण

अंतरात्मा करोड़ों राम नाम के जप से जब ओत प्रोत होता है तब वह देह का पवित्रीकरण कर देता है । अत्यधिक राम नाम सिमरन के द्वारा सांसारिक लालसाएँ और काम नीचे बैठ जाते हैं । राम मंत्र सात्विक आत्मा की सिद्धि है । हमारी मानस की आराधना राम नाम सिमरन है । वह पागल मन या भाव को नियंत्रित कर देती है । यदि हम निराकार राम को समर्पण कर दें तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है ।

और

चेतन व अचेतन मन का संयम सतत राम नाम के स्मरण द्वारा बहुत सुलभ हो जाता है । जब हम अप्रतिबंध रूप से राम की शरण लेते हैं हमें राम का आश्वासन प्राप्त होता है । नश्वर लीला व माया के समक्ष झुक जाना बाकि कीट किटानुओं के भाँति मनुष्य के लिए सामान्य है । पर मनुष्य के पास नियंत्रण है जो औरों के पास नहीं । इसलिए इच्छों , लालसा, काम के वशीभूत हो जाना हमारे ही वश में है । निराकार राम पर समर्पण हमें संयम की जोत का आशीर्वाद देता है । तब संत भी आपके समक्ष झुकते हैं , गुरु तत्व आशीर्वाद देते हैं और राम तत्व हमारे जीवात्मन् को स्वीकार कर लेते हैं । आत्मिक शुद्धि राम नाम सिमरन द्वारा आती है और आत्मिक सिद्धि राम नाम संयम द्वारा । दिव्य संगीत इतना मधुर है कि वह कभी भी काम या नश्वर गुणों को भीतर जागृत नहीं होने देता, राम नाम सिमरन ऐसा कवच है । इस तरह संयम को राम नाम सिमरन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है ।

\*\*\*

**THIS NAVARARTA 45 crores and 21 lakh RAM NAAM Jaap at Jhabua Kshetra.**



*276 Sadhaks did Navaratra Maun Sadhana and Swamiji Maharajji's Ram Durbar was showered by divine bliss as Ananda got embeded in the mind of all. It was bliss and Satchitananda. It was discovery and reinvention and experiencing gurus in subtle divinity and Virat rupa of Nirakar Raam.*

*Anandji or Bapu quipped that he almost forgot his name for eight days. He wanted to look at himself so he prayed for a vision and spiritual eye. Again to look at self he asked for aina or looking mirror from Parmatnan. Then he said just Aina was not enough so he sought for the light the divine light to see at himself. Yet there was a veil between self and aina. So he wished that be removed by Shree Raam. The veil shook and saw the virat rup of self, nay of Parmatman and self got sized so was divine vision and objectivity dawned and eternal chord was touched. Well these were methods Bapuji employed to know the self. Yes everyone was searching Raam in self and seen in other. Its just in short, fozen bliss fathomed for now, about the impact of Maun Sadhana. GURUJANS BLESS RAM NAAM SADHAK ALL THE TIME. Jai Jai Ram*

## **इस नवरात्र 45 crores and 21 lakh राम नाम का जाप झाबुआ क्षेत्र में हुआ।**

276 साधकों ने नवरात्री मौन साधना में भाग लिया और पूज्य स्वामीजी महाराज श्री का राम दरबार दिव्य कृपा की बरसात में भीगा जैसे ही आनंद सभी साधकों के मन में रस गया। वह आनंद और सच्चिदानंद था। वह एक खोज थी तथा फिर से एक नयापन लाया गया जब गुरुजनों को सूक्ष्म दिव्यता और निराकार राम के विराट रूप में अनुभव किया गया।

आनंदी जी अर्थात बापू बोले की वे अपना नाम ही आठ दिनों में भूल से गए। वे अपने आप को देखना चाहते थे तो उन्होंने एक दिव्य झलक व आध्यात्मिक दृष्टि के लिए प्रार्थना की। दुबारा अपने आप को देखने के लिए उन्होंने परमात्मा से एक आइने की प्रार्थना की। फिर उन्होंने कहा की आईना काफी नहीं है तो उन्होंने अपने आप को देखने के लिए प्रकाश, दिव्य प्रकाश की प्रार्थना की। अभी भी एक परदा सा था स्वयं में और आइने में। उन्होंने श्री राम से इस परदे के हटने की प्रार्थना की। परदा हिला और उन्होंने अपने स्वयं का विराट रूप देखा, नहीं परमात्मा का देखा और स्वयं का आकार बड़ा हुआ, वैसे ही दिव्य दृष्टि बड़ी, निष्पक्षता का उदय हुआ और शाश्वत तार को उन्होंने छू लिया।

ये सभी उपकरण बापूजी ने अपनाये अपने आप को जानने के लिए। जी हाँ, सभी राम को अपने स्वयं में और दूसरों में भी खोज रहे थे। मौन साधना के प्रभाव के विषय में ये एक छोटा सा स्तंभित आनंद गहराई से अभी समझा गया। गुरुजनों की कृपा राम नाम के साधकों पर हर समय बरसती रहती है।

जय जय राम

\*\*\*

## ***Elevating the Self with RAM Naam Sadhana***

*Today Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitterji Maharajji organized Dhyan Baithak.*

*He asked all to bow before Param Guru by bending heads and do naman before Eshta and then asked all to sit in Dhyanshan with closed eyes. He asked all to contemplate on third eye or bhrikuti. Maharishi advised all to be soft as one looks at third eye as stress will give headache! Then enhancing the journey of third eye dhyan mudra Maharishi announced whosoever seeing some thing this should be noted that they are progressing well and this is the starter but much odds to be encountered in future. So no contentment at this,continue Meditation and spiritual elevation with Ram Naam Sadhana.*

*He said in spiritual journey all should be ready to encounter two worst enemies of Sadhana----- EGO or ABHIMAN then KAMAKSHIK Or Kama meaning sexuality. Maharishi declared these are two worst enemies one should beware of.*

*It's like a pitcher whoes base has been perforated by Kama, krodha, lobha, Ersha etc. So whatever one pours meaning Guru Tattwa or your guna both goes out in waste and one is left with avagun only. Such is the effect of Kama Karma. It destroys character; it drains out your sattvik guna and even bliss of Raam. Thus Maharish urged all to be "Supatra" and "Punya Patra" for spiritual elevation as sexuality remains the spoil sport.*

*On the score of abhiman or ego Maharishi narrated a story. There was an earthen pitcher filled with water and top of it there is a small earthen cover. They stayed together for years. Once the cover patra said to earthen pitcher' O pitcher you give all water and you quench their thirst but I am left high and dry for years though I am so near to you'. Then pitcher smiled and said "O Sister you are sitting atop me. And other come and bends before me and fills their belly with water. Because nothing is mine its for all who can bow and bend they easily have water and you are sitting over me how can you drink water as you are not intetested to bow.. '.*

*Thus Maharishi said ' jisko jhukna nai ata usko kuch nai milta'. Further he said doing shastang pranam before Param Guru Ram and Guru brings ashirvad or bliss as one need not to seek or ask anything from them as on seeing your submission they bless you automatically.Jai jai Ram Raaaaaaauuuuum*

## राम नाम साधना द्वारा आत्मा का उत्थान

आज महर्षि स्वामीजी डॉ विश्वामित्रजीने ध्यान बैठक का आयोजन किया ।

उन्होंने हम सब को परम गुरु के समक्ष सिर झुकाकर अपने ईष्ट को नमस्कार करने को कहा और आँखें बंद करके ध्यानासन में बैठने को कहा । उन्होंने हमें तीसरे नेत्र या भृकुटि पर मनन करने को कहा । महर्षि ने हमें कोमल होने के लिए कहा क्योंकि तीसरे नेत्र पर गहन रूप से देखना तनाव के साथ सिर दर्द भी ला सकता है । इसी यात्रा को आगे बढ़ाते हुए महर्षि ने कहा कि जो कुछ भी अगर दिखता है तो उसे देखिए , इससे प्रगति का पता चलेगा और यह आरम्भ ही है पर भविष्य में विभिन्न परिस्थितियों का सामना पड़ सकता है । इसलिए यहाँ कोई संतोष नहीं , राम नाम साधना से ध्यान व आध्यात्मिक उत्थान बढ़ाते जाइए ।

उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक यात्रा के दौरान सभी को २ साधना के दुश्मनों का सामना करना पड़ सकता है ...

अभिमान और काम

महर्षि ने कहा कि यह दो निकृष्टम दुश्मन हैं जिससे हमें बचे रहना चाहिए ।

यह एक मिट्टी के घड़े के समान है जिसमें काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या इत्यादि से छेद हुए हैं । इसलिए इस में जो भी डाला जाएगा जैसे गुरु तत्व या आपके गुण , वह बरबाद हो जाएगा और हमारे हाथ केवल हमारे अवगुण ही रह जाते हैं । इसी तरह काम कर्म का भी यही प्रभाव है । वह चरित्र को नष्ट कर देता है और सात्विक गुणों व राम के आनन्द को भी बहा डालता है । इसलिए महर्षि ने सभी को " सुपात्र" और "पुण्य पात्र" बनने को कहा ; काम वासना आध्यात्मिक उन्नति में बहुत बड़ी बाधा रहती है ।

अभिमान को मध्यनजर रखते हुए महर्षि ने एक कहानी सुनाई । एक मिट्टी का घड़ा था और उसके ऊपर उसका मिट्टी का ढक्कन । वे एक साथ कितने ही वर्ष रहे ।

एक दिन माटी के ढक्कन ने घड़े से पूछा ' ओ घड़े तुम सब को पानी देते हो व सब की प्यास बुझाते हो पर मैं तो सदा सूखी व प्यासी हूँ कितने ही वर्षों से , जबकि कितनी ही निकट हूँ तुम्हारे । घड़ा मुस्कराया और बोला " ओ बहना तुम मेरे ऊपर बैठी हो । दूसरे जब मेरे पास आते हैं वे झुकते हैं और पानी पीकर प्यास बुझाते हैं । मेरा तो कुछ भी नहीं है पर जो भी झुकना जानता है उन्हें पानी आसानी से प्राप्त हो जाता है और तुम तो मेरे ऊपर बैठी हो , कैसे पानी पी सकती हो, तुम्हें तो झुकने में दिलचस्पी नहीं....'

इसलिए महर्षि ने कहा ' कि जिसको झुकना नहीं आता उसको कुछ नहीं मिलता' और उन्होंने कहा कि परम गुरु राम व गुरु के समक्ष साष्टांग प्रणाम से आशीर्वाद व आनन्द प्राप्त होता है क्योंकि फिर उनसे न ही कुछ कहने को रह जाता है क्योंकि आपका समर्पण देखकर वे स्वयमेव ही कृपा बरसा देते हैं । जय जय राम

राम

\*\*\*

### ***What is Karma Hey Raam?***

*O my Raaaum  
O my Gururuvareshu  
Hey Param Guru  
Atmik karavandana ebam Pranam*

*Teach me about our field of Karma  
Tell me how do I mend my Deeds  
O My Raaum.*

*We know what we are reaping today  
Are those of our past Karma  
Or the seed we Sow.  
Karmic cycle terrify us  
Hey Param Guru  
Teach us now how do I elevate  
Hey Gurudev do enlighten us.*

*"Hey vatsa  
Shree Amritvani has all the answers  
It's your Veda  
O Ram Naam Sadhak.*

*Ram Naam can elevate, cure,  
Purify And even can rescue those  
Who are fallen....  
Such is the glory of Ram Naam.*

*Hey Vatsa  
What you do physically is not all  
Of your karma.  
What your soul works  
At avachetan or subconscious mind  
Also sparks karma.*

*Your thoughts and thinking pattern is  
Your karma.*

*Your mental association with others is  
Your karma.*

*Your imaginary wishes and emission of  
mental vibration is your Karma.*

*Your hidden desires and unethical thinking  
Are your karma.*

*Your swadhay and paath is your karma.  
Your meditation, jaap and tapasya is  
Your karma.*

*All you wish for others good or bad is  
Your karma.*

*All that you utter as soliloquy is  
Your karma*

*All you utter that directs towards  
Prakriti or Nature is your Karma.*

*All your social utterance and interactions  
are your Karma.*

*All the senses, sensibilities and sensuality both at dream or thinking and actions thereof are  
karma.*

*All your intentions and aspirations are your  
Karma*

*All that you take vow or kasam you fulfill them or violate them is your karma*

*All your physical social actions are karma*

*All your physical and mental actions with spiritualism is karma.*

*Then there are many layers of atomic actions  
that with body happens or  
gets activated even in subtle form  
are also actions or karma and deeds.*

*Thus Ram Bhava  
If nestled in self can mend all the karma  
Hey Vatsya.*

*Ram Naam is dynamic code  
of divine  
Its Naad brahmand  
For elevation and purifications.  
But being aware of scores of field  
of karma of conscious and subconscious levels are begetting Ram Tattwa.  
Ramamayeness or eternal consciousness  
Is Ram Chaitnya Bhava  
which final rescue and resort for all the deeds.*

*Keep Raam Tattwa within for your karmic journey  
much of pitfalls can be avoided by  
RAMAMAYE BLISS  
O Vatsa".*

**हे राम ,कर्म क्या हैं ?**

*ओ मेरे राम*

*ओ मेरे गुरुवरेषु*

*हे परम गुरु*

*आत्मिक चरणवंदना एवं प्रणाम*

*ओ मेरे राम*

*कृपया मुझे हमारे कर्म क्षेत्र के बारे में शिक्षा दीजिये*

*मुझे बताइये कि मैं अपने कृत्यों को कैसे सुधारूं ?*

*हमें ज्ञात है कि जो हमें आज मिल रहा है*

*वह सब पिछले कर्मों का फल है*

*या जो बीज हमने बो दिए।*

*कर्मों का चक्र हमें बहुत भयभीत कर देता है*

*हे परम गुरु*

*कृपया बताएं की हम इससे कैसे उभरें*

*हे गुरुदेव कृपया हमें प्रबुद्ध कीजिये*

" हे वत्स

श्री अमृतवाणीमें सभी उत्तर हैं

वह आपका वेद हैं, ओ राम नाम के साधक!

राम नाम हमें उभारता हैं, इलाज करता है,

पवित्र करता है और उनकी भी रक्षा करता है

जो गिरे हुए हैं.....

ऐसी महिमा है राम नाम की।

हे वत्स

जो तुम शारीरिक रूप से करते हो

वे ही केवल तुम्हारे कर्म नहीं हैं

जो तुम्हारी आत्मा कार्य करती है

अवचेतन मन से वो भी कर्मों को जन्म दे देती है।

आपके विचार व सोचने की क्रिया आपके कर्म हैं।

आपके दूसरों के साथ मानसिक सम्बन्ध आपके कर्म हैं।

आपकी काल्पनिक इच्छाएं और

मानसिक कम्पन का उत्सर्जन भी आपके कर्म हैं।

आपकी सुप्त कामनाएं व अनैतिक सोच आपके कर्म हैं।

आपका स्वाध्याय और पाठ आपका कर्म है।

आपका ध्यान, जाप और तपस्या आपके कर्म है।

आपकी दूसरों के प्रति भावनाएं अच्छी या बुरी भी आपके कर्म हैं।

आप जो भी आत्मभाषण करते हो वह भी कर्म है।

आप जो भी प्रकृति के प्रति उच्चारते हो वे भी आपका कर्म है।

आपकी सामाजिक सम्बन्ध व बोल चाल सभी आपके कर्म हैं

सभी इन्द्रियां, संवेदनशीलता व काम वासनाएं स्वप्नावस्था

या मानसिक तथा उनके कार्य सभी आपके कर्म हैं।

आपके इरादे व आकांक्षाएं आपके कर्म हैं।

जो भी आप प्रण लेते हैं, पूर्ण करते हैं या तोड़ते हैं सभी आपके कर्म हैं।

आपके भौतिक व समाजिक कृत्य भी कर्म हैं।

आपका अध्यात्म के साथ भौतिक या मानसिक कार्य भी कर्म है।

आत्मिक कृत्यों की भी अनंत परतें हैं जो जब शरीर के साथ जुड़ती हैं

या सूक्ष्म स्तर पर भी जागरूक हो जाती हैं वे भी कर्म हैं

इसलिए हे वत्स

अगर राम भाव को स्वयं में आश्रय दे दिया जाए

तो वे सभी कर्मों को ठीक कर सकता है।



हे वत्स !

राम नाम दिव्यता का एक गतिशील संकेत है

वह नाद ब्रह्म है

उभारने के लिए व पवित्रीकरण करने के लिए

पर अगर कर्मों के अनंत स्तरों के प्रति चेतन व अवचेतन मन से

जागरूक होंगे तो हम राम तत्व को पा सकते हैं

राममय भाव या शाश्वत चेतनता

राम चैतन्य भाव है

जो कि सभी कृत्यों का अंतिम शरण व रक्षक है।

राम तत्व को अपनी कर्मों की यात्रा के हेतु अपने भीतर बसाइये

राममय आनंद में रह कर काफी भूल चूक से बचा जा सकता है।

\*\*\*

*The only element of our mortal existence can create a close encounter with Divine is our "passionate love" of utterance n mental power of 'self submission' with utmost bhakti for the Divine. This passionate love bridges universal mind which is followed by Ananda or bliss that brings Naad consciousness. So lovingly utter Ram every time to utter raaaaaaaum coated with bhakti makes Ram your dearer. A fast count to reach number at times defeats this bhakti element if we tend to be mechanical in Ram Naam Jaap.*

केवल एक ही तत्व है जो हमें परमेश्वर के संग गहन समीपता प्रदान कर सकता है और वह है मानस शक्ति के द्वारा उच्चारण किया हुआ व परमेश्वर के संग गहन भक्ति समर्पण का " तीव्र प्रेम" । यह तीव्र प्रेम सार्वभौमिक मन के लिए सेतु बन जाता है जिसके पश्चात आनन्द प्राप्त होता है जो कि नाद चेतना को जन्म देता है । इस लिए हर समय प्यार से राम उच्चारिए और जब भी उच्चारें तो भक्ति से ओत प्रोत होकर

क्योंकि इससे आपको राम प्रिय होंगे । तेज गिनती कई बार भक्ति के तत्व को पराजित कर देती है यदि हम मकैनिकल हो कर जाप करें ।

\*\*\*

*The fountain called self within emits LIGHTED SOUND of "Ram Ram" all the time provided our DASHAM DWAR is opened by Guru Kripa or By Guru Tattwa which works beyond time and space. RAAAAAAUUUUUM.*

यदि दशम द्वार गुरु कृपा या गुरु तत्व द्वारा खोला जाए तो भीतर स्थित फ़व्वारा रूपी आत्मा " राम राम " की प्राकाशमय ध्वनि विस्तृत करता है, जो कि समय व क्षेत्र के पार कार्य करता है । "राम".

\*\*\*

*In silence or in sound whenever Raam is uttered keep it in mind it has an utsa or beginning as our cosmos began then Raaaum travels in Madhyam to Urdha and finally it merges in complete silence. If this kind of contemplation is kept on each utterance then Raam will surely show His presence. Such is pure and sublime attribute of Ram Naam Jaap.*

मौन में या ध्वनि में जब भी राम का उच्चारण होता है कृपया ध्यान रखिए कि उसका उत्सा या आरम्भ है उसी तरह जैसे हमारा ब्रह्माण्ड आरम्भ हुआ... फिर राम मध्यम से निकलते हुए ऊर्धा तक जाते हैं और अंततः सम्पूर्ण मौन में विलीन हो जाते हैं । यदि इस तरह का मनन सदा हर उच्चारण पर रखा जाए तब राम अवश्य ही अपनी उपस्थिति दिखाएँगे । ऐसा पवित्र व उदात्त राम जाप का गुण है ।

\*\*\*

*If our utterance of RAAM is spashta and clear as if clean air then that utterance of Jaap can yield great results. Ram Ram*

यदि आपका राम का उच्चारण स्पष्ट है व स्वच्छ हवा की तरह साफ़ तब जाप का उच्चारण बहुत उच्च परिणाम ला सकता है ।

\*\*\*

## **TALKING TO MY RAAAM!**

*Hey Nirakar Ram  
O the Eternal Jyot  
O Maa, Hey Nadeshwari  
we bow to thou feet  
as ever and forever.*

*We do your Upasana  
with Bhakti and Pran Shakti  
we offer ourselves, our deeds  
As offering.*

*Yet we remain mortal  
and we fumble all the time.  
But your communication  
Make us correct and keep  
Our Aradhana alive  
such kripa you bestow upon.*

*O my Raam  
Swamiji MaharajShree  
gave us the Tarak Mantra  
RAAUM as Param Guru  
which is our only accomplice  
in our journey of life.*

*My Raam Talks to us  
and we do not disbelieve  
as we are deeply anchored with  
Ram Naam Shraddha.  
Constant rememberance  
Or Ram Naam Simran  
When became Ajapa jaap  
I do not know  
But Bliss or akaran kripa comes  
And we get slipping  
into state of Ananda that  
Remains so sublime  
I don't feel that He is talking  
In isolation  
And people see me  
In world with my mortal entities.  
Such is divine appearance of my Ram*

*Nirakar yet all pervading Raam  
Does shows HIS virat ruup*

*And also talks deep within you  
In the garbha griha of Self.  
He talks very distinctly  
His Dhvani that is different  
than yours  
He intentionally uses  
Vocabulary that is not yours  
such is the method  
Of His Wisdom Avatara within.*

*Ram is always around you  
Taking care of you and  
talking to you  
if you do not trash them as Illusion.*

*Within deep silence  
Attributes of Raam is perceived  
In the deep deep silenced zone  
within becomes a reality of  
Naad consciousness  
When ajapa jaap  
Floats almost in slow motion  
In acoustic perspective  
And encircle the space  
Where first vibration of Prana appears  
And that runs heart beat,  
That makes our mind to think  
That is the cosmic joint  
Of first vibration of Param Guru  
Touches atman and then our body.  
Such is the realization of  
Raaam by many.  
Think deep; allow  
Raam Naam ajapa to get activated  
within this sound entity of Raaam.  
Talking to my Raam is a possibility  
Guru's Grace or  
All pervading Guru Tattwa  
Creates the avenue  
for such divine encounters  
With Raaam.*

*Guru appears in you and before you  
Talks to you, snubs you and*

*Cares for you are RAAM'S DIVINE BLISS.  
The eternal light in third eye  
during meditation  
or with open eyes is Divine methods  
of talking to you.  
During calamities He appears  
He rescues us from sufferings.  
These are  
His communications  
Through sound and silence.*

*Raam Naad runs the cosmos  
so we are roped in  
His command system  
as we do very serious Ram Naam aradhana.  
His eternal wisdom corrects us  
Purifies us and even make us medium  
for others.  
Such is Raam the Maatrik Naad.  
A purified and completely  
Innocent heart can hear Him more  
Than ordinary mortals like us.*

*Ram talks to you so intensely  
And guides you to other levels  
Is nothing mystique  
As Raam Naam Aradhana has  
All promises of begetting inner wisdom  
Provided we can prove to HIM  
That we are SUPATRA..this much  
Rest is bliss...  
Raaaaaaaaaauuuuum.*

## **मेरे राम के साथ वार्तालाप**

*हे निराकार राम*

*ओ शाश्वत ज्योत*

*ओ माँ, हे नादेश्वरी*

हम सदा सदा के लिए  
आपश्री के चरणों में प्रणाम  
करते हैं ।  
हम भक्ति व प्राण शक्ति के संग  
आपकी उपासना करते हैं  
हम अपने आप को, व अपने  
कृत्यों को आहुति के रूप में  
अर्पण करते हैं ।  
पर फिर भी हम नश्वर ही रहते हैं  
और हम हर समय गिरते हैं ।  
पर आपश्री का संपर्क हमें सुधारता है  
और हमारी आराधना जीवित रखता है  
ऐसी कृपा आप बरसाते हैं ।  
ओ मेरे राम  
स्वामीजी महाराजश्री ने हमें  
परम गुरु के रूप में  
तारकमंत्र राम दिया  
जो इस जीवन यात्रा में  
केवल हमारा साथी है ।  
मेरे राम हमसे बात चीत करते हैं

और हम अविश्वास नहीं करते  
क्योंकि हम गहराई से राम नाम  
के प्रति श्रद्धा  
से जुड़े हुए हैं।  
सतत स्मरण या  
राम नाम सिमरन  
कब अजपा जाप बन गया  
मुझे पता नहीं  
पर आनन्द या अकारण कृपा बरसती है  
और हम ऐसे आनन्द में फिसलते रहते हैं  
जो सदा उदात्त रहता है  
मुझे महसूस नहीं होता कि वे बात कर रहे होते हैं  
एकान्त में  
और लोग मुझे संसार में  
मेरी नश्वरता के संग देखते हैं।  
ऐसी दिव्य है मेरे राम की उपस्थिति  
निराकार पर सर्वव्यापक राम  
अपना विराट रूप दिखाते हैं  
और अति गहराई में आत्मा के गर्भ गृहा में  
बात भी करते हैं।

वे बहुत स्पष्ट बात करते हैं  
उनकी ध्वनि आपकी ध्वनि से अलग होती है  
वे जान बूझ कर ऐसी शब्दावली का प्रयोग  
करते हैं जो आपके जैसी नहीं होती  
ऐसी उनकी ज्ञान अवतरण की अंतःकरण में  
प्रक्रिया है ।  
राम सदा आपका ध्यान रखते हैं  
आपसे बात चीत करते हैं  
यदि आप इन सब को माया समझ कर  
फेंक न दें ।  
गहरे मौन में  
राम के गुण प्राप्त होते हैं  
गहरे अति गहरे मौन क्षेत्र में  
नाद चैतन्य एक यथार्थ बन जाता है  
जब अजपा जाप बहुत धीमी गति से बहता है  
ध्वनि के दृष्टिकोण से  
उस स्थान को परिवृत करता है  
जहाँ प्राण की प्रथम कंपन प्रकट होती है  
और हृदय की गति को चलाती है  
जो मन को विचार करने के लिए प्रेरित करती है



यह वह दिव्य संधि-स्थल है  
परम गुरु की प्रथम कंपन का  
जो आत्मा को छू कर फिर हमारी देह को छूता है ।  
बहुतों को राम की ऐसी प्रबुद्धता प्राप्त है ।  
गहरा मनन कीजिए;  
राम की इस ध्वनि अस्तित्व में  
राम नाम के अजपा को सक्रीय होने दीजिए।  
राम से वार्तालाप करना  
एक सम्भावना है  
राम के संग ऐसी दिव्य भेंट के लिए  
गुरु कृपा या सर्वव्यापक गुरु तत्व  
ऐसे मार्ग प्रशस्त करते हैं ।  
गुरु आपके भीतर आते हैं  
आपके समक्ष आते हैं  
बात करते हैं, डाँट लगाते हैं और  
आपका ध्यान रखते हैं  
क्योंकि आप तो राम का दिव्य आनन्द हो ।  
ध्यान के समय  
तीसरे नेत्र पर दिव्य प्रकाश का आना  
या फिर खुले नेत्रों से

आपसे बात करने की  
दिव्य प्रक्रियाएँ हैं ।  
विपदाओं के समय वे आते हैं  
पीड़ाओं से हमारी रक्षा करते हैं ।  
यह उनका ध्वनि व मौन में संचार है ।  
ब्रह्माण्ड में से राम नाद विचरता है  
जब हम गहरे होकर राम नाम आराधना करते हैं  
तो हम परमेश्वर के आदेश में बंध जाते हैं ।  
उनका दिव्य ज्ञान हमें सुधारता है  
पवित्र करता है  
और दूसरों के लिए यंत्र भी बनाता है ।  
ऐसा है राम मैत्रिक नाद ।  
एक पवित्र व सम्पूर्ण सरल हृदय  
संसारी लोगों से ज्यादा  
परमेश्वर को सुन सकता है ।  
राम आप से इतनी तीव्रता से बात करते हैं  
तथा अन्य स्तरों का मार्गदर्शन देते हैं  
और यह सब रहस्यमय नहीं है  
क्योंकि राम नाम आराधना भीतर के ज्ञान को  
प्राप्त करने का वचन देती है

*बशर्ते हम परमेश्वर को साबित कर सकें कि*

*हम सुपात्र हैं... केवल इतना*

*बाकि सब आनन्द है...*

*राम*

*\*\*\**

*We have to be PURE, HONEST, PIOUS AND SINCERE TO RIGHTEOUSNESS to celebrate VIJAYA  
DASHUMI.*

*Do we have it in us?  
If yes you are BLESSED  
if not start cultivating it right now.  
GOD loves only purity and tolerate no pretention.  
Let we all win over our own evils residing in our body.  
Purifications start now...  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum.  
RAM RAM*

*हमें विजय दशमी मनाने के लिए पवित्र, ईमानदार, धर्मपरायण और सच्चाई के प्रति निष्ठावान होना  
चाहिए ।*

*क्या हममें यह सब है?  
यदि हाँ तो आप पर कृपा है,  
यदि नहीं तो इन्हें अभी से विकसित करना आरम्भ कर दें ।  
परमेश्वर सात्विकता पसंद करते हैं  
और कोई ढोंग पसंद नहीं करते ।  
पवित्रीकरण अभी आरम्भ कीजिए .....*

*"राम"*

*राम राम*

\*\*\*

*Ram Naam sadhana makes you sublime and full of Ananda bhava. Please spread this; let our behaviour and expression bear the signature of Sadhana. Ram Sadhak hates none and doesn't gossip about others. Ram Naam sadhak creates bridge and never look for gulf and gaps. Ram Ram*

राम नाम साधना आपको उदात्त व आनन्द भाव से परिपूर्ण कर देती है । कृपया इसे विस्तृत करें ; हमारा व्यवहार व हमारी अभिव्यक्ति साधना का हस्ताक्षर धारे । राम साधक किसी से घृणा नहीं करता है और दूसरों के बारे में चुगली भी नहीं करता है । राम नाम साधक सेतु की रचना करता है और कभी गड्ढों व रिक्त स्थानों को नहीं ढूँढता है । राम राम

\*\*\*

*A beautiful spiritual feeling is aesthetically a borderless canvas with many colour and shades speaking in their own melodious tone and harmony and then aesthetics and forms are ever manifesting. Such is the divine play of creative pulses. I experince Raaam in this dimension also. Its solace and awaken inner love for Raaaaaaauuum and loving all....*

एक सुंदर सी आध्यात्मिक भावना सौंदर्य की दृष्टि से एक सीमातीत कैन्वस है जिसमें विविध रंग जो अपनी ही मधुरमयी धुन बोलते हैं व सामंजस्य प्रदान करते हैं और फिर सौंदर्य व रूप की अभिव्यक्ति सदा होती रहती है । क्रियात्मक स्पंद की ऐसी दिव्य क्रिया है । मैं राम को इस दृष्टिकोण से भी देखता हूँ । यह शांति है और भीतर से राम के लिए गहन प्रेम जागृत करता है तथा सभी से प्रेम करता है ।

\*\*\*

*If you want experience Maun then don't only silence your utterance but stall or at least slow down your thinking process and enhance thinking about Raam only Raam. Divine light can come anytime... maun sadhana is preparation for divine encounter. Shraddha is the bridge.*

यदि आप मौन को अनुभव करना चाहते हैं तो केवल अपने उच्चारण को ही बंद न करें बल्कि विचारों की क्रिया को रोकें या धीमा करें और राम के चिंतन को बढ़ाएँ केवल राम । दिव्य प्रकाश किसी समय भी आ सकता है ..... मौन साधना दिव्यता से भेंट करने की तैयारी है । श्रद्धा सेतु है ।

\*\*\*

*Discover a listener in you to elevate the self.  
Listen to your inner silence you will find God is whispering from within.  
This is the attributes of Nirakar NaaD Raaum.*

*अपने अंदर एक श्रोता को खोजें ताकि आप अपने आत्मा का उत्थान कर सकें ।  
अपने भीतर के मौन को सुनिए आप परमेश्वर को भीतर से धीमे से बोलता पाएँगे ।*

*निराकार नाद राम के यह गुण हैं ।*

\*\*\*

*If you want get your own spiritual heights  
be a God, bring smile meaningfully to those who lost smiles ages ago and laughter a rare  
episode in their life. Differently abled, destitutes, uncared old people are some! Can you not  
bring smile to one soul once a while!  
Pretend as God and Experience the Divine.*

*यदि आप अपनी आध्यात्मिक ऊँचाइयों के इच्छुक हैं*

*प्रभु जैसे बनिए, दूसरों के चेहरों पर सार्थक मुस्कराहट लाइए जिन्होंने मुस्कराना सदियों पहले छोड़ दिया  
और उनके जीवन में हँसना तो एक दुर्लभ घटना है । अलग ढंग से रचित शरीर, लावारिस, वृद्ध जिनका  
कोई नहीं, कुछ एक ऐसे हैं ! क्या कभी आप किसी एक आत्मा के चेहरे पर मुस्कराहट नहीं ला सकते ?*

*परमेश्वर होने का ढोंग करिए और दिव्यता को अनुभव कीजिए ।*

\*\*\*

*Once a man went to Maharishi and desperately told Him that he wanted to quit his family.  
Maharish smiled and said "you be truthful and do your duties and running away will not  
help. Treat your family as you are doing your sewa and dedicate to Ram". Then he told a  
small story that saved the family and can save many more. Maharishi said life is like a string  
musical instrument. If you tie it up tight then while playing the instrument the string can get*

*broken or torn. If you keep the strings loose then it will not be playable and sound will be unmelodious. If you keep it not so tight and not so loose then it will play all melodious and sonorous tunes.*

*So Maharishi asked him to follow the Middle Path to live a purposeful family life. This story he narrated from Buddha's life which Buddha learnt as an ascetic.*

एक बार एक आदमी महर्षि के पास गया और बहुत बेताबी से बोला कि वह अपना परिवार त्यागना चाहता है । महर्षि मुस्कराए और बोले " आप सच्चे रहिए और कर्तव्यों को निभाइए और यह भागना आपकी कोई मदद नहीं करेगा ।

अपने परिवार को समझिए जैसे आप सेवा कर रहे हैं और राम को सब समर्पित कीजिए । " तब उन्होंने एक कहानी सुनाई जिसने उस परिवार को बचा लिया और बाकि परिवारों को भी बचाया जा सकता है ।

महर्षि ने कहा कि जीवन एक तार वाद्य की भाँति है । यदि उसे बहुत कस देंगे तो वाद्य टूट सकता है । यदि बहुत ढीला रखेंगे तो वह बजाया नहीं जाएगा और स्वर मधुर नहीं होंगे । पर यदि उसे न ज्यादा कसा हुआ और न ही ढीला रखेंगे तो वह सभी मधुर ध्वनियाँ ही बजाएगा । इसलिए महर्षि ने उससे मध्य पथ लेने के लिए कहा जिससे वह एक उद्देश्यपूर्ण पारिवारिक जीवन व्यतीत कर सके गा । यह कहानी उन्होंने बुद्ध के जीवन से सुनाई थी जो बुद्ध ने तपस्वी होकर सीखी ।

\*\*\*

*Universal wisdom is sometime huge knowledge your mind receives. You will not have any clue why and wherefrom those are coming to you but you are flodded with them. This is akaran kripa of Devi Shakti Maharishi once Quipped.*

सारवभौमिक प्रज्ञता कई बार अथाह ज्ञान के रूप में मन प्राप्त करता है । आपको कोई संकेत भी नहीं होगा कि क्यों और कहाँ से यह सब आ रहा है पर आप पर इनकी बाढ़ आ जाती है । यह देवी शक्ति की अकारण कृपा है , महर्षि ने एक बार चुटकी ले कर कहा ।

\*\*\*

*I once asked Maharishi about universal wisdom.*

*He simply explained that its eternal intelligence or divine knowledge content that pours like rain and few "supatras" can receive them at same time, no matter where they are physically posited.*

मैंने एक बार महर्षि से सारवभौमिक बुद्धिमत्ता के बारे में पूछा । उन्होंने बड़ी सरलता के साथ कहा कि यह दिव्य प्रज्ञा या दिव्य ज्ञान वर्षा की भाँति बरसती है और कुछ सुपात्र इसे एक ही समय में प्राप्त कर सकते हैं , चाहे जहाँ कहीं भी वे शारीरिक रूप से उपस्थित हों ।

*Do you know what is the name of vault that stores the treasure trove called Universal Wisdom-----*

*It is Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuuuuuummmmm.*

क्या आप जानते हैं कि उस मेहराब का क्या नाम है जो सार्वभौमिक बुद्धिमत्ता नामी गुप्त कोष संग्रह करता है .... वह है राममममममममममममममम

\*\*\*

*I have learnt from My Guru Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharajji that when you live a life for others well being and do your karma with no self interest then you should be ready for criticism and blame game. You must know how to tolerate and smile away and walk alone! Yet never shelve your good deeds as Lord works through chosen few no matter, in most cases, spiritualism call for sacrifice only!*

मैंने अपने गुरु महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजजी से यह सीखा कि जब आप दूसरों की भलाई के लिए जीते हैं और अपने कर्म निष्काम भाव से करते हैं तब आपको आलोचना व दोषारोपण के लिए तैयार होना चाहिए । आपको सहन करना आना चाहिए, मुस्कुरा कर , अकेले चलना आना चाहिए ।पर फिर भी कभी अच्छे कर्म नहीं त्यागने क्योंकि परमेश्वर कुछ ही चुने हुए लोगों से अपना कार्य करवाता है , और ज़्यादातर , आध्यात्म त्याग ही माँग करता है ।

\*\*\*

*If I do something meaningful and others receive that in meaningful way then my deeds for others make a full circle.*

यदि मैं कुछ अर्थपूर्ण करता हूँ और दूसरे इसी भाव से ग्रहण करते हैं तब मेरे कृत्य दूसरों के लिए सार्थक हुए समझिए ।

\*\*\*

*I was searching the meaning of a socially meaningful life and karma!*

में सामाजिक दृष्टि से एक अर्थपूर्ण जीवन व कर्म खोज रहा था !

\*\*\*

### **SHREE NAAD RAM NAAM VANDANA**

*HEY Shree Nadeshwari Maa  
HEY Shree Naad Raam  
HEY Eternal nirakar Jyot  
Sweekaro Pranam  
Aatmik Submission  
O Maa on Your Shree Ashtumi.*

*Param Pujya Devrishi  
Vandana Murti Premji Maharaj Shree  
Please accept MY VANDANA  
And be with me  
while I do this Archana  
O Maa I am at your feet  
I want to do Vandana Maa  
My archana from all... O Maa.  
I know no Niyam, I follow no rule,  
But I love and passionately love You  
And even in this Shree Naad Vandana  
I am keeping you with me  
To do Archana to You  
O my paramdaya Shree Maa.*

*Drawing inspirations  
Param Pujya Premji Maharaj Shree  
I take eternal refuge  
to the state of unuttered Naad  
which flows in inner silence  
till even the silent sound is  
silenced.*



*Hey Maa you are my only relation  
Rest are reflective manifestations of yours.  
I travelled so many births  
so loud I remained as I was noise  
that broke the cosmic tranquility  
And your Ramamaye Naad Harmony.  
It was my fall, my deeds, my karma  
Then my sufferings.  
Yet Maa still you toil to  
Salvage Me from my fallen State  
O my most compassionate Maa.  
So loving you Remain O' my Raam Naad.*

*Beneath the feet of  
Swamiji Maharaj Shree  
We, Ram Naam Sadhak, are blessed  
Yet we are unable to progress  
In our Naad Sadhana  
Because narrow is our thinking  
Small is our world conception  
And ignorance rule  
as we even tend  
To use Ram Naam  
as just a mortal prayer time  
And unable to convert life as  
Ram Naam Prayer.*

*Hey Prabhu Pardon me.  
Naad Aradhana is our  
Spinal chord  
we forgot that  
and sordidly mortal stick  
we think  
Ram Naam is...  
Such a narrow mind  
I have!  
Give me Buddhi O my Sakha Maa  
As Raammm is my aadhar  
And me is the mortal stick.  
Surely not otherwise.*

*Kripa karo maa  
Kripa karo Raam  
Kripa karo.*

*Crash our ego for Good  
O my Raam  
Size us to our level  
O maa  
and let we be YOU O Maa  
and live with Your ego Maa.  
As nothing is mine  
nothing can be mine  
and everything is Thine...O my Raam.*

*Naad Shree Raam resides in Jihva  
In Silence every heart beat is  
RAAM and Raam Bhava.  
Our Atman is connected with  
Guru Tattwa  
As constant wisdom is flowing within  
One can hear them  
But we pretend to be too mortal Maa  
And create our noise  
"O God I suffered  
O lord I failed  
O lord these...these...these...are my sins  
And we spend time to repent and regret  
And celebrate our sufferings"  
O Maa make us realize  
That you are the Consciousness  
Nothing is hidden to you  
So we spend or loose  
So precious time in regrets,niyam  
Thinking afresh, reviewing self etc.*

*O Maa bless us....  
Our life be yours and yours only  
Our life be a sadhana of archana  
And if my life becomes  
Aradhana O Raam  
Then we are before  
The MANAS STHITI  
Shree Shree Adhistanji  
All the time  
And never start or end our archana  
Rather we become archana  
And nothing goes wrong  
As Shree Nirakar Jyoti Swarup Raam*

*Remains your sakha  
your mortal witness  
And immortal assurance.*

*Swamiji Maharji  
asked us to discharge all  
the mortal duties sincerely  
and respectfully  
yet do constant simran  
of Ram Naam  
Majourly.*

*Complete surrender was the  
divine message.*

*Pujya Premji Maharajshree  
Taught us not only  
How to do self less prayer for others  
But making life itself a Vandana and  
Prayer which*

*Remains his teaching  
Tooling sound and silence.*

*Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitterji  
Maharaj Shree wanted*

*Us to purify our mind at least*

*If we fail at body level,*

*For Ram Naam sewa*

*Only in dynamic forms*

*Yes doing duties as Divine Prarthana*

*And diminishing*

*The unending Wish Tree.*

*Billions of Jaap*

*Question not attitudes*

*Were only to imbibe divine grace*

*Such naad Sadhana He did*

*And prescribed for all.*

*Thus at this hour of celestial*

*Conjunction*

*Hey Maa please make our life*

*A prayer, an aradhana, an archana*

*I surrender to thou*

*With my good or bad deeds*

*At your feet*

*With an assurance*

*That O maa you will be*

*My witness of my karma now onwards.  
Let me not give you 5 min of prayer space  
For you  
In a day  
Rather I remember you all the time  
And do our mortal work  
As Ajapa Jaap  
Of Ram Ram continues within  
Unnoticed outside.  
With Ajapa Jaap.*

*Silence or Maun Sadhana  
Be part of few hour in a day or night  
Celebration of Ram Naam jaap  
Be a ritual round the year.  
Prayer for others and  
All girls and ladies are MAA tattwa  
Realize this, respect them, then surely  
You will be on divine blissful lap  
Of Raaaaaaaam  
And any aberration  
can take away every punya  
such harsh is Maa  
And remember this applies to both sexes!  
Who is otherwise so loving and compassionate.*

*Hey Naad  
Make our life  
A life of Vandana  
A life of archana  
And we learn to reduce our noise  
And inch towards bliss cosmic  
Zone of eternal silence  
And enlightened jyot space.  
Hey Maa accept me as prayer O naad  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuuuummmmm.*

**श्री नाद राम नाम वंदना**

**हे श्री नादेश्वरी माँ**

हे श्री नाद राम

हे दिव्य निराकार ज्योत

ओ माँ आपश्री की अष्टमी के उपलक्ष में

स्वीकारो प्रणाम

आत्मिक समर्पण ।

परम पूज्य देवऋषि

वंदना मूर्ति प्रेमजी महाराजश्री

कृपया मेरी वंदना स्वीकार कीजिए

और इस अर्चना के दौरान मेरे संग रहिए

ओ माँ मैं आपश्री के चरणों में हूँ

वंदना करने का इच्छुक हूँ

मेरी अर्चना हम सभी की ओर से ... ओ माँ

न मुझे कोई नियम का ज्ञान और न ही मैं कोई नियम निभाता हूँ

पर मैं आपसे प्यार करता हूँ, अति तीव्रता से प्यार करता हूँ

और इस श्री नाद वंदना में

मैं आपको अपने साथ रख रहा हूँ

आपकी ही अर्चना के लिए

ओ मेरी परम दयामय श्री माँ ।

परम पूज्य प्रेमजी महाराज श्री

से मैं प्रेरणा लेता हूँ

में

अनुच्चारण किए नाद के स्तर की

दिव्य शरण लेता हूँ

जो अंतर के मौन में बहता है

जहाँ मौन ध्वनि भी शांत हो जाती है।

हे माँ आप ही मेरी केवल संबंधी हैं

बाकि सब तो आप की ही प्रतिबिम्बित अभिव्यक्तियाँ हैं।

मैंने कितने जन्मों की यात्रा की है

और कितना ऊँचा रहा मैं क्योंकि मैं

वह शोर था जो ब्रह्माण्ड की शांति

और आपश्री का राममय नाद सामंजस्य

भंग कर रहा था।

वह मेरा पतन था, मेरे कृत्य, मेरे कर्म

और फिर मेरी ही पीड़ाएँ।

पर फिर भी माँ तुम कितनी मेहनत करती हो

मुझे इस पतन से उभारने के लिए

ओ मेरी सर्वोच्च करुणामयी माँ।

कितने प्यारे हो आप ओ मेरे राम नाद।

स्वामी जी महाराजश्री

के श्री चरणों के नीचे

हम, राम नाम साधक,  
कितने भाग्यशाली हैं  
पर फिर भी हम नाद साधना  
में प्रगति नहीं कर सकते  
क्योंकि हमारी विचारधारा संकुचित है  
सृष्टि की धारणा हमारे लिए इतनी छोटी है  
और अज्ञानता का साम्राज्य है  
हम तो राम नाम को केवल  
संसारी प्रार्थना का समय बना देते हैं  
और जीवन को राम नाम प्रार्थना  
बनाने से चूक जाते हैं।  
हे प्रभु मुझे क्षमा करें।  
नाद आराधना तो हमारी रीढ़ की हड्डी है  
और यह हम भूल जाते हैं  
और राम नाम को केवल एक पतित संसारी ढाल  
समझते हैं.....  
कितना संकुचित मन है मेरा!  
ओ मेरी सखा माँ मुझे बुद्धि दीजिए  
राम नाम मेरा आधार है  
और मैं हूँ वह पतित संसारी ढाल

न कि दूसरी तरह!

कृपा करो माँ

कृपा करो राम

कृपा करो ।

हमारे अहंकार को सदा के लिए

ध्वंस कर दीजिए

ओ मेरे राम

हमें हमारे स्तर तक ले आइए

ओ माँ हम आप बन जाएँ

और आपके अहं के संग रहें ।

क्योंकि मेरा कुछ नहीं

सब कुछ आपका है

मेरा कुछ हो भी नहीं सकता

सब कुछ आपका ही है ... ओ मेरे राम ।

नाद श्री राम जिह्वा में विराजते हैं

मौन में हर हृदय की धड़कन राम

और राम भाव है ।

हमारी आत्मा गुरुत्व से जुड़ी हुई है

सतत ज्ञान का प्रवाह भीतर होता रहता है

हम उन्हें सुन सकते हैं



पर हम संसारी होने का ढोंग रचते रहते हैं माँ  
और अपना ही शोर पैदा करते हैं  
" ओ प्रभु मैंने कितने कष्ट सहे  
ओ प्रभु मैं विफल हो गया  
ओ प्रभु यह.. यह.... यह... मेरे गुनाह हैं  
और हम सारा समय पछताने व अफ़सोस में निकाल देते हैं  
और अपने कष्टों का जश्न मनाते हैं "  
ओ माँ हमें अनुभव करवाइए  
कि आप चैतन्य हैं  
आपश्री से कुछ भी छिपा नहीं  
हम इतना बहुमूल्य समय पछताने, नियमों,  
नई सोच, स्वयं के अवलोकन करने इत्यादि  
में बिता देते हैं  
ओ माँ हम पर कृपा करिए....  
हमारा जीवन आपका और केवल आपका ही होवे  
हमारा जीवन अर्चना की साधना ही होवे  
और यदि मेरा जीवन आराधना बन जाता है ओ राम  
तब हम मानस स्थिति से  
श्री श्री अधिष्ठान जी के सम्मुख  
हर क्षण रहेंगे

हमारी अर्चना कभी आरम्भ व कभी अंत नहीं होगी

बल्कि हम स्वयं अर्चना बन जाएँगे

और कुछ गलत नहीं होगा

क्योंकि श्री निराकार ज्योति स्वरूप राम

हमारे सखा

हमारे संसार के साक्षी

और दिव्य आश्वासन रहेंगे ।

स्वामीजी महाराजजी

ने हमें अपने संसारी कर्तव्य

निष्ठापूर्ण व आदर सहित निभाने

के लिए कहा है

पर सतत राम नाम सिमरन के साथ ।

सम्पूर्ण समर्पण दिव्य संदेश था ।

पूज्य प्रेम जी महाराजश्री

ने हमें न ही निष्काम प्रार्थना करनी सिखाई

अपितु जीवन को एक वंदना और प्रार्थना

बनाना सिखाया

ध्वनि व मौन के संग

यही उनकी शिक्षा प्रणाली रही ।

महर्षि स्वामीजी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री

चाहते थे कि कम से कम  
हम अपने मन का पवित्रीकरण करें  
यदि हम शारीरिक रूप से विफल हो जाते  
राम सेवा हेतु  
गतिशील स्वरूप में  
जी दिव्य प्रार्थना के रूप में कर्तव्यों का पालन करना  
तथा कभी न अंत होने वाली कामनाओं का न्यून करना है ।  
करोड़ों जाप  
कभी अभिवृत्ति पर प्रश्न न करें  
केवल इसीलिए ताकि दिव्य कृपा  
को अंतर्ग्रहण कर सकें  
ऐसी नाद साधना उन्होंने की  
और सभी के लिए निर्धारित करी ।  
इस दिव्य संयोजक समय पर  
हे माँ कृपया हमारा जीवन  
एक प्रार्थना, एक आराधना, एक अर्चना  
बना दें ।  
मैं आपके श्री चरणों में  
गुण व अवगुणों के संग समर्पित होता हूँ  
इस आश्वासन के साथ कि

ओ माँ अब से आप मेरे कर्मों की साक्षी होंगी ।

कृपया मैं आपश्री को केवल

5 मिनट प्रार्थना की जगह न दूँ

अपितु मैं आपश्री का हर पल स्मरण करूँ

और अपने संसारी कर्तव्य के साथ साथ

राम नाम का अजपा जाप भीतर अविरल चलता जाए

बाहर से अदृष्ट!

मौन साधना हमारी दिन चर्चा का भाग बन जाए

राम नाम जाप का उत्सव

सारे वर्ष का अनुष्ठान बन जाए ।

सभी कन्याएँ व स्त्रियाँ माँ तत्व हैं

यह अनुभव कीजिए, उनका आदर कीजिए, तब

आप निश्चय से राम की

दिव्य आनन्दमयी गोद में रहेंगे

और कोई भी त्रुटि सभी पुण्य ले सकती हैं

ऐसी कठोर हैं माँ

और स्मरण रहे कि यह दोनों लिंग के साथ लागू होता है !

जो आमतौर पर इतनी प्रेममयी व करुणामयी हैं ।

हे नाद

हमारा जीवन

वंदनामय जीवन

अर्चनामय जीवन

बना दीजिए

और हम अपना शोर कम करना सीखें

और दिव्य आनन्द, दिव्य मौन क्षेत्र

तथा प्रबुद्ध ज्योत क्षेत्र

की ओर बढ़ें ।

हे माँ मुझे प्रार्थना के रूप में स्वीकार कीजिए ओ नाद

"राम"

\*\*\*

### **SHREE NAAD-MAKING OF BHAV MANDIR**

*Hey Shree Naadeshwari Maa  
Hey Param Guru Raaaam  
Kripa karo, kripa karo  
Bhakti Naad be given to all  
All Sadhak become Sublime  
And beget Raamattwa Hey Maa.*

*O Lord we know  
Our Body is Micro Cosmos  
And cosmic lila dances within  
So the Maya of Prakriti and Purusha.*

*O Maa we know  
Beyond duties or karma  
Our mortality is full of  
Illusion, unending wishes  
And burning desires  
That detracts our  
Spiritual Passion  
O my Maa.*

*On these pious days  
Where alaukik sandhaya  
Creating blasts in the sky of cosmos  
Yet we are unable to  
Soak our soul to these  
Pious celebration  
On these Navaratra muharta.!*

*O Maa O my Naad Ultimate  
Bless us for Bhakti Aradhana  
With Ram Naam Jaap.*

*We have basic knowledge  
How to negotiate life  
How not to become  
victim aberrations  
Of all kind  
Resulting in  
Our body the micro cosmos  
Unpurified for bhakti Sadhana.  
Yes we are "Gyan Papi"  
As we talk everything  
Preach anything but  
We are unable to follow  
As our Maan the Mad Horse  
Remain restless as ever.*

*Swami ji Maharaj Shree  
Maharishi asked us  
To convert this body in  
Ram Mandir or Ramalaye  
But we never heed to the pious advise  
So we reel in pain and  
Suffer unendingly.  
So Hey Maa this Navaratra  
At least lay the foundation  
Of Ram Mandir called Self.*

*Naad Shree Raaam  
be our Bhav Mantra  
To create the  
Nirakar Ram Mandir  
Called the self.*

*Let we all realize  
we ourselves are SHREE  
HIMSELF.  
We are part of Paramatman  
incidentally disentangled  
For the purpose of divine Lila.*

*Atman is the pranshakti  
Of eternal entity acted  
Through and upon the body.  
So do a respectful naman to Self.*

*I not the body but  
a physical entity of Atman  
passing by the time of mortsl living  
yet gathering and manifesting  
Experiences of karma and deeds.  
So think twice and utter and do  
So that atman gathers your Sattvik karma.*

*O naad beam your bhakti bhava  
And fill the akash of my body  
With Raaaaaaauum Naad.  
No vacuum or cavity be left  
There Shree Naad to reside.  
This Raaaaaum snan is  
Shree Naad Abhishekham  
Of our Body.*

*Naad and naam bhava  
Is Ganga Jaal  
To purify our body  
Which is otherwise unholy  
With scores of our deeds.*

*Our Senses and Sensuality be  
your tool  
And never to become there tool.  
For this impossible  
The mind be coated  
With million billion or trillion  
Of Ram Naam jaap  
So that no space is left  
For aberration to surface*

*Sattvik body is the foundation  
Of Shree Naad Mandir called self.*

*Our karmik luggage  
We carry  
must not be avoided  
We must suffer and cry but  
At the end of it  
Offer your sufferings at the feet  
Of Param Guru  
Param Dayalu Ram  
Its our mortal sacrifice  
And we get pardon as prarthana  
For regret and guilt to take back  
Seats.  
Ram Dhyana Dharana purifies  
In an involuntary fashions  
Such is Akaran kripa of ShreeNaad.*

*Mind, thought must search for  
Instructions from Atmik Manas  
For the thinking anew.  
Surrender of complete kind  
To Naad Bhava  
Simran of Ram naam 24 x7  
Elevates the mind content  
which are naividya for Maa  
And prashad for us  
From our Shree Naad Mandir called self.*

*Keeping all desires outside the  
Garbha griha of Self  
Allows installation of  
Shree Nirakar Ram in the  
Sanctum sanctorium of Atman kendra.  
Its eternal jyot  
And can be experienced by all  
In this Shree Naad Ram Aradhana.  
The Sahaj Naam Naad Yoga.*

*Hey maa allow our buddhi for Maun  
Diminish the I that rubs wrongly with all.*



*Hey Maa let your Naad Bhava  
Beseige all of us  
Let our Naad aradhan flower  
To briidge minds and eternity  
Let Ram Naam Dhvani ring our soul  
As we get elevated  
In this Mandir called self  
O Maa please create your temple  
In our Body  
Hey Raaum let our Ram Naam Aradhana  
Facilitates final salvation  
O my Raaaum. O My Maa.  
RaaaaaaaauuMaaaaaaa*

### **श्री नाद- भाव मंदिर की रचना**

*हे श्री नादेश्वरी माँ  
हे परम गुरु राम  
कृपा करो, कृपा करो  
कृपया भक्ति नाद सभी को दीजिए  
ताकि सभी उदात्त बनें  
और राम तत्व को प्राप्त करें हे माँ ।  
ओ प्रभु हमें जात है  
कि हमारी देह सूक्ष्म ब्रह्माण्ड है  
और ब्रह्माण्डीय लीला भीतर  
नृत्य करती है  
जैसे प्रकृति व पुरुष की माया ।*

ओ माँ हमें ज्ञात है

कर्तव्यों या कर्मों के पार

हमारी नश्वरता माया, अनंत इच्छाओं

व ज्वलंत लालसाओं से भरी हुई है

जो हमारे आध्यात्मिक तीव्रता को कम कर देती है

ओ मेरी माँ ।

इन पावन दिनों में

जहाँ आलौकिक संध्या

ब्रह्माण्ड के आकाश में विस्फोट कर रही है

पर फिर भी हम अपनी आत्मा को

इन पावन नवरात्र की मुहूर्त के उत्सवों

में भिगो नहीं पा रहे!

ओ माँ मेरी सर्वोच्चतम नाद

हम पर राम नाम जाप के संग

भक्ति आराधना की कृपा कीजिए ।

हमें केवल थोड़ा सा ज्ञान है

कि जीवन से कैसे जूझना है

गलतियों के शिकार कैसे नहीं होना है

ताकि हमारी देह जो सूक्ष्म ब्रह्माण्ड है

वह अपवित्र न हो भक्ति साधना के लिए ।

जी हाँ हम " ज्ञान पापी" हैं

हम सबकुछ बोलते हैं

कुछ भी प्रचार करते हैं

पर हम अनुसरण नहीं कर सकते

क्योंकि हमारा मन पागल अश्व के समान

सदा की तरह बेचैन है ।

स्वामीजी महाराजश्री व महर्षि ने हमें

इस देह को राम मंदिर या रामायण

में बदलने को कहा

पर हम कभी पावन परामर्श को नहीं मानते

तभी हम पीड़ा में तड़पते हैं

और अनंत बार सहते हैं ।

सो हे माँ इस नवरात्र

कृपया राम मंदिर जिससे आत्मा कहेंगे

उसकी नींव तो डाल दीजिए ।

नाद श्री राम हमारा भाव मंत्र हो

जो निराकार राम मंदिर

आत्मा का रचना करेगा ।

कृपया हम सब अनुभव करें कि

हम स्वयं ही श्री हरि हैं ।

हम परमात्मा के अंश हैं जो

दिव्य लीला के कारण पृथक हो गए हैं ।

आत्मा दिव्य सत्ता की प्राण शक्ति है

जो इस देह पर व देह से कार्य कर रहा है ।

सो आदर सहित आत्मा को नमन कीजिए ।

मैं देह नहीं पर आत्मा की भौतिक सत्ता हूँ

जो संसार के कर्म व कृत्यों की

अनुभूतियों को अभिव्यक्त

व इकट्ठा करता हुआ गुजर रहा हूँ ।

सो दो बार सोचिए और बोलिए और करिए

ताकि आत्मा आपके सात्विक कर्मों

को एकत्रित कर सके ।

ओ नाद अपना भक्ति भाव विस्तृत करिए

और मेरी देह के आकाश को

राम नाद से भर दीजिए ।

कोई रिक्त स्थान न रह सके

जहाँ श्री नाद न विराजें ।

यही राम स्नान है

श्री नाद अभिषेकम् है हमारी देह का ।

हमारी देह जो वैसे अपवित्र है हमारी

असंख्य कृत्यों के कारण

नाद और नाम भाव गंगा जल है

उसे पवित्र करने के लिए ।

हमारी इंद्रियाँ व आकर्षण आपश्री का यंत्र बनें

न कि हम उनके अधीन हो जाएँ ।

इस असम्भव कार्य के लिए

हमारे मन को करोड़ों अरबों व खरबों

राम नाम जाप से ओत प्रोत करना होगा

जिससे किसी गलती को ऊपर आने के लिए

कोई क्षेत्र न रह जाए ।

सात्विक देह

श्री नाद मंदिर "आत्मा" का

नींव है ।

जो कर्म हमारे हैं उन्हें

हमें नज़र अंदाज़ नहीं करना है

हमें सहना है व रोना है

किन्तु अंत में

सभी पीड़ाएँ परम गुरु, परम दयालु

राम के श्री चरणों पर अर्पित करनी हैं

यह हमारा संसारी त्याग है

और हमें क्षमा प्रार्थना के रूप में प्राप्त

होती है ताकि खेद व अपराध भाव

जीवन से दूर हो जाएँ ।

राम ध्यान धारणा

अनैच्छिक ढंग से पवित्रीकरण कर देता है

ऐसी अकारण कृपा है श्री नाद की ।

मन, विचारों को नई सोच के लिए

आत्मिक मानस से निर्देशों का

अन्वेषण करना चाहिए ।

नाद भाव के प्रति सम्पूर्ण समर्पण

24x7 सतत सिमरन

मन के स्तर को ऊँचाई पर ले जाता है

श्री नाद मंदिर जिसे आत्मा कहते हैं

उनकी ओर से

वह माँ के लिए नैविद्या है

और हमारे लिए प्रसाद।

इच्छाओं को आत्मा के गर्भ गृहा के बाहर

रखकर,

निराकार राम को पावन आत्म केंद्र में

स्थापित करने की अनुमति देता है।

श्री नाद राम आराधना में

उनकी दिव्य ज्योत सभी अनुभव कर सकते हैं।

सहज नाम नाद योग।

हे माँ हमारी बुद्धि को मौन के लिए अनुमति दीजिए

कृपया मैं दूसरों के साथ जो बुरा करता हूँ

वह कृपया कम कर दीजिए।

हे माँ कृपया आपश्री का नाद भाव हम सब को

हरा कर अपना बना ले

हमारा नाद आराधन प्रस्फुटित हो

और मानस व दिव्यता के बीच सेतु निर्माण कर सके

कृपया राम ध्वनि हमारी आत्मा में गूँजे

जैसे जैसे हमारा उत्थान

इस आत्मा रूपी मंदिर में हो।

ओ माँ कृपया अपना मंदिर

हमारी इस देह में बना दीजिए।

हे राम कृपया हमारी राम नाम आराधना

हमारी मुक्ति का द्वार प्रशस्त करे।

ओ मेरे राम. ओ मेरी माँ।

राम

\*\*\*\*

*Ram Naam has most beautiful vibration of cosmos. Hear it's Shree Naad with atmik ears that can perceive anahad naad. Sublimity is being part of that naad and not just perceiver or enjoyer of Raam Naad.*

ब्रह्माण्ड में राम नाम की सबसे सुंदर कंपन है। वह श्री नाद है, इन्हें आत्मिक कानों से श्रवण कीजिए जो कि अनहद नाद सुन सकते हैं। उदात्त भाव नाद का अंग होने में है और न कि श्रोता या राम नाद का आनन्द लेने में।

\*\*\*

*Eternal realization is not seeing, perceiving, experincing or learning it is being THAT as part of THAT with no objective perspective of seeing or viewing. As shadow has no shadow so eteenal realization is same. I AM THAT is the eternal essence.*

दिव्य प्रबुद्धता केवल देखने, महसूस करने, अनुभव करने या समझने में कि हम 'वह' हैं उस 'वह' के अंग, देखने का कोई वस्तुगत परिप्रेक्ष्य नहीं है। जैसे छाया की कोई छाया नहीं इसी तरह दिव्य प्रबुद्धता है। मैं "वह" हूँ ही दिव्य सार है।

\*\*\*

*Disciplined non utterance hour or an hour dedicated to self in silence does help self discovery.*



नियमित न उच्चारण किया हुआ एक घण्टा या एक घण्टा स्वयं के साथ मौन में बैठना स्वयं खोज करने में सहायक होता है ।

\*\*\*

*Silence does scare the mortal self that we are. But silence, khamoshi and stabdha bhav aur nishcalata are to be encountered.*

मौन हम संसारियों को भयभीत ज़रूर कर देता है । पर मौन, खामोशी और स्तब्ध भाव व निश्चलता का सामना तो करना ही है ।

\*\*\*\*

*Deeper we travel lesser expressive we must become. Maun Sadhana is meant for that inner journey.*

जैसे हम गहरे जाते जाते हैं वैसे हमारी अभिव्यक्ति न्यून होनी चाहिए । मौन साधना उस अंतःकरण की यात्रा के लिए है ।

\*\*\*

*Consciousness is beyond forms and formless nirakar is realized.*

चैतन्य आकार के पार है और तब निराकार की प्रबुद्धता सम्भव होती है ।

\*\*\*

*Information of mortal world is knowledge. And proven knowledge is eternal wisdom. One may be unlucky that Guru is no longer with them mortally but recollect Guruvachan. His wisdom which are universal and always relevant in all the coming times and situations. Whisper of Gurutattwa can be felt within if you Ear them well.*

संसारी जानकारी विद्या है । और जो विद्या सिद्ध हो गई वह दिव्य ज्ञान । कोई दुर्भाग्य वश यदि यह समझे कि गुरु तो अब उनके संग नहीं है पर स्मरण रखिए कि गुरुवचन, उनका ज्ञान सारवभौमिक है और आने वाले समय में व सभी परिस्थितियों में सदा प्रासंगिक होते हैं । गुरुत्व की धीमी सी आवाज़ भीतर महसूस होती है यदि हम ध्यान से सुनें ।

\*\*\*

*Adhyatma is adhyayan of atman.*

*A journey of the soul and learning of eternity. Inner journey is neither social nor mortal and only given relation is self and eshta. Nothing else matters.*

अध्यात्म आत्मा का अध्ययन है ।

आत्मा की यात्रा और दिव्यता का ज्ञान। भीतर की यात्रा न ही सामाजिक है न ही संसारी और केवल एक संबंध स्वयं का अपने इष्ट के संग । और कुछ मायने नहीं रखता ।

\*\*\*

*Guru who get siddhi even undergo mortal humiliation. Such unkind is the mortal world. But Eternity is not momentary as our life is.*

गुरु जिन्हें सिद्धि प्राप्त हो जाती है , उन्हें भी संसारिक तिरस्कार का सामना करना पड़ता । संसारिक दुनिया ऐसी निर्दयी है । पर जीवन में दिव्यता क्षणभंगुर नहीं होती ।

\*\*\*

*Everytime a spiritualist is injured s/he blesses others more. Blessing others is healing self for spiritualists.*

जब भी किसी आध्यात्मिक को ठेस पहुँचती है वह दूसरों को और ज़्यादा आशीर्वाद देता/ देती है । दूसरों को आशीर्वाद देना एक आध्यात्मिक के लिए औषध होती है ।

\*\*\*

*Constant exams are norms of spiritual enhancement. Failures, compartments. Re tests are more than normal for Spiritual graduation.*

सतत परीक्षाएँ आध्यात्मिक उत्थान के नियम हैं । आध्यात्मिक उपाधि प्राप्ति के लिए विफलताएँ, दुबारा परीक्षाएँ , कमपार्टमेंट आम बात है ।

\*\*\*

*Adhyatmik yatra is not cosmetic. World is always unkind to spiritualist. And worldly unkindness is strength of adhyatmavad. Spiritualism is an abstract tower that grows out of tyag, diminishing ego, sadhana, tap and even one confronts humillation. From there eternal kalpa vriksha sprouts to brace eternal bliss undermining happiness of this world.*

आध्यात्मिक यात्रा बनावटी नहीं है । आध्यात्मवादियों के प्रति संसार सदा निर्दयी होता है । और संसारिक निर्दयता, आध्यात्मवाद की शक्ति बन जाता है । आध्यात्म एक निराकार मिनार है जो त्याग, घटते हुई अहंकार, साधना, तप और जब किसी को तिरस्कार का सामना करना पड़ता है, वहाँ से फिर संसारिक सुख को पीछे छोड़ता हुआ तथा दिव्य आनन्द को आलिंगन करने के लिए एक कल्प वृक्ष अंकुरित होता है ।

\*\*\*

*Billion times when Ram Naam resounds in you then nothing matters in this world. We smile and walk....even that sounds rude to some !*

करोड़ों बार जब राम नाम आप में गूँजते हैं तब और कुछ इस संसार का मायने नहीं रखता । हम मुस्कुराते हैं और चलते हैं.... पर यह भी कईयों को अपमानजनक लगता है!

\*\*\*

*Tapasya needs will power to reach out to divine pulses and tap or sacrifices are the mode.*

तपस्या को निष्ठा की आवश्यकता होती है या त्याग ऐसा साधन है दिव्य स्पंदनों तक पहुँचने के लिए ।

\*\*\*

*I have taken so many births  
Always searched for Guru*

*which itself was sadhana of many lives.  
Now I got Siddha Atman as Guru  
Siddha Mantra Raam  
Am sure I will not loose them out  
This time.*

*Maya will be defeated  
This time.  
Maa says nobody is dearer to you  
Than your Guru  
Who is the divine light of  
Ramattwa Himself.*

*Do your duties, stand by your responsibilities but never enslave thyself. No body is worth your  
Raam. He will stand by you all the time beyond all the births for sure.*

*मैंने कितने जन्म लिए  
और सदा गुरु की खोज में रहा  
जो कि अपने में ही कितने  
जन्मों की एक साधना थी ।  
अब मुझे सिद्ध आत्मा गुरु मिले  
सिद्ध मंत्र राम  
मुझे विश्वास है कि अब की बार  
मैं इन्हें गुम नहीं हों दूँगा ।  
इस बार माया की पराजय होगी ।  
माँ कहती हैं कि कोई भी तुम्हारे  
गुरु के अलावा तुम्हारा  
प्रिय नहीं है*

*गुरु, जो कि रामतत्व के दिव्य प्रकाश स्वयं ही हैं ।*

अपने कर्तव्य कीजिए, अपनी जिम्मेदारियाँ निभाइए पर कभी गुलामी नहीं करनी। राम के सिवाय कोई भी  
आपके क्राबिल नहीं है। वे सदा आपका साथ देंगे, जन्मों के पार, मुझे विश्वास है।

\*\*\*

*Gurumukhi living is shunning shines of materialism. Rather sharpening the self for tap of  
tapasya and just not sadhana with comforts.*

भौतिकता की चमक को छोड़ना गुरुमुखी जीवन है। स्वयं की धार को तपस्या से तेज़ करना,  
पर साधना, बिना सुख सुविधा के।

\*\*\*

*Sometime relations come criss cross your eshta. Choice is clear. Disillusioned materialism!*

कई बार संबंधी आपके ईश्ट के सम्मुख अड़चनें बन कर प्रस्तुत हो जाते हैं। चुनाव साफ़ है। भौतिकता के  
प्रति निराशा।

\*\*\*

*Whosoever got Anubhut Guru is celestially blessed as they are nearer to Ramtattwa. SIDDHI of  
Guru is expressed through Sadhana of Sadhak. Be yourself a spritual pride.*

जिन्हें भी अनुभूत गुरु मिले उन पर दैवी कृपा है क्योंकि वे रामतत्व के निकटतम हैं। साधक की साधना से  
ही गुरु की सिद्धी की अभिव्यक्ति होती है। अपनी आध्यात्मिकता पर गौरावंगित होइए।

\*\*\*

*Eswar tattwa is supreme. For Atman this is the Final destiny.*

ईश्वर तत्व सर्वोत्तम है। आत्मा के लिए यही अंतिम गंतव्य है।

\*\*\*

*Spiritualism has its givens of challenges which emits out of MOHA, MAYA, MAMATA.  
Negotiating through them is LILA. Diminishing "wants" of self empowers you. Craving of  
Materialism will never help spiritualism. Choice is yours whether you opt for RAM or for another  
set of cravings of mortality.*

आध्यात्मिकता की अपनी चुनौतियाँ हैं जो मोह, माया, ममता के रूप में विस्तृत होते हैं। इनसे जूझना  
लीला है। इच्छाओं को कम करना आपको सशक्त कर देता है। इच्छाओं की चाह कभी भी आध्यात्म में  
सहायक नहीं होगी। चुनाव आपका है कि आप राम का चयन करते हैं या नश्वरता की अन्य प्रलोभनों का !

\*\*\*

### **ANANDA MAYE RAAM NIRAKAR DHYAN**

*Ram Bhava Ram Anubhuti  
Nirakar Divya Bhava  
Are foundation of Raam Dham Dhyan.  
Raamamay is bhava of  
Thick prem bhava  
for most potent omnipotent Raaam.  
Contemplating on Ram  
with Raam naam connects  
the tranquil knowledge base of eternity  
that subsides awe and anxiety  
Remove excitements  
And keep you hooked and connected  
With Nirakar Raam.  
Ram the creator of all creations  
Do create our dhyan avastha or state  
Where anandamaye benefic Shree Raam  
Smears our mind with  
Premamaye tattwa  
which is eternal truth.  
Raam Dhyan is purna samarpan  
and begetting Him as Bhakti, Gyam, and Karma  
Within the realm of Sattwik chitta  
In conjunction with Brahmanda.  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum*

## आनन्दमय राम निराकार ध्यान

राम भाव राम अनुभूति

निराकार दिव्य भाव

राम धाम ध्यान की नींव हैं ।

राममय भाव सर्वव्यापक राम

का सबसे प्रबलतम गाढ़ प्रेम भाव है ।

राम पर राम नाम द्वारा चिंतन

दिव्यता के शांत ज्ञान से जोड़ कर

भय व चिंता को समाप्त कर देती है

उत्तेजना को मिटा देती है

और आपको निराकार राम से कसकर

संयुक्त रखती है ।

राम जो सर्व रचनाओं के रचियता हैं

हमारी ध्यान अवस्था को रचते हैं

जहाँ आनन्दमय करुणामय श्री राम

हमारा मन प्रेममय तत्व जो परम सत्य है

उससे ओत प्रोत कर देते हैं ।

राम ध्यान पूर्ण समर्पण है

और परमेश्वर को भक्ति, ज्ञान और कर्म द्वारा

सात्विक चित के क्षेत्र में

ब्रह्मानन्द से संयुक्त

प्राप्त करने की चेष्टा है ।

"राम"

\*\*\*

### ***Ram Dhyaan antardhwanda (inner conflict)***

*The mind in contemplative state  
Focus at third eye on RAAM Nirakar  
Then comes roaring waves of thought  
Some are personal and emotional;  
Some are social and asocial;  
Some at higher thought  
Well away from Raam Dhyaan.  
These gushing thoughts are fought  
One by one all are taken away  
From Dhyaan paath  
To defeat stronger thought  
We superimpose them with  
Raam Bhava and chinta  
The chaotic thoughts are tamed  
When singular Raaamamaye paath  
Is followed  
the silencing of  
Other thoughts come to the fore.  
Raamameyeness  
In conscious brilliance  
Activates chetna sheel state of self  
Nirakar shabdik Raam  
Shimmering with inner jyot  
slowly defeats thoughts which are*



*riotious within.  
Raam bhakti empowers  
the chaitanya bhava  
as hereafter the dance eternal lights  
taking the Dhyan Gyan  
to another level  
Where Raam  
and Raam attributes flowers  
As the sacred lotus  
Within gets dews of  
Ram bhakti  
And the serpentine energy chord is  
Touched  
and brilliance of unknown kind  
Surfaces as conscious realizations.  
We are in Gurutattwa here  
And then Guru take us to  
Raamatattwa of  
Eternal consciousness.  
Ram Naam Dhyan*

## **राम ध्यान अंतरद्वंद्व**

*मन मननशील अवस्था में  
तीसरे नेत्र में निराकार राम पर  
एकाग्रचित्त जब होता है  
तब विचारों की दहाड़ती हुई लहरें  
कुछ व्यक्तिगत, कुछ भावात्मक  
कुछ सामाजिक कुछ असामाजिक;  
कुछ उच्च विचार*

पर राम ध्यान से दूर ।  
इन विचारों के बछाड़ से युद्ध  
किया जाता है  
एक एक करके सभी को  
ध्यान पथ से दूर किया जाता है  
किसी मज़बूत विचार को  
परास्त करने के लिए  
हम उसे राम भाव व चिंता से अध्यारोपण करते हैं  
बेकाबू विचार तभी सिद्धे हैं  
जब एक राममय पथ  
का अनुसरण करते हुए  
दूसरे विचारों का शांत होना भी  
सामने आता है ।  
राममय भाव चेतना के तेज़ में  
आत्मा की चेतनशील अवस्था को जागृत करता है  
निराकार शाब्दिक राम  
भीतर की ज्योति से चमचमाता हुआ  
धीरे से उन विचारों को परास्त करता है  
जो भीतर अराजकता फैलाए हुए हैं ।

राम भक्ति चैतन्य भाव सशक्त करती है  
क्योंकि उसके पश्चात दिव्य प्रकाश नृत्य  
करता हुआ ध्यान ज्ञान को अगले स्तर  
पर ले जाता है  
जहाँ राम और राम गुण पावन कमल रूप  
में प्रस्फुटित होकर  
राम भक्ति का ओस प्राप्त करके  
और कुंडलिनी शक्ति की तार छू कर  
ज्ञात तरह का तेज चेतन प्रबुद्धता  
के रूप में ऊपर आता है।  
यहाँ हम गुरुत्व में होते हैं और गुरुत्व  
हमें रामत्व की दिव्य चेतना में ले जाता है।  
राम नाम ध्यान।

\*\*\*

*It is 4.15 am. My Gurudev's are doing Dhyana. Let us get prepared for antarmukhi yatra of  
DHYANA.*

*Shree Shree Swamiji Maharaj Shree proclaimed  
"Dyan mey Raam Dhyiiey"  
Because Raam Bhava Dhyana  
Has eternal brilliance  
That provide atmik solace!  
In Raam Dhyana  
One experiences unparallel*

*Aditya state of celestial tranquility  
Where eternal love or premamaye  
Oneness Resides  
This towing of cosmic Raam  
In Dhyana anant is  
Begetting Param Purush Raam.  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum*

सुबह के ४:१५ हैं। मेरे गुरुजन ध्यान कर रहे हैं। चलिए ध्यान की अंतर्मुखी यात्रा की तैयारी करें।

श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री ने कहा

"ध्यान में राम धायाइए"

क्योंकि राम भाव ध्यान

का दिव्य तेज है

जो आत्मिक शांति देता है!

राम ध्यान में

हम अद्भुत अद्वितीय दिव्य शांति

प्राप्त करते हैं

जहाँ दिव्य प्रेम या प्रेममय ऐक्य

विराजित होता है

दिव्य राम को ध्यान अनंत में खींचना

जैसे परम पुरुष राम को पाना है।

राममममममममममममममममममम

\*\*\*

**KRIPA KARO GURU DEV KRIPA KARO**

*Atmimk Pranam Param Guru  
My Raam your are Shree Naad  
Supreme of Cosmos  
You are most powerful O my Raam  
You are in your pious most self  
In your NAAAM, O my Raaam.  
You are creative supreme  
You are nirakar, manifests in Naad  
Yet you are Divya Jyoti  
The universal brilliance  
of knowledge  
of enlightenment.  
Kripa kripa karo, hey Param Guru  
Kripa karo to remain in your spell  
For ever beyond even many births  
We be in your Ramamaybhava  
And experience you in your Ramatattwa.*

*Hey Sadguru Shree  
Swamiji Satyanandji Maharaj Shree  
You have given priceless gift to us.  
You have given beej mantra Raam  
Which is tarak mantra eternal Raam  
Raam is Upasana  
Ram is Samadhi  
Ram is Divya Jyoti  
Ram is Sadhana and Siddhi  
Such divine bliss you showered  
O my Swamiji Maharaj Shree.  
You saw that we don't fall in life  
You gave us disicipline of Sahoj Yoga  
You gave us Ram Naam jaap  
You gave us Ramamaye Punya bhava.  
Bless us O Sadguru  
That naam- nata be eternal  
And salvage us from cyclic  
Birth and rebirth.  
Kripa karo Sadguru  
Pious we remain for ever  
Kripa karo, Give me Ram Dhyan  
Be that my last Dhyan  
Hey SadGuru Swamiji Maharaj Shree  
Sweekaro mama atman hey Maha Guru.*

*Param Shree, Param Pujya,  
Divya Prem Swarup,  
Shree Shree Premji Maharaj Shree  
Sweekaro koti koti Pranam  
Accept our complete submission.  
You are epitome of Peace  
You are the Chosen angel of Raam  
Who knows only to heal the ailing  
You are the greatest rescuer  
In any calamity or personal disaster  
For Ram Naam Sadhak  
You are Shree Shree Hanumanji  
As You reflect HIS attributes  
You are Vinamra Sevak of Shree Raam  
You are the Divya Bhajan of Param Guru  
O My loving Premji Maharaj Shree  
You are trikal darshi  
You are eternally most powerful  
And stand by rigteousness of supreme.  
You salvage all, you pardon all  
So Param Guru Raam has bestowed you  
With HIS mahaguna or attributes.  
Maun Sadhana, Alaukik communication  
With Param Guru  
Your Power of Prayer, Hey Sarva Shree  
Premji Maharaj Shree  
Remain unparallel.  
Kripa karo Guru deve, Kripa karo  
Give us Bhakti  
Power our mind so that we can do prayer  
Pray for others only  
Give us your eternal Prem  
Hey My loving Shree Shree  
Param Pujhya Shree Premji Maharaj Shree.  
Keep us beneath your feet Hey Gurudev.*

*Eshwar tulya vinamrata key pratik  
The ultimate teacher of all knowledge  
Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitteeji Mahahraj Shree  
You are my Gurudev  
You are my Sakha  
You are my philosopher  
You are my eternal guide  
You are pious most Paramhasha*

*Hey Gurudev.  
At your feet am just a paricle of Dhul  
But you shared with us Brahama Gyan  
You lived a life of sewak to Gurjanas  
And Param Guru  
You taught us all that we know about  
Param Guru Raam  
You remain and proclaimed yourself  
As "sewak " of Swamiji Maharaj Shree  
You are Astha and Shraddha supreme.  
You taught us upasana  
And how to beget siddhi with Naam Sadhana  
And then offering everything to  
Param Guru Ram  
As you taught us "there no I or me and even Mine all is His everything is Thine".  
Ultimate submission  
Unerring discipline  
Power of Billions of Jaap  
Eternity of Buddhi with Ram Naam Simran  
Becoming epitome of Shraddha and truthfulness  
You taught us respect and reverance  
For female and Mata Shree  
As you remain an eternal son of Maa Shakti.  
Such sublime you remain  
You kept on pardoning and rescuing the most fallen  
As if Param Guru Most Merciful Guna  
Expressed through you even today.  
Hey Guruvsheshu, Hey Gurujan  
Hey maha Guru, Hey SadGuru,  
Hey Mararishi  
Give us astha  
Give us prayer  
Allow our Ram Naam Sadhana  
Allow siddhi so that we can serve  
Keep all ram sadhak under  
Norms and discipline laid by Sadguru.  
Give us righteousness  
Provide us eshwarik shakti of loving all and seeing, feeling  
and experincing Ram in all.  
Make us your Sadhak Hey Param Guru.  
Pranam Pranam Pranam  
Kripa karo Ram Kripa karo Maaa  
RAAAAAAAAAAAAAAAAAUUUUUM.*

## कृपा करो गुरुदेव कृपा करो

आत्मिक प्रणाम परम गुरु

मेरे राम आप श्री नाद हैं

ब्रह्माण्ड के सर्वशक्तिमान

आप सबसे शक्तिशाली हैं मेरे राम

आप अपने सबसे पवित्र स्वरूप में

अपने नाम में विराजित हैं, ओ मेरे राम ।

आप परम क्रियात्मक हैं,

निराकार, नाद में अभिव्यक्त होते हैं

फिर भी आप दिव्य ज्योति हैं

सार्वभौमिक बुद्धिमत्ता व प्रबुद्धता के तेज ।

कृपा कृपा करो, हे परम गुरु गुरु

कृपा करो कि हम सदा आपश्री के सम्मोहन में रहें

सदा अनेक जन्मों में आपके राममय भाव में रहें

और आपको राम तत्व में अनुभव करें ।

हे सद्गुरु श्री

स्वामीजी सत्यानंदजी महाराजश्री

आपने हमें बहुमूल्य उपहार दिया है ।



आपने हमें बीज मंत्र राम दिए  
जो तारक मंत्र शाश्वत राम हैं  
राम उपासना है  
राम समाधि है  
राम दिव्य ज्योति है  
राम साधना और सिद्धी है  
ऐसा दिव्य आनन्द आपने बरसाया  
ओ मेरे स्वामीजी महाराजश्री ।  
आपने यह देखा कि हमारा कहीं पतन न हो  
आपने हमें सहज योग के नियम दिए  
आपने हमें राम नाम जाप दिया  
आपने हमें राममय पुण्य भाव दिया ।  
हमें आशीर्वाद दें ओ सद्गुरु  
कि नाम से नाता शाश्वत हो  
और हमें जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति दे ।  
कृपा करो सद्गुरु  
कि हम सदा धर्मपरायण रहें  
कृपा करो, मुझे राम ध्यान दें  
वह मेरा अंतिम ध्यान होवे

हे सद्गुरु स्वामी जी महाराजश्री

स्वीकारो मम आत्मा हे महा गुरु।

परमश्री, परम पूज्य,

दिव्य प्रेम स्वरूप,

श्री श्री प्रेम जी महाराजश्री

स्वीकारो कोटि कोटि प्रणाम

हमारा सम्पूर्ण समर्पण स्वीकार कीजिएगा।

आप शांति के सार हैं

आप राम से नियुक्त किए गए देवदूत हैं

जो केवल पीड़ितों को आरोग्य करना जानते

किसी भी आपदा में या व्यक्तिगत विपदा में

राम नाम साधक के लिए

जो सर्वोच्च उद्धारक हैं।

आप श्री श्री हनुमान जी हैं क्योंकि

आप उनके गुण प्रतिबिंबित करते हैं

आप श्री राम के विनम्र सेवक हैं

आप परम गुरु के दिव्य भजन हैं

मेरे प्यारे प्रेमजी महाराज श्री

आप त्रीकाल दर्शी हैं

और आप सदा परमेश्वर के न्यायपरायणता

का साथ देते हैं ।

आप सबको मुक्ति देते हैं, क्षमा करते हैं

इसलिए परम गुरु राम ने आपको

अपने महागुणों से सम्पन्न किया है ।

मौन साधना, आलौकिक संचार परम गुरु के साथ

आपकी प्रार्थना की शक्ति, हे सर्वश्री

प्रेम जी महाराजश्री

उसका कोई सामान्तर नहीं है ।

कृपा करो गुरुदेव , कृपा करो

हमें भक्ति दीजिए

हमारे मन को सशक्त कीजिए

कि हम प्रार्थना करें

केवल दूसरों के लिए प्रार्थना करें

हमें दिव्य प्रेम दें

हे मेरे प्यारे श्री श्री

परम पूज्य श्री प्रेम जा महाराजश्री ।

कृपया अपने चरणों के नीचे रखिएगा हे गुरुदेव ।

ईश्वर तुल्य विनम्रता के प्रतीक

समुच्चय ज्ञान के सर्वोत्तम शिक्षक

महर्षि स्वामीजी डॉ विश्वामित्र महाराजश्री

आप मेरे गुरुदेव हैं

मेरे सखा

मेरे दार्शनिक

मेरे शाश्वत मार्गदर्शक

आप सबसे पवित्र परमहंस हैं

हे गुरुदेव ।

आपके चरणों में मैं धूलि का केवल एक कण

पर आपश्री ने हमारे साथ ब्रह्म ज्ञान बाँटा

गुरुजनों व परमगुरु के सेवक बनकर रहे

आपने हमें परमगुरु राम के बारे में सिखाया

आप रहे व स्वयं को सदा स्वामी जी महाराजश्री

का सेवक कहा

आप आस्था और श्रद्धा की मूर्त हैं ।

आपने हमें उपासना करनी सिखाई

और राम नाम द्वारा कैसे सिद्धी प्राप्त करें

और सब कुछ परमगुरु पर सर्वस्व समर्पित कर दें

क्योंकि आपने सिखाया कि " मैं कुछ नहीं हूँ न मेरा कुछ है सब परमेश्वर का "

परम समर्पण

अचूक अनुशासन

करोड़ों जप की शक्ति

राम नाम सिमरन द्वारा बुद्धि की शाश्वत्ता

श्रद्धा व सत्यता के सार बने आप

आपने हमें स्त्रियों व माता श्री

को आदर व सम्मान करना सिखाया

कि आप माँ शक्ति के शाश्वत पुत्र रहे

ऐसे उदात्त आप रहे

सब को क्षमा करते गए और गिरे हुए को उबारते गए

जैसे कि परम गुरु का सबसे क्षमावान गुण

आज भी आपसे अभिव्यक्त हो रहा है ।

हे गुरुवारे शु, हे गुरुजन

हे महागुरु, हे सदगुरु

हे महर्षि

हमें आस्था दीजिए

हमें प्रार्थना दीजिए

हमें राम नाम साधना की अनुमति दीजिए

सिद्धी की अनुमति दीजिए कि सब साधकों की सेवा कर सकें



*Param Guru, Param Prem Raam  
Be our centric prem upasana.  
Raam Naad resounds in Naam aradhana  
Raam dham showers  
Prem and Prem  
For Eternal encounter  
With ever loving Raaam.  
Premamaye shakshatkar  
Remains Ram Naam upasana.  
Such sublime love is my  
Raaaaaaaaaaaaaaaauum.*

### **राम भाव आराधना**

राम नाम दिव्य सत्ता

दिव्य प्रेम

प्रतिबिंबित करता है ।

परम गुरु, परम प्रेम राम

हमारी केंद्रीय प्रेम उपासना होनी चाहिए ।

राम नाद नाम आराधना में गूँजता है

राम धाम प्रेम और प्रेम बरसाता है

सदा प्यारे राम के साथ

दिव्य मिलन बरसाता है ।

प्रेममय साक्षात्कार

राम नाम उपासना है ।

ऐसा उदात्त प्रेम है

## मेरे रामममममममममम

\*\*\*

God has created two stalls one Distributing HAPPINESS and other Distributing SORROW. He made a rule who will consume sorrow will be asked to distribute Happiness in next turn. And those who will consume happiness will distribute sorrow in next turn. This will be the cycle.

Most people stood in first Q to consume happiness. And sorrow could not be consumed as no one has yet come after consuming happiness.

A saint opted for none yet stood by. GOD came to him and asked why he is not in any of the Q. Saint bowed down and said "you are distributing both happiness and sorrow which are Maya O My Raam.

I was looking for Mukti O Ram."

God said "ok I empower you O saint to distribute my Name Raam which will give mukti to the seeker but give it to those who have consumed sorrow as first choice". Raam is tarak mantra and God himself make the saint a Guru who has siddhi and power to distribute Ram Naam and salvage the world from maya.

भगवान ने दो स्टाल की रचना की। ... एक जो सुख बाँटती और दूसरी जो दुख । उन्होंने एक नियम बनाया कि जो दुख भुगतेगा उसे अगली बारी में सुख बाँटना पड़ेगा और जो सुख भोगेंगे उन्हें दुख बाँटना पड़ेगा अगली बारी में । ऐसा चक्र चलेगा ।

ज्यादातर लोग पहली पंक्ति में खड़े हो गए सुख पाने के लिए । और दुख का भुगतान किसी ने नहीं किया क्योंकि खुशी भुगतान करने के बाद दुख के लिए कोई आया ही नहीं ।

एक संत ने कुछ भी नहीं चयन किया पर फिर भी खड़े रहे । प्रभु आए और पूछा कि क्यों तुम किसी भी पंक्ति में नहीं हो ?

संत नत्मस्तक हुए और बोले कि आप दोनों सुख व दुख बाँट रहे हैं जो और कुछ नहीं बल्कि माया हैं मेरे राम । मैं तो मुक्ति को ढूँढ रहा था ।

प्रभु बोले - ठीक है , मैं तुम्हें सशक्त करता हूँ कि तुम मेरा नाम बाँटों , इच्छुक हो मुक्ति के लिए , पर केवल उन्हीं को देना जिसने दुख को पहले चयन किया है।



राम नाम तारक मंत्र है और परमेश्वर ने स्वयं संत को गुरु बनाया जिसके पास सिद्धी व शक्ति है राम नाम बाँटने के लिए और संसार की माया से रक्षा करने के लिए ।

\*\*\*

*Eshwar has SWAR in it. It is Anhad Naad.*

ईश्वर में स्वर है । वह अनहद नाद है ।

\*\*\*

*One day I saw a diseased dog limping and going to the community dustbin in search of food. I was standing I was as if lost, internalizing his feelings, his pain and was looking at him for long. Then the dog turned and looked at my praying eyes as if smiled through his eyes. Was it Karuna? Was it nothingness? I dont know how to describe that look. I have never seen such a glance from any living being. It was divine... I saw the dog never ever thereafter.*

*Searching divinity may not be a conscious effort that day I realized. RAAAM.*

एक दिन मैंने एक व्याधिग्रस्त कुता लँगड़ाता हुआ देखा जो सार्वजनिक कचरे के डिब्बे के पास भोजन की खोज में गया । मैं खड़ा देखता रहा काफ़ी देर जैसे गुम सा गया, उसकी भावनाओं व उसकी पीड़ा को आत्मसात करता हुआ । तब वह कुत्ता मुड़ा और मेरी प्रार्थना करती हुई आँखों में देखा जैसे कि वह अपनी आँखों से मुस्कुरा रहा हो । क्या वह करुणा थी? क्या वह शून्यता थी ? मैं नहीं जानता कि मैं उस नज़र का कैसे बखान करूँ । मैंने कभी ऐसी दृष्टि किसी प्राणी की नहीं देखी । वह दिव्य थी ... मैंने वह कुत्ता फिर कभी नहीं देखा । उस दिन मैंने अनुभव किया कि दिव्यता कोई चेतन प्रयास नहीं है । राम

\*\*\*

*A saint who renounces everything is most possessive about His or Her God because a person becomes saint to beget the love of the God.*

*So you renounce nothing and be a strong possessive sadhak to beget Ram bhava.*

एक संत जो सबकुछ त्याग देता है वह अपने परमेश्वर के लिए बहुत अत्याधिक स्वामीगत भाव रखता है क्योंकि वह संत ही परमेश्वर का प्रेम प्राप्त करने के लिए बना था ।

राम भाव प्राप्त करने के लिए कुछ छोड़ने की ज़रूरत नहीं है और एक दृढ़ स्वामीगत साधक बनिए ।

\*\*\*

*I wanted to discover the sublime purity. You know where I got?*

*I found IN THE EARLY MORNING, a fresh dew drops on leaf of a non descript plant. Because a dew drop on rose petal, which was also there, has a lure or moha for the onlookers.*

*Purity can't have moha or maya. PURITY is sublime, pure Unattached, Neutral, Divine  
PURE AND BEAUTY ARE TWO DIFFERENT THINGS. RAM RAM.*

मैं उदात्त पवित्रता की खोज करना चाहता था । क्या आप जानते हैं कि मैंने वह कहाँ पाई?

मैंने वह बहुत सुबह की भोर में पाई, अज्ञात पौधे के पत्ते पर नवीन ओस की बूँदें । क्योंकि ओस की बूँद गुलाब के पत्ते पर, जो वहाँ पर भी था , पर द्रष्टाओं के लिए वह मोह का कारण था । पर पवित्रता में मोह या माया नहीं हो सकती । पवित्रता उदात्त , पूर्ण रूप से निर्लेप , सम, दिव्य होती है। पवित्रता और सौंदर्य दोनों भिन्न हैं । राम राम

\*\*\*

*Life is not inventing how many Masks the society or civilization has created.*

*Life is all about shedding all the masks we wear.*

*Drop the Mask and realize the Sublime world.*

*Life need not be pampered so much that we wish for Vish Vriksha and crave for Tamas or Rajas.*

*It is better ask the Life to give whatever it has to offer to the world.*

*Consumeristic behaviour of life makes us fumble and fall.*

*Life be that of a tree which provides and gives yet Tree remains unattached and never counts, who created nests in it, who took fruit or wood, or who took shelter beneath it. Who took birth underneath or who took last breath near its trunk. This be the LIFE which live only as a Provider.*

जीवन इसके बारे में नहीं है कि कितने मुखौटे समाज या सभ्यता ने रचे हैं ।

जीवन तो उन मुखौटों को उतारने में है जो हमने पहन रखे हैं ।

मुखौटे उतारिए और उदात्त संसार को अनुभव कीजिए ।

जीवन को इतना लाड़ से बीगाड़ने की आवश्यकता नहीं कि हम इच्छा पूर्ति वृक्ष की इच्छा करने लग जाएँ और तमस या रजस के लिए तरसें । जीवन से यह कहना बेहतर है कि जो भी वह संसार को दे सकती है दे ।

जीवन में उपभोक्तावादी व्यवहार गड़बड़ करता है और हमारा पतन करता है ।

जीवन ऐसे वृक्ष की भाँति होना चाहिए जो पालन करता है और देता है पर स्वयं वृक्ष सदा आसक्त व निर्लेप रहता है और कभी गिनता नहीं कि किसने उसमें घोंसले बनाए , किसने फल लिए या लकड़ी या किसे उसके नीचे शरण ली । किसने उसके नीचे जन्म लिया या किसने आखिरी स्वाँस लिया । ऐसा जीवन हो जो केवल पोषण करने के लिए ही जीएँ ।

\*\*\*

*A question to TIME... Why we have come to this world?*

*"To make the world beautiful" Answers the TIME.*

समय से एक प्रश्न ... हम इस दुनिया में क्यों आए हैं?

" इस संसार को सुंदर बनाने के लिए " समय ने उतर दिया ।

\*\*\*

*My God, My Eshta, My Ram, loves me most when I am silent or in Maun. But in materialism IF YOU Are SILENT you are like UNREAD book!*

*Life has a trend. When we read those we know whats in offing! So surprise the surprises that life is going to spring.*

मेरे प्रभु , मेरे ईश्ट, मेरे राम मुझसे अत्यधिक प्रेम करते हैं जब मैं मौन होता हूँ । पर भौतिकता में यदि आप चुप हैं तो आप एक अनपढ़ी किताब के भाँति हैं ।

जीवन की एक प्रवृत्ति है । जब हम वह पढ़ते हैं हमें उसके आने का ज्ञान होता है ! सो आश्चर्य को भी अचरज कीजिए जो जीवन आपको देने वाला है ।

\*\*\*

### **RAM NAAM SADHAK KA SAMPURNA SAMARPAN**

*Ram Naam sadhak jab prem bhav se es sansar me, samparka shrishti kartey hain, wey divya Raam ko saksha maan tey hain. Ye Ram bhava harek ristey aur sampark mey Ram pratibimbit hoti hai aur sukh- maye Asha vyatit(without expectations)sewa kartey hain sab ek manushya ke nati. Lekin ek chetnashil Ram Naam sadhak apneko aghat ya kasthta nahi pauchaney detey hain dusro key dwara, kyon ki wah Ram Bhav mey karm kar rahen hain koi aur anuchit karey..ya galat vevahar karey... ussey Sadhak ko koi farak nai padta. Ram bhava, Ramji key eshwarik prem akaran kripa hai hamarey upar esiliyey hamey kise sey koi apeksha nai hona chahiye. Ram Naam pey apney jeevan ko sampurna samarpan karna hi Bhav chaitanya ki prapti hoti hai. Aur sansar ke vayvhar(behaviour) sey bichalit na rehna hi Ram Bhav ko antarkaran mey utarna hota hai. "Sab Raam Janey" boliye and SMILE Ram Ram.*

### **राम नाम साधक का सम्पूर्ण समर्पण**

राम नाम साधक जब प्रेम भाव से इस संसार में, सम्पर्क सृष्टि करते हैं ,वे दिव्य राम को साक्षी मानते हैं ।यह राम भाव हर एक रिश्ते और सम्पर्क में राम प्रतिबिम्बित होता है और हर मनुष्य के नाते सुखमय आशा व्यक्तित्व सेवा करते हैं ।लेकिन एक चेतनशील राम नाम साधक अपने आपको आघात या कष्ट दूसरों के द्वारा नहीं पहुँचाने देते हैं, क्योंकि वे राम भाव में कर्म कर रहे होते हैं और कोई अनुचित करें या ग़लत व्यवहार करें उससे साधक को कोई फ़र्क नहीं पड़ता । राम भाव , राम जी के ईश्वरिक प्रेम की हम पर अकारण कृपा है , इस लिए हमें किसी से कोई अपेक्षा नहीं होनी चाहिए । राम नाम पर अपने जीवन को सम्पूर्ण करना ही चैतन्य भाव की प्राप्ति होती है ।और संसार के व्यवहार से विचलित न रहना ही राम भाव को अंतःकरण में उतारना होता है । सब राम जाने बोलिए और मुस्कुरा दीजिए । राम राम

\*\*\*

*When soul suffers, no medicine works the Divya Prem which comes down from space out of Ram Naam Sadhaks' Prayer can do the wonder. ANTARKARAN KEY RAAM KO JAGRIT RAKHIYE JAAP OR NAAM SIMRAN SEY TAB YE JEEVAN ASAN HO JAYEGI YE HI HAI RAM BHAVA DIVA PREM.RAAAUUUM*

जब आत्मा आहत होता है , तब कोई औषधी काम नहीं करती ; दिव्य प्रेम जो अंतरिक्ष से राम नाम साधक की प्रार्थना पर उतर कर आता है, करिश्मा कर देता है । अंतः करण के राम को जागृत रखिए ; जाप और सिमरन से तब यह जीवन आसान हो जाएगा । यही राम भाव दिव्य प्रेम है । राममममम

\*\*\*

*Eternal love of Raam is greatest healer. Realize this, culture this and get absorbed in it. THIS IS RAM KRIPA AND GURU KRIPA.*

राम के प्रति दिव्य प्रेम सर्वोच्च औषधि है । इसको अनुभव करें, इसकी पालना करें और इसमें अवशोषित हो जाएँ । यह राम कृपा व गुरु कृपा है ।

\*\*\*

*Divya prem Raam siraf aastha sey hum antar karan mey utartey hain. Ram Naam aradhana ki kunji Divya Prem hi hai. Raaaaauuuuum*

दिव्य प्रेम राम सिर्फ आस्था से हम अंतःकर्ण में उतारते हैं । राम नाम आराधना की कुंजी दिव्य प्रेम ही है ।  
रामममममम

\*\*\*

*Saccha Prem Bhava hamey hamesha Raamji key kadmo mey rakhta hai. Kitna premaye hain hamarey Raam.*

सच्चा प्रेम भाव हमें हमेशा रामजी के कदमों में रखता है । कितने प्रेममय हैं हमारे राम ।

\*\*\*

## **RAM THE PURIFIER**

*Prem Dharana Raam  
Smear the heart.  
By default Paap, Kukarma  
And cunningness of self,  
Negation and wrong bhava  
Get washed  
Such is Ram Naam Prem Bhava.  
With huge confidence and Shraddha  
In Raam Bhava if we have the  
HE Himself elevates us.  
Such loving is my Raam.  
Once you are in this daiva prem  
With Raaam  
No ill thought can nestle in us  
No aberration He allows.  
If we can plant this in our children  
Purity will be redefined by them  
Such is loving Raam  
And divine Satya Bhava reflects in all  
Such my loving purifer  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuuuuuum.*

## **मेरे शोधक राम**

*प्रेम धारणा राम*

*हृदय को लिप्त करता है ।*

*राम नाम प्रेम भाव*

*मन के पाप, कुकर्म*

*चालाकीपन, नकरात्मकता, व*

*बुरे भावों को धो डालता है ।*

*सम्पूर्ण आत्मबल व श्रद्धा*

*यदि राम भाव में है तो वे स्वयं हमारा*

*उत्थान कर देते हैं,*

*ऐसे प्यारे हैं मेरे राम ।*

*एक बार जब आप राम के साथ*

*इस दैव प्रेम में होते हैं*

*कोई भी बुरा विचार या गलती*

*वे भीतर नहीं आने देते ।*

*यदि हम यह बीज अपने बच्चों में*

*बीज दें तब एक अलग सा पवित्रिकरण*

*अंकुरित होगा ।*

*ऐसे प्यारे हैं राम*

*और दिव्य सत्य भाव*

*सभी में प्रतिबिंबित होता है*

*ऐसे प्यारे शोधक हैं मेरे राम ।*

*राम*

*\*\*\**

### ***SHRISHTI and RAAAUM***

*It is Ram bhava  
Which is all pervading  
HE is the source of all the lila*

*The cosmos witnesses.  
All the creative Bhava of the world  
He creates which we know  
Or even sometime cant perceive.  
He is most easily fathomable  
And accessed by PREM bhava  
Which enhance our Chitta.  
The Ram Naam Chaitanya  
Is nothing but eshwar prem bhava.  
Be in this eternal love of Raam  
Premamaye Raaaam is absolute  
And Eshwar Prem, Jeeva Prem  
Becomes Ram Naam Sadhana.  
Nature of my Raaam is to love you  
Never forget this absolute truth  
Raaama Chaitanya Bhava  
Is the lila bhav of Raaaam Himself.  
Raaaaaaaauuum.*

## **सृष्टि और राम**

वह राम भाव है जो

सब जगह सर्वव्याप्त है

वे ही हर लीला का मूल हैं

और ब्रह्माण्ड के साक्षी भी ।

जो भी संसार के रचनात्मक भाव हैं

वे ही रचते हैं

कुछ का हमें पता चलता है

कुछ को जान ही नहीं सकते ।

उनकी गहराई को प्रेम भाव से



असानी से मापा जा सकता है  
जो हमारे चित का उत्थान करता है ।  
राम नाम चैतन्य और कुछ नहीं  
बल्कि ईश्वरीय प्रेम भाव है ।  
राम के शाश्वत प्रेम में रहिए  
प्रेममय राम सम्पूर्ण है  
और ईश्वर प्रेम, जीव प्रेम  
राम नाम साधना में रूपांतरित  
हो जाता है ।  
मेरे राम का स्वभाव ही है  
आपसे प्रेम करना  
कभी भी यह सम्पूर्ण सत्य  
न भूलिएगा ।  
राम का चैतन्य भाव  
राम का ही लीला भाव है ।

\*\*\*

*Right away if you want to feel Ram. Close your eyes keep Guruvareshu in your third eye and pray for someone who is suffering. The post intensed prayer will shower you bliss who is nothing but your nirakar Raaaam.*

अभी के अभी आप राम को महसूस करना चाहते हैं । अपनी आँखें बंद करिए , गुरुवारेशु को अपने त्रीकुटी स्थान पर रखिए और जो तड़प रहा है उसके लिए प्रार्थना करिए । इसके पश्चात् गहन प्रार्थना आप पर ऐसे आनंद की बरसात करेगी जो कि और कुछ नहीं पर आपके निराकार राम हैं ।

\*\*\*

*My loving Ram loves those who constantly pray for others. Ram Himself is Prayer of eternity. He salvages all. He is the final refuge. But He only hears to pure and sacred whispers of divine souls like yours.*

मेरे प्यारे राम उन सबसे प्रेम करते हैं जो सतत दूसरों के लिए प्रार्थनारत हैं । राम स्वयं अनंत की प्रार्थना हैं । वे सब की रक्षा करते हैं । वे ही अंतिम शरण हैं । पर वे केवल आप जैसे पावन व पवित्र आत्माओं की ही पुकार सुनते हैं ।

*Ram lives in Compassion. HE IS MAA KARUNAMAI. Spread this compassion all around as an attribute of Eshta. This will help us discovering Ram around us and within us.*

राम करुणा में निवास करते हैं । वे माँ करुणामई हैं । यह करुणा अपने इष्ट के गुणों के अंतर्गत सब ओर विस्तृत कीजिए । यह हमें राम को सब ओर व अपने भीतर अनुभव करवाएँगे ।

\*\*\*

*We are part of Divine creativity.If we realize this then it means we are in Rama-consciousness that only knows to love and respect all selflessly. EVERYTHING IS RAM, EVERY MANIFESTATION IS RAAM, EVERY DECAY AND RECREATION IS RAM. This is Ramamayeness Swamiji Maharaj Shree wanted us to realize. Raaaaauuum*

हम दिव्य रचना के अंग हैं । अगर हम यह अनुभव कर लें इसका मतलब कि हम राममय चेतना में हैं जो सबको निस्वार्थ भाव से केवल प्रेम व आदर देना जानते हैं । सबकुछ राम है, सब क्षय व विक्षय राम है । यही राममय भाव स्वामीजी महाराज श्री ने चाहा कि हम अनुभव करें । राम

\*\*\*\*

*Nishtha sey Ram Naam jaap ko jodey to esht ko hum anubhav kar saktey hai. Pran jo pavan hai wahi Ram sey Pranay karta hai.*

निष्ठा से राम नाम जाप को जोड़िए तो इष्ट को हम अनुभव कर सकते हैं। प्राण जो पावन हैं वही राम से प्रणय करता है।

\*\*\*

*Raam Naam manifests in eternal Nirakar jyot through the intensity of ajapa jaap which lights up inner most consciousness Or RAAAM CHETNA.*

राम नाम गहन अजंपा जाप से शाश्वत निराकार ज्योत के रूप में प्रत्यक्ष होते हैं जो हमारे अंतःकरण की चेतना या राम चेतना को प्रकाशित करता है।

\*\*\*

*Eshta ko antarkarne mey khojeeye. Guruvareshu ney aapkey andar Shree Ram Darbar ko pratishtheet kiya tha. Ye sarvada yaad rakey. RAAM NAAD gunjey hamesha aisa ho antar karan mey andesha.*

इष्ट को अंतःकरण में खोजिए। गुरुवारेशु ने आपके अंदर श्री राम दरबार को प्रतिष्ठित किया था। यह सर्वदा याद रखिए। राम नाद गूँजे हमेशा ऐसा हो अंतःकरण में अंदेश।

\*\*\*

*Swaym mey Ram ko basana hai to swaym ko mandir rupi banakey aap shree ko samman karna jaruri hai. Pure self paves the path to make ourselves RAMALAYA.*

स्वयं में राम को बसाना है तो स्वयं को मंदिर बनाकर स्वयं को सम्मान करना ज़रूरी है। स्वयं को रामामय बनाने के लिए पवित्र आत्मा मार्ग प्रशस्त करता है।

\*\*\*

*Ram naam jaap jo brahmamuhurt mey hota hai waha vishesh hai. Ram deteny hain ye Naam daan, ye Shree Naad dhyan daan.*

राम नाम जाप जो ब्रह्ममूर्त में होता है वह विशेष है। राम देते हैं यह नाम दान, यह श्री नाद ध्यान दान।

\*\*\*

*Antarkaran mey jab swacchata nivas karey tab maan na eshwar ney aapko sweekara hai.*

*Prem Bhava, Bhakti Bhava, Ram Bhava  
are the Bridges of Eternity.*

*Ram Naam Chintan Chaitanya.*

*Ajeevan Raam Naam Simran  
Jyotirmay baney antarkarn.*

*Namo Namaya namha  
Nirakar Raamaye Namha  
Jyoti swarup naamaye naha  
Shree Ram Naaadaye Namha.  
Param Guru Raamaye namha.*

*अंतःकरण में जब स्वच्छता वास करे तो मानना कि ईश्वर ने आपको स्वीकारा है।*

*प्रेम भाव, भक्ति भाव, राम भाव अनंत के सेतु हैं।*

*राम नाम चिंतन चैतन्य*

*आजीवन राम नाम सिमरन*

*ज्योतिर्मय बने अंतःकरण*

*नमों नमाय नमः*

*निराकार रामाय नमः*

*ज्योतिस्वरूप नमाय नमः*

*परम गुरु रामाय नमः*

\*\*\*

*I encountered most problems when I thought I would handle my life, my world. Then I could conclude that it is never I rather it is HE who does it all. Maharishi taught this concept of complete submission in RAM NAAM ARADHANA.*

*Delete the I to be HE. HE IS RAAAAUUUM.*

मैंने सबसे ज़्यादा परेशानियों का सामना तब किया जब मैंने सोचा कि मैं अपनी ज़िंदगी , व संसार को सम्भाल सकता हूँ ।पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वह मैं नहीं बल्कि वे ही हैं जो सब कर व करवा रहे हैं ।महर्षि ने राम नाम आराधना पर सम्पूर्ण समर्पण का यह विचार दिया । मैं को मिटा दीजिए वह बनने के लिए । वह राम है ।

\*\*\*

*Respect, Reverance has an inbuilt content! Do you know what it is?*

*It's PREM BHAVA. RAM NAAM ARADHAK achives Sadhana through Shraddha Samman and Samparpan. Maharishi always reminded apart from respecting parents and elders, all girls, women must be respected especially by women be they are daughter-in-law or mother-in-law. Find RAM in everyone our sadhana will be on fast track for sure. RAM RAM.*

आदर, श्रद्धा एक स्वयमेव सामग्री हैं । क्या आप जानते हैं कि वे क्या हैं ?

वे प्रेम भाव हैं । राम नाम साधक साधना की ऊँचाई श्रद्धा , सम्मान और समर्पण से प्राप्त करता है । महर्षि से हमें सदा स्मरण करवाया कि माता पिता व बुजुर्गों के अलावा सभी स्त्रियाँ व महिलाओं का सम्मान होना अनिवार्य है , खासकर स्वयं महिलाओं द्वारा चाहे वे बहुएँ हैं या सास । राम को सभी में देखिए , हमारी साधना बहुत तेज़ रफ़्तार से बढ़ेगी ! राम राम ।

\*\*\*

*Swamiji Satyanandji Maharaj Shree awakened our eternal spiritualism through Ram Naam Nirakar Jyoti Swarup upansana. It was adwaitavad and unshackling from the religious enchainment of rituals, dogmas and doctrines. As Naam sadhana is all about One Name who is Nirakar Eshta and Self. Such sublime is the gift from our gurujans. Raaaaaaaaaaaaaaaauuuuuuuum.*

स्वामी जी सत्यानंद जी महाराजश्री ने हमारी दिव्य आध्यात्मिकता को राम नाम निराकार ज्योति स्वरूप उपासना द्वारा जागृत किया। वह अद्वैतवाद है, धार्मिक रूढ़ीवाद, औपचारिकताओं से परे। नाम साधना तो केवल एक नाम की है जो निराकार इष्ट व आत्मा हैं। ऐसी दिव्य भेंट हमारे गुरुजनों ने दी है। राम

\*\*\*

*Satsang is socio religious pulsation. SADHANA is journey of the self. Siddhi when begotten is like on the top of the cliff all alone and not looking upto for coming back to the base camp rather at the top one spread hands skyward to be in prakriti Siddhi. Eternity merges as we all alone upto HIM. Ram Naam Sadhana is the journey of the soul.*

सत्संग एक सामाजिक धार्मिक धड़कन है। साधना आत्मा की यात्रा है। जब सिद्धी प्राप्त होती है तब वह ऐसे होता है कि आप चोटी पर हैं बिल्कुल अकेले और वापिस धरातल आने की नहीं सोचते अपितु आकाश की ओर अपने हाथ फैला कर प्रकृति की सिद्धी की ओर देखते हैं। शाश्वतता विलीन हो जाती है जब हम पूर्ण रूप से अकेले परमेश्वर तक बढ़ते हैं। राम नाम साधना आत्मा की यात्रा है।

\*\*\*

*Confide to God. Talk in depth to yourself. Raam residing in you is your best friend and listens to you in minute details without getting irritated as HE is your sakha for many births. Only we need to be conscious about it.*

परमेश्वर से अपनी गुप्त बातचीत कीजिए। गहराई से अपने साथ वार्तालाप करें। राम जो आप में विराजमान हैं वे आपके सखा हैं और आपकी सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें भी सुनते हैं, बिना चिड़चड़ाहट के क्योंकि वे आपके जन्म जन्मों के सखा हैं। केवल हमें ही इस बात से जागरूक होना है।

\*\*\*

### ***Raam Naam key of Universal Wisdom***

*Raam Naam is Consciousness  
The Chitanya bhava  
It emits touches upon  
High frontiers of knowledge and wisdom.*

*Shree Raam is ultimate Chetna  
Eternal knowledge corridor  
HE remains  
As HE is divine Supreme*

*Carries the brilliance of light  
That lights up  
Heart of Ram Naam sadhak  
With bliss of knowledge  
Of eternity.  
Raam naam avataram  
Remains universal wisdom itself.  
Such divine was the gift by  
Our most revered  
Shree Shree Swamiji Maharaj Shree.  
Guru kripa allows  
This encounter of Universal knowledge  
Through Naad aradhana  
And nirakar jyot sadhana  
Within the celestial thread of Naaam  
Raaaaaaaaaaaauuuum.*

## **राम नाम सार्वभौमिक ज्ञान की कुंजी है**

*राम नाम चैतन्य भाव*

*उत्सर्जन करता है*

*वह ज्ञान व बुद्धिमत्ता की*

*उच्च सीमाओं को छूता है*

*राम नाम चेतना है*

*व चैतन्य भाव विस्तृत करता है।*

*श्री राम सर्वोच्च चेतना है*

*वे दिव्य गलियारा रहते हैं*

क्योंकि वे परम दिव्य हैं और प्रकाश

का तेज़ को वहन करके

राम नाम साधक का हृदय

शाश्वतता के ज्ञान आनन्द से

प्रकाशित कर देते हैं ।

राम नाम अवतरण

स्वयं ही सार्वभौमिक ज्ञान रहते हैं ।

हमारे परम पूज्य श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री

का दिव्य उपहार है ।

गुरु कृपा नाद आराधना व

निराकार जोत साधना द्वारा

नाम के दिव्य सेतु के संग

सार्वभौमिक मेल

की अनुमति देती है ।

\*\*\*

*Ananant ashru rup Ram Naam sadhana makes the Bhava ashan where Naam Sadhak sits to do Ram Naam ardhana.*

*Swamiji Maharaj Shree taught us Ram Naam upasana is Bhav Sadhana and getting siddhi is diminishing self ego in the tunnel of Shree Naad to Anhad Naad. The yatra of eternity.*

*Raaaauuum.*



अनंत अश्रु रूप राम नाम साधना, भाव आसन बना देता है जहाँ नाम साधक बैठ कर राम नाम आराधना करता है ।

स्वामी जी महाराज श्री ने सिखाया कि राम नाम उपासना भाव साधना है और जब हम श्री नाद से अनहद नाद की ओर बढ़ते हैं तब सिद्धी को पाना ही अहं को शून्य करना है । अनंत की यात्रा । राम

\*\*\*

### **RAM-The Eternal Constant**

*O my Param Guru  
Param Purush Raaaum.  
You are supreme amidst divinity.  
Your attributes are most merciful  
Yet most powerful supreme  
Yet you are beyond attributes  
Nirguna Nirakar Jyotiswarup Raaum.  
You are immortal Eshwara  
You are constant  
With no beginning or any end.  
Raam Naad  
Anhad Naad  
Exists eternally  
As ultimate truth  
Raaaaaam.  
He is paramatman  
Timlessness He represents  
He never changes  
As constant is His nature  
Only that which manifests are lila  
As Raaaum is Adi naad Shree  
Exists eternally.  
Raaaaaaaaaaaaaam  
Here at His lotus feet  
Parinirvana merges  
With eternal stillness.*

**राम- नित्य शाश्वत**

ओ मेरे परम गुरु  
परम पुरुष राम ।  
आप दिव्यता में सर्वोच्चतम हैं  
आप अतिशय करुणावान हैं  
सर्वशक्तिमान परमेश्वर  
पर आप सर्व गुणों से पार हैं  
निर्गुण निराकार ज्योतिस्वरूप राम ।  
आप अनश्वर ईश्वर हैं  
आप नित्य हैं  
जिसका न कोई आरम्भ न अंत है  
राम नाद  
अनहद नाद  
का अस्तित्व बाहरी है  
सर्वोच्चय सत्य राम ही हैं ।  
वे परमात्मन हैं  
वे समयातीत हैं  
वे कभी नहीं बदलते  
उनकी प्रकृति नित्य जो है  
जो राम प्रत्यक्ष लीला के रूप में

प्रकट होता है वह आदि नाद श्री

उसका अस्तित्व बाहरी ही है ।

राम

उनके श्री चरण कमल पर

परिनिर्वाण अनंत स्थिरता

में विलीन होता है ।

\*\*\*

*RAM NAAM NAAD RUPA is TIMELESS ENTITIY wherefrom BENEFIC TRUTH OF ETERNITY MANIFESTS. Here PARINIRVANA HAPPENS FOR CELEBRATED SOULS LIKE SHREE SHREE SWAMIJI SATYANANDJI MAHARAJ SHREE. Such is the Naad eshta's love for Sant Shree who gave us Tarak mantra Raaaum.*

राम नाम नाद रूप एक समयातीत सत्ता है जहाँ से अतिलाभकारी शाश्वत सत्य की अभिव्यक्ति होती है । यहाँ परिनिर्वाण उच्च शृण्खला जैसे श्री श्री स्वामीजी सत्यानन्द जी महाराजश्री जैसी आत्माओं के लिए सम्भव बनता है । ऐसा है नाद ईष्ट का संत श्री के लिए प्रेम जिन्होंने हमें तारक मंत्र राम दिए ।

\*\*\*

*Shree Raaum is the Neutral entity of absolute truth. HE is Divine Supreme. The cosmos of SATYA is built upon you O RAAAUM. You are celestial creator and beyond any maya. Through Naam Aradhana Swamiji Maharaj Shree reached this state of absoluteness of RAAAUUUUMMAYE SATYA.*

श्री राम परम सत्य के निष्पक्ष सत्ता हैं । वे परम दिव्य हैं । सत्यता का ब्रह्माण्ड ओ राम आपश्री पर ही निर्मित हुआ है । आपश्री ही माया से पार शाश्वत रचयिता हैं । नाम आराधना द्वारा स्वामीजी महाराजश्री इस राममय सत्य के चर्मसीमा तक पहुँचे ।

\*\*\*

*BHAV RUP IS RAAAUM. HE IS PARAM PURUSH SHREE RAAUM. HE IS ABSOLUTE ETERNITY where SWAMIJI MAHARAJ SHREE MERGES.*

भाव रूप राम हैं । वे परम पुरुष श्री राम हैं । वे ही परम शाश्वत्ता हैं जहाँ स्वामीजी महाराज श्री विलीन होते हैं ।

\*\*\*

*RAM RAAS is nectarine truth of three loka Swamiji Maharaj Shree proclaimed. Ram Naam takes us to this holistic ONENESS of RAAMATATTWAS which is singular divine felt at pluralistic pulses as ALL ARE RAAAAUUM.*

स्वामीजी महाराजश्री ने उद्घोषणा की कि राम रस तीनों लोकों का मधुतम सत्य है । राम नाम हमें रामतत्व की तक ले जाता है जो कि विलक्षण दिव्य होते हुए समग्र एकता बहु स्पंदनों में महसूस होता है क्योंकि सभी राम हैं ।

\*\*\*

*Raam naam is eternal entity of Ultimate kind and the prem bhava for Raam Swarup which is cosmic truth and Swamiji Maharaj Shree remained part of this unbroken chain of Nirakar which is AKHANDA PRAKRITI always manifesting in sublime eternity---oneness of RAAAAUUM*

राम नाम सर्वोच्च शाश्वत सत्ता है और राम स्वरूप जो कि दिव्य सत्य हैं , उनके लिए के लिए प्रेम भाव तथा स्वामी महाराजश्री इस निराकार जो कि अखण्ड प्रकृति है दिव्य शाश्वत्ता में सदा अभिव्यक्त होने वाली अभंग श्रृंखला है- राम का ऐक्य ।

\*\*\*

*Oneness with Saint like Swamiji Maharaj Shree is actually an eternal skahkshatkar with Nirakar Raam. Naam sadhak must realize this at this commemorative hour.*

स्वामीजी महाराजश्री जैसे संत के साथ ऐक्य यथार्थ में निराकार राम के साथ दिव्य साक्षात्कार ही है । नाम साधक को इस स्मरणीय पल पर यह अनुभव करना चाहिए ।

\*\*\*

***RAAM DHAAM is the abode of Sadguru.***

*VISHWAROOP DARSHAN happens at this hour of PARI NIRVAN OF SWAMIJI MAHARAJ SHREE*

*PARINIRVAN IS TIME OF CELESTIAL CONJUNCTIONS. MAUN allows us to fathom the ANHAD Naad of this TIMELESSNESS of TIME.*

## राम धाम सद्गुरु का निवास स्थान है

स्वामीजी महाराजश्री के परिनिर्वाण के इस संयोजक समय में विश्वरूप दर्शन होते हैं।

परिनिर्वाण दिव्य संयोजक का समय है। मौन हमें समय के समयातीत के अनहद नाद की गहराई को अनुभव करवाता है।

\*\*\*

### CHINTA TO CHAITANYA BHAVA

*Hey Swamiji Maharaj Shree  
Your RAM NAAM DAAN  
has changed the scenario  
of Mind as conflicts of thoughts  
emotional low and high of mind and Manas  
called CHINTA and DUSHCHINTA  
you have taken away  
Chitta has become pure  
as Chaitanya Ram Bhava prevails  
such is RAMAMAYENESS  
our Baba gave.  
Raaaaauuuuuuum*

### चिंता से चैतन्य भाव तक

हे स्वामीजी महाराज श्री

आपश्री के राम दान ने

मन का दृष्टिकोण ही बदल दिया है

जैसे मन के विचारों के द्वंद्व का भावमय

उताव चढ़ाव जिसे चिंता व दुश्चिंता कहते हैं

*उसका आपने निवारण किया*

*और चित पवित्र बना*

*जैसे चैतन्य राम भाव प्रबल होता है*

*ऐसा राममय भाव बाबा ने हमें दिया ।*

\*\*\*

### **MAYA YOU REMOVED O SWAMIJI MAHARAJ SHREE**

*I was all the time  
playing the AHAM LILA  
for several Births  
until you showered SUNAAM in RAM NAAM.  
You O my Swamiji Maharajji  
removed our doubt and illusion  
as today I fear not death  
I know you are there  
to take away from the cyclic riddle  
of life and death.  
such divine and Kripalu is  
my Sadguru.*

### **ओ स्वामी जी महाराजश्री आपने माया का अनावरण किया**

*में कितने जन्मों से*

*हर समय अहं लीला ही खेल रहा था*

*जब तक आपश्री ने राम नाम में*

*सुनाम नहीं बरसाया*

*आपने ओ मेरे स्वामी जी महाराज जी*

*संशय व माया का विच्छेदन किया*

*और आज मुझे मृत्यु का भय नहीं*

*क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप हैं*

*मुझे जन्म मरण के आवागमन से*

*मुक्त कराने के लिए।*

*ऐसे दिव्य और कृपालु हैं*

*मेरे सदगुरु!*

\*\*\*

### **DAAN OF RAAM JAAP**

*Hey Swamiji MAHARAJ SHREE  
I was a floating being  
smeared with fallen path and paap  
you gave me RAAM JAAP  
as SHABDHAK or NAAD RAM  
which has absorbed all my Paap  
such merciful and paramdayalu you are  
O my Swamiji Maharaj Shree.*

*O Shree Shree Swamiji MAHARAJI SHREE  
accept my prayer every time  
my mind does a pranam  
my body does a namashkar  
my manas submit the self to your sacred space  
your abode  
RAAAMM NAAM SHABDO KUTIR.  
Remove my ego  
layer them with Guru Vandana instead.  
You are my Raaam my Sadguru Parma Guru.  
keep me at your feet*

*even as dust particle.  
I am your charndhuli O Swamiji Maharaj Shree.*

\*\*\*

## **राम जाप का दान**

हे स्वामी जी महाराज श्री  
मैं एक यूहीं बहता हुआ जीव था  
पाप पंक से लिपटा हुआ  
आपश्री ने मुझे राम जाप  
शाब्दिक अथवा नाद राम प्रदान किया  
जिसने मेरे सभी पाप अवशोषित कर लिए  
ऐसे करुणावान व परम दयालु हैं आप  
ओ मेरे स्वामी जी महाराज श्री  
ओ श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री  
कृपया मेरी प्रार्थना हर समय  
स्वीकार कीजिएगा  
जब मेरा मन प्रणाम करे  
मेरी देह नमस्कार करे  
मेरा मानस स्वयं को आपके पावन धाम  
आपके निवास स्थान  
राम नाम शब्द कुटीर



में अर्पित करे ।

कृपया मेरा अहम् मिटाइए

उसकी जगह गुरुवंदना का लेप

लगा दीजिए ।

आप मेरे राम मेरे सदगुरु परमगुरु

कृपया मुझे अपने श्री चरणों में चाहे

धूलि ही बनाकर रखिएगा ।

में आपकी चरणधूलि हूँ

ओ स्वामीजी महाराजश्री ।

\*\*\*

### **GYAN SHROT SADGURU**

O my Sadguru  
you gave me consciousness  
you made the realization of  
atmantattwa  
ramatattwa  
I shall never forget this  
GYANASHISH of yours.  
You are our wisdom  
you are the eternal facilitator of  
RAMAMAYENESS  
which is DIVYA GYAN  
hey Maha prabhu  
SWAMIJI Maharaj Shree  
at your feet always we seek  
ram bhava and eternal wisdom  
O lord.

*O my Sadguru  
Sewkaro anant prem mama  
As you have gifted me eternal gift  
RAM NAAM  
The Tarak Mantra of Brahmand.  
Yet never fasten us in rituals  
And dogmas  
Never dictated dos and dont  
Such is the magnanimous Raam  
Who himself cleanses  
Mends and corrects our aberration  
Even pardon our karma  
Such divinely benefic is my Raam  
You gave us Dharma bodh  
Laid down principles of life  
Taught us disciplines  
Yet always wanted  
we must discharge our duties  
Karma is first  
Spiritual emancipation can happen without renouncing life  
Such is the grace of Ram Naam upasana.  
This spiritual sublimity  
Emerges within and flower  
At your holy lotus feet  
O our loving Swamiji Maharaj Shree.  
RAAAAAAAAAUUUUUM*

**ज्ञान स्रोत सदगुरु**

*ओ मेरे सदगुरु*

*आपश्री ने मुझे चेतना दी*

*आपश्री ने ही मुझे*

*आत्मतत्व व*

*रामतत्व से अवगत करवाया*

में यह आपश्री का ज्ञानाशीश  
कभी नहीं विस्मरण कर सकता।  
आप ही हमारे ज्ञान हैं  
आप ही राममय भाव के दिव्य  
दाता हैं  
जो कि दिव्य ज्ञान है  
हे महाप्रभु  
स्वामीजी महाराज श्री  
आपश्री के श्री चरणों में  
हम सदा राम भाव व अनंत ज्ञान प्राप्त करें  
हे प्रभु!  
ओ मेरे सदगुरु  
स्वीकारो अनंत प्रेम मम्  
जैसे आपने मुझे दिव्य उपहार दिया  
राम नाम  
ब्रह्माण्ड का तारक मंत्र ।  
पर कभी भी हमें अनुष्ठानों  
व हठधर्मिता में नहीं बाँधा  
कभी यह करना है यह नहीं करना है

ऐसे उपदेश नहीं दिए  
ऐसे हैं विशाल हृदय राम  
जो स्वयं शुचिता  
सुधार व हमारी गलतियों को  
ठीक कर देते हैं  
हमारे कर्मों तक को क्षमा कर देते हैं  
ऐसे दिव्य उदात्त हैं मेरे राम  
आपने हमें धर्म का बोध करवाया  
जीवन के सिद्धान्त रखे  
अनुशासन सिखाया  
पर सदा चाहा कि हम  
अपने कर्तव्यों को अच्छे से निभाएँ।  
कर्म सबसे पहले  
आध्यात्मिक मुक्ति जीवन के त्याग किए  
बिना भी सम्भव है  
राम नाम उपासना की ऐसी कृपा है।  
यह आध्यात्मिक उदात्तता  
भीतर उजागर व प्रफुल्लित होती है  
आपके पावन श्री चरणों में

*ओ हमारे प्यारे स्वामी जी महाराजश्री*

*रामममममममममममममममममम*

\*\*\*

### ***Alauki Raam Naad aishwarik Sur jhankar***

*O my Swamiji Maharaj  
You were given diksha  
By Param Guru Shree Raam Himself  
As you ansha of RAM only.  
Nirakar, shabdik, alukik abha.  
And ram dhun  
With the commandment  
"Ram Bhaj Ram Bhaja"  
Became an eternal grace  
And sublime atmik consciousness  
For your billions of Ram Naam sadhak.  
Ram Jhankar  
The eternal vibration of cosmos  
connecting all  
as terars roll with Ram Dhun.  
Ram Naam jaap  
Creates a music of sublimity  
in jeevatman.  
The simran in heart  
Whisper in lips become  
an aatmik Prayer for others.  
Such loving way of  
Raam naad sur jhankar  
you reside in us  
And every minute particle of ours  
Sing ram dhun  
this is your akaran pyar  
O my dear Swamiji Maharajji.  
You are eternal ram dhun  
Eternal jyot where silence ends.  
Jai Shree Ram  
Jai Shree Raam  
Rammmm raaaaaaaam  
Jai jai Raaam*

## अलौकिक राम नाद एश्वारिक सुर झंकार

ओ मेरे स्वामीजी महाराज जी

आपश्री को दीक्षा परम गुरु श्री राम द्वारा स्वयं दी गई

क्योंकि आपश्री राम के ही अंशी हैं

निराकार, शाब्दिक, अलौकिक आभा

और राम धुन

दिव्य आदेश

राम भज राम भज

खरबों राम नाम के साधकों के लिए

जो बन गई अनंत कृपा

व दिव्य आत्मिक चेतना ।

राम झंकार

ब्रह्माण्ड की शाश्वत गूँज

सब को जोड़ देती है

जैसे राम धुन के संग अश्रु बहने लगते हैं ।

राम नाम जाप जीवात्मा में

दिव्यता के संगीत की रचना करता है ।

हृदय में सिमरन

होंठों पर धीमे से बोलना

दूसरों के लिए आत्मिक प्रार्थना बन जाती है ।

ऐसा प्यारा तरीका है

राम नाम सुर झंकार का ।

आप हममें विराजते हैं

और हमारा रोम रोम

राम धुन गाने लग जाता है ।

यही आपश्री का अकारण प्यार है

ओ मेरे प्यारे स्वामी जी महाराज जी

आप ही शाश्वत राम धुन हैं

शाश्वत ज्योति जहाँ मौन का अंत होता है।

जय श्री राम

जय श्री राम

राम राम

जय जय राम

\*\*\*

**Divya Jyoti Swamiji Maharaj Shree**

*Hey my loving Baba  
My Swamiji Maharaj Shree  
You have lit up eternal jyot in us  
Which is guiding star in our sadhana  
Ram Naam is subtle diya  
That make everything happen  
And all karma become pious  
And a possibility.  
This is your greatest gift  
O my Swamiji Maharaj Shree.  
You are anant, yet you are sukshma  
You are Raammamaye abha  
The divya jyoti  
Hey Sadguru.*

### **दिव्य ज्योति स्वामी जी महाराज श्री**

*हे मेरे प्यारे बाबा*

*मेरे स्वामीजी महाराज श्री*

*आपश्री ने हममें शाश्वत ज्योति जगा दी*

*जो कि हमारी साधना में मार्गदर्शक बनी*

*राम नाम एक सूक्ष्म दीया है*

*जो सब कुछ सम्भव कर देते हैं*

*और हमारे सभी कर्म पावन व सम्भव हो जाते हैं।*

*यह आपश्री की अमूल्य भेंट है*

*ओ मेरे स्वामी जी महाराज श्री*

*आप अनंत हैं, फिर भी सूक्ष्म*



आप रामामय आभा हैं

दिव्य ज्योति

हे सदगुरु !

\*\*\*

### **PRAYER FOR GRATITUDE**

Hey Sadguru  
Hey Shree Shree Swamiji Maharaj shree  
we must remain in complete submission  
To Him to Raam and to you our Sadguru.  
Its you Swamiji Maharaj Shree  
Who Salvaged us from dirt  
Ang Gave us Nirakar Raam  
We can't forget this loving gesture ever  
Hey Mahaguru.  
It's your eternal love  
that is purifying every moment  
and manifestation of ram bhavana  
happening all the time  
In the hearts of all Naam Sadhak.  
Such gracefully you reside in all.  
Raam Naam yoga and siddhi  
Is your aseem kripa  
Hey GuruVareshu.

### **कृतज्ञता के लिए प्रार्थना**

हे सदगुरु

हे श्री श्री स्वामीजी महाराज श्री

हमें सदा राम और आपश्री हमारे सदगुरु के

सम्पूर्ण समर्पण में रहना है

वे आप ही हैं स्वामी जी महाराज श्री  
जिन्होंने हमें धूली से निकाला  
और हमें निराकार नाम का प्रसाद दिया  
हम आपश्री का ये प्रेम भरा भाव  
कभी भी नहीं भूल सकते  
हे महागुरु।  
यह आपश्री का अनंत प्रेम है  
जो हर क्षण हमें पवित्र कर रहा है  
तथा राम भावना का प्रयत्कीकरण  
साधकों के हृदय में हर पल हो रहा है।  
ऐसी इनायत से आप सभी में विराजते हैं।  
राम नाम योग व सिद्धी  
आपश्री की असीम कृपा है  
हे गुरुवारेशु!

\*\*\*

**AT YOUR FEET O MY BELOVED SADGURU**

O my Maha Guru  
O my Sadguru  
O eshwar swarup  
Shree Shree Swamiji Satayandji Maharaj Shree  
Anant anant Pranam to you O Baba

*O my loving Pujya shree naam  
The absolute truth SATYA  
And eternal BLISS called ANANDA  
Is your conceptual sandhi  
Va yuktakshar avataran  
Koti koti Pranam  
On this timeless zone of  
Parinirvanan  
The day of you become Raam Himself  
Such auspiciousness  
Grace even the NOW  
As all your children bow beneath  
Thy lotus feet for eternal gratitude  
And being rescued by your loving  
Gesture of Akaran Prem  
So that we all live with  
the Tarak Mantra Raaaum.  
The bliss, the sadhana paddhati and  
Siddhi all you gave to all  
Some realized it, some had not,  
And some wasted it.  
Yet you pardon all  
love all  
And just come whenever  
Some soul calls you  
So dayalu Sadguru  
Today He is Ram  
Blessed us for ever  
Hamey chira kritagya rakhna  
Hamey apney charno mey rskhna  
Hey hamare pyarey baba  
Tumhara pyar sabse pyara  
Ramm naam sabsey nyara.  
Aatmik pranam sewekaro  
Hey Swamiji Maharah Shree  
You are aditya, you are alaukik  
You are sarva vyapi  
Hey my loving Baba.  
Praannnnnnnnnam.*

**आपश्री के चरणकमलों में ओ मेरे परम प्यारे सदगुरु**

ओ मेरे महागुरु

ओ मेरे सदगुरु

ओ ईश्वर स्वरूप

श्री श्री स्वामीजी सत्यानंदजी महाराज श्री

आपश्री को अनंत अनंत प्रणाम ओ बाबा

ओ मेरे प्यारे पूज्य श्री नाम

सम्पूर्ण सत्य

व अनंत आनंद

ही आपश्री की वैचारिक संधी है

वा युक्तेश्वर अवतरण

इस समयातीत परिनिर्वाण के अवसर पर

कोटि कोटि प्रणाम ।

इस दिन आपश्री स्वयं राम ही हो गए थे

ऐसी माँगलिक कृपा अब भी

जैसे आपश्री के परिवार के समस्त बच्चे

आपश्री के चरणकमलों पर दिव्य कृतज्ञता के साथ

नत्मस्तक होते हैं

और उन सभी की आपश्री के प्रेममय अकारण प्रेम

के संकेत पर रक्षा हो रही है

केवल इसलिए कि हम सब  
तारकमंत्र राम के संग रहें।  
आनंद, साधना पद्धति व सिद्धी  
आपश्री ने सब को दिए  
कुछ ने अनुभव किया, कुछ ने नहीं  
और कुछ ने व्यर्थ गवाँ दिया।  
पर आपने सबको क्षमा किया  
प्रेम दिया  
और जब भी कभी भी किसी आत्मा ने  
आपश्री को पुकारा है तो तुरन्त आ जाते हैं  
इतने दयालु सदगुरु हैं  
आज आप राम हैं  
आपने सदा के लिए कृपा बरसाई  
कृपया हमें चिर कृतज्ञ रखिएगा  
कृपया हमें अपने चरणों में रखिएगा  
हे हमारे प्यारे बाबा  
तुम्हारा प्यार सबसे प्यारा  
राम नाम सबसे न्यारा  
कृपया आत्मिक प्रणाम स्वीकारो

हे स्वामी जी महाराज श्री

आप अद्वितीय हैं, आप आलौकिक हैं

आप सर्वव्यापी हैं

हे मेरे प्यारे बाबा

राम

\*\*\*

### **Ram Bhava Prarthana PEELED OFF.**

*O MY LOVE O MY RAAM TEACH ME IT'S INNER MEANINGS*

*Ram Naam Sadhana is prarthana.*

*Attributes or Prakriti of Ram is Prem*

*Mercifulness is the core of innocence*

*Brightness of illuminated mind prays for others.*

*Healer of eternal kind is Raaaum realize it*

*Aatmik oneness makes wish a prayer.*

*Vibrations from jaap mala connects nirakar Raaaum*

*Am, I and mine are erased or diluted to be one in Prayer to Raam. As Ram Himself prays with you and being in you to Raam.*

*Precision of mind with cosmic Naad Raam provides connection for prayer.*

*Reasoning of our world ceases and Alaukik comes to the fore.*

*Aajapa jaap atunes the jeevatman to get bliss from Gurujans who paves the path for prarthana siddhi*

*Resonance of Raaam culminates into eternal brilliance that grants our prayer.  
Tears and innocence of bhava furthers prayer. Maharishi did achived this always  
Holy thought,pious deed and Sattwik bhav go towards Ram Naam sadhana.  
Nothingness of self and complete surrender is pre requisites for sadhana  
At the feet of Param Guru Raam all wishes are granted. Even out of world solution He  
gives..such loving is My Raaaaaaauuum.*

\*\*\*

### **राम भाव प्रार्थना का अनावरण**

ओ मेरे प्यारे ओ मेरे राम मुझे इसका गहन अर्थ समझाइए

*राम नाम साधना प्रार्थना है ।*

*राम का स्वभाव प्रेम है ।*

*सरलता का मूल है क्षमावान होना ।*

*जागरूक मन की दीप्ति दूसरों के लिए प्रार्थना करती है ।*

*यह अनुभव करो कि शाश्वत मन के वैद्य राम ही है ।*

*आत्मिक ऐक्य प्रार्थना की इच्छा करता है ।*

*जाप की माला की तरंगें निराकार राम से जोड़ती हैं ।*

*राम से प्रार्थना करने पर मैं, मेरा और मुझे सब मिट जाता है या एक बन जाता है ।*

*ब्रह्माण्डीय नाद से मन की शुद्धता प्रार्थना से जुड़ने का साधन बनाती है ।*

*संसार के सभी तर्क वितर्क समाप्त हो जाते हैं जब राम सामने आ जाते हैं ।*

*अजपा जाप जीवात्मा को गुरुजनों से जोड़कर आनंद दिलवाता है, और गुरुजन प्रार्थना सिद्धी का मार्ग  
सशक्त करते हैं ।*

राम की गूँज एक शाश्वत प्रकाश में रूपांतरित हो जाती है जो हमारी प्रार्थना स्वीकार करती है ।

भावमय अश्रु व सरलता प्रार्थना को समर्थन देते हैं । महर्षि ने सदा यह प्राप्त किया ।

पावन विचार, पवित्र कर्म और सात्विक भाव राम नाम साधना की ओर ले जाते हैं ।

स्वयं का पूर्ण रूप से शून्यपन और सम्पूर्ण समर्पण साधना के पूर्व की आवश्यक वस्तुएँ हैं ।

परम गुरु राम के श्री चरणों में सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं ।

अनपेक्षित समाधान वे देते हैं..... ऐसे प्यारे हैं मेरे राम

\*\*

*In Raam Bhava I was contemplating... but just right now I HAVE REALIZED Bhakti or Prem Bhava is just not simply BLISS but AN ETERNAL PRAYER. RAAM RAAAM*

राम भाव में मैं मनन कर रहा था.... किंतु अभी मैंने अनुभव किया कि भक्ति या प्रेम भाव केवल आनंद नहीं है अपितु एक शाश्वत प्रार्थना है! राम राम

\*\*\*

*I have nothing mine its all yours.I wish my GLANCE can carry my prayer. O my Raam Do ride on my glance Hey prabhu. Kripa karo. Like every breathe, Every Glance and Every thought I must live in you and for you O my Sarvey Mangala Maa.*

मेरा कुछ नहीं है सबकुछ आपका है । काश मेरी दृष्टि मेरी प्रार्थना ले जाती ।ओ मेरे राम कृपया मेरी दृष्टि पर विराजमान हो जाइए , हे प्रभु ! कृपा कीजिए । हर साँस की तरह , हर दृष्टि व हर विचार में मुझे आपमें व आपके लिए ही रहना है ... ओ मेरी सर्वे मांगल्य माँ ।

\*\*\*

**Kripa karo Mere Raaum**

*O lord of all lords*

*O my Raaaum*

*You are supremely pious and benefic Divine*



O my Raam  
Show me  
The path of righteousness  
Show me the divine attributes  
Of eternal innocence  
Show me how to touch your  
Most merciful chord  
So that I love all indiscriminately  
Selflessly  
Show me the attributes of compassion  
So that I imitate you O my Raam  
To pardon all  
Keep me hidden O My Maa  
Karuna be my first nature  
Selflessly I must pray and seek pardon  
For all those...  
No matter how they treated me.  
Make me yours..O Raaam  
Make my life a Prayer for others  
I need nothing O my Ramm  
I only cry and cry at your feet  
To pardon all  
Rescue all  
Give refuge to all  
Let all be allowed to do  
Ram naam sadhana  
As that even we can't do without  
Your Grace O My Raam!  
O my most loving merciful Raaaam  
Kripa karo kripa karo kripa karo  
My eshta  
My Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuum.

**कृपा करो मेरे राम**

हे सर्वेश्वर

ओ मेरे राम

आप सर्वोच्च पावन हैं और अनंत शुभलाभ

ओ मेरे राम

मुझे सदाचार का मार्ग दिखाइए

मुझे शाश्वत सरलता के

दिव्य गुणों से अवगत कराइए

कृपया मुझे सिखाइए मैं आपकी सर्वोच्च

करुणामई तार को कैसे स्पर्श करूँ

जिससे मैं सभी से निरपेक्ष व निस्वार्थ भाव से

प्रेम कर सकूँ

मुझे करुणा के गुण कृपया दिखाइए

ताकि मैं दूसरों को क्षमा करने में

आपश्री का अनुसरण कर सकूँ

ओ मेरी माँ मुझे कृपया छुपाए रखें

मेरा सर्वप्रथम स्वभाव करुणा ही हो

निस्वार्थ भाव से मैं प्रार्थना व क्षमा याचना करूँ

उन सबके लिए...

इस भाव से अन्भिग्य कि उन्होंने

मेरे साथ कैसा व्यवहार किया ।

मुझे अपना बना लीजिए... ओ राम

मेरा जीवन दूसरों के लिए प्रार्थनमय बन जाए

मुझे कुछ नहीं चाहिए ओ मेरे राम

मैं केवल आपश्री के चरणों में रोता ही रोता हूँ

सबको क्षमा करने के लिए

सबकी रक्षा करने के लिए

सबको शरण देने के लिए

ताकि सभी राम नाम साधना कर सकें

क्योंकि हम वह भी आपश्री की कृपा के

बिना नहीं कर सकते ओ मेरे राम!

ओ मेरे सबसे प्यारे करुणामय राम

कृपा करो कृपा करो कृपा करो

मेरे इष्ट

मेरे राम

\*\*\*

### **Power of Pain**

*Maharishi taught us when pain and suffering visits one should be happy that karmic credit is diminishing!*

*Another aspect He taught me. If one suffers then only depth of suffering is known at experincing level. Thus those soul suffers can do PRAYER most POWERFULLY and with Most passion and RAM can't ignore their cosmic communication. So suffering be always taken as spirit of life living and prospecting a wishful life for others. Sarava sarvashkatimatey..... if done in jaap that can make all the change. One great soul did this for me yesterday so I am still on and sharing this post RAAAAAAUUUUUUUUUUUUUMMM.*

### **पीड़ा की शक्ति**

महर्षि ने हमें सिखाया कि जब कष्ट व क्लेश जीवन में आते हैं तो खुश होना चाहिए कि कर्मों की जमा पूँजी कम हो रही है ।

एक और पहलू उन्होंने सिखाया । अगर किसी को पीड़ा होती है तब केवल कष्ट की गहराई अनुभव के स्तर पर ही जानी जा सकती है । इसलिए ऐसी आत्माएँ यदि तीव्र शक्ति व गहन भावुकता के साथ यदि प्रार्थनाएँ करें तो राम उनकी ब्रह्मांडीय पुकार अनदेखी नहीं कर सकते । इसलिए कष्टों को जीवन जीने की भावना मान कर दूसरों के लिए सद्भावना की प्रार्थना करने में रूपांतरित कर देना चाहिए । सर्व सर्वशक्तिमते ... अगर जाप में किया जाए तब बहुत बदलाव आ सकता है । एक महान आत्मा ने मेरे लिए यह कल किया ... तो मैं आज चल रहा हूँ और आपके साथ यह पोस्ट बाँट रहा हूँ ।

\*\*\*

*Maan ko upasana key Asan banakey Raam naam Dhyana lagana hi Raam key kripa paana hota hai.*

*Maan ko Maa jab bandhti hai tab anayas shakti ko anubhab kar saktey hain.*

मन को उपासना का आसन बनाकर राम नाम ध्यान लगाना ही राम की कृपा पाना होना होता है ।

मन को माँ जब बाँधती है तब अनायास शक्ति को अनुभव कर सकते हैं ।

\*\*\*

*Raam Naam bhav dwara Bhakti aur Shakti key upasana hai.*

*Selfless love can be discovered when we realize and treat our body as nirakar ramalaya.*

राम नाम भाव द्वारा भक्ति और शक्ति की उपासना है ।

जब हम यह अनुभव करेंगे व अपनी देह को निराकार रामालय मानेंगे तब निस्वार्थ प्रेम की खोज कर सकते हैं ।

\*\*\*

*Prakriti knows how to love, care and heal all. Ram Naam takes you nearer to this attributes of Nature.*

प्रकृति जानती है कैसे प्रेम करना है, पोषण करना है और सबको नीरोग्य करना है । राम नाम आपको प्रकृति के इन गुणों के समीप ले जाता है ।

\*\*\*

*Divinity rests in all that heals. Such is Raam Naam karmik adhar.*  
दिव्यता को आरोग्यता में विश्राम मिलता है। ऐसा है राम नाम कार्मिक अधार ।

\*\*\*

*Eternal Prem Bhava is driven by one goal that I seek nothing from Ram but I do aradhana for final merger with Raama tattwa.*

दिव्य प्रेम भाव केवल एक लक्ष्य पर आरूढ़ होता है कि मैं राम से कुछ भी नहीं चाहता केवल राम में विलीन होने के लिए आराधना करना चाहता हूँ ।

\*\*\*

*Rama bhava is beyond the process of bhakti. Rama bhava is the state where oneness is realized. Bhakti initiates this process. e.g I am Bhakta. I do Bhakti. I get Bhava. Then reaching the state I AM THAT. This is crux of Ram Naam Aradhana Swamiji Satyanand ji Maharaj Shree taught us a century back.*

राम भाव, भक्ति की प्रक्रिया के भी पार है । राम भाव वह स्तर है जहाँ एकाकीपन की अनुभूति होती है । भक्ति इस प्रक्रिया का आरम्भ करती है । उदाहरणतः मैं भक्त हूँ । मैं भक्ति करता हूँ । मुझे भाव आता है । तब इस स्तर पर पहुँचना कि मैं "वह" हूँ । यह राम नाम आराधना का मूल है जो हमें स्वामी सत्यानंदजी जी महाराज श्री ने एक सदि पहले सिखाया था ।

\*\*\*

*Power of thought becomes sublime with Raam Naam Chintan. Naam aradhana in another way of realizing a creator in you.*

राम नाम के चिंतन से सोचने की शक्ति दिव्य बन जाती है । परमेश्वर को अपने अंदर अनुभव करने का राम नाम अराधना एक और मार्ग है ।

\*\*\*

*Purity of thought and action need not to be discovered outside. It is to be realized deep within. Raam Bhava Naad aradhana addresses this process of realization.*

विचारों व कर्मों के पवित्रीकरण को कहीं बाहर खोजने की ज़रूरत नहीं है । राम भाव नाद आराधना इस प्रक्रिया की अनुभूति करवाता है ।

\*\*\*

*Ramatattwa is supreme consciousness which is the divine grace that all Naam sadhak must aspire for.*

राम तत्व सम्पूर्ण चेतना है जो कि दिव्य कृपा स्वरूप है, इसकी हर साधक को आकांक्षा रखनी चाहिए ।

\*\*\*

*The conscious effort of empattering mind becomes easy with Jaap that governs the state called NOW in our consciousness. Constant Rememberance or simran of Ram Naam embalms the thought process of conscious and subconscious levels. Then one reaches the ajapa jaap state (the involuntary jaap of Raam Ramm being done by every particle of body sound and beats of thoughts in mind too) where one even gets connected to one's atmik samaskars in one life. Such is Mahamantra Raaaam naam.*

मन को नियंत्रण करने का एक जागरूक असान प्रयास है जाप जो 'इस पल' का स्तर हमारी चेतना में लाता है । राम नाम का सतत सिमरन चेतन व अवचेतन विचार धारा को सुरक्षित रखता है । तब अजपा जाप के स्तर पर पहुंचा जाता है (जब शरीर का कण कण और मन के विचार भी बिन प्रयास के राम राम जाप करते हैं) जहां एक जीवन के पार भी आत्मिक संस्कारों के साथ जुड़ा जा सकता है । ऐसा है राम नाम महामंत्र ।

\*\*\*

*Ramamayeness is not an awareness of mind but consciousness of atman and its about realizing and getting connected with eternal consciousness that drives the creation and manifestation. Such is glory of Raaaum.*

राममय भाव मन की जागरूकता नहीं है अपितु आत्मा की चेतना है और अनुभव करना व दिव्य चेतना से जुड़ना है जो सर्व रचना व प्रक्रिया चलाती है । ऐसी राम नाम की महिमा है ।

\*\*\*

## **TEMPLE OF RAM NAAM SADHAK**

*Shree Shree Swamiji Maharajji  
And Guruvareshu have had installed*

*The Naam Murti inside  
And wanted us that our body become  
Devalaya for Raam Naam Aradhana.  
Self is Temple be reminded to self  
All the time to experience  
Raaam within.*

*O Param Guru Raaaaaaum  
We bow to thee million times.  
We are ignorant so we fumble  
Make ourself unholy  
Not worth your stay!*

*Hey Raaaum  
You are karunamayi Maa  
And Paramdayalu Parameshwar  
Pardon us and remove our impurities  
And reside in my body temple  
After I beget your attributes  
O my Raaum.*

*Param Guru Raaam  
You are Maa Gauri  
You are Mahamantra  
You are yogi of all Siddhi  
Your Naam is the Icon  
O Raaum  
You are Upasak and Upasana  
Hey My Raaaum.  
Do pardon me for all unholy  
Humanly nature  
Do come and make me  
Your Temple O Ram.  
As I am ignorant even  
To pray O My lord  
Such worthless I remain.  
Yet I remain beneath your feet  
I know nothing but you  
O my loving Raaaum.*

*Hey Param Guru  
Purify my thought and  
Mend my karma*

*So that I truly become your temple  
O my Raaaum.*

*My body be Shivalaya  
Naamakar Murti  
Raaaam is installed  
In the Garbha Griha of  
My jeeva-atman  
In my corest of my Core.  
Anhad Naad be the  
Constant chanting within  
As my mind do simraan  
In an unending manner  
Ram ram ram ram ram ram  
At that lights up the eternal Deepak  
Within of Ramalaya  
As eternal light beames  
All around and sublimity  
Smear our atman tattwa.  
Jaap in mind  
As we hear the music of cosmos  
Raaaaaum raaaaaaauum  
Our utterance become pious  
Well meaning and well wishing.  
My thoughts remain pure  
And unhumful  
My actions are conscious Karma.  
As my karma be mangalkarak only.  
Such are the attributes of Raaaum  
I aspire for  
And my Sakha whispers  
Raaaaaaauum Raaaaaaauum  
Within  
I know not when I became His  
In some muhurtam  
Such is bliss or Prashad  
O my Raaaum.  
Kripa karo Gurudeve  
Never we forget that  
We all are meant to be mobile temple  
Of Raaaum.  
We are to remind ourselves  
All our thinking, vac and karma  
Are happening with*



*Raam seated within  
So purified self  
Prayerful mind  
And healing action be our karma  
Bhakti and sadhana  
O my Raaaauuuumm  
Koti koti Pranam  
Hey Raaaauum.  
Kripa karo, kripa karo  
Daya karo Day Karo  
Kshama karo kshama karo  
O my Maaa  
O my Raaaauuuum.*

### **राम नाम साधक का मंदिर**

*श्री श्री स्वामी जी महाराजजी  
और गुरुवारेशु ने हमारे अंदर  
नाम मूर्ति स्थापित कर दी हुई है  
और वे चाहते थे कि हमारा शरीर राम नाम  
आराधना का देवालय बन जाए ।  
राम को भीतर अनुभव करने के लिए  
यह हर समय हमें स्मरण रखना है कि  
हम मंदिर हैं।*

*ओ परम गुरु राम  
हम आपश्री के आगे*

करोड़ों बार नतमस्तक होते हैं ।

हम अज्ञानी हैं तभी लड़खड़ाते हैं

अपने आप को अपवित्र करते हैं

जो आपश्री के योग्य नहीं हैं ।

हे राम

आप करुणामयी माँ हैं

और परमदयालु परमेश्वर

कृपया हमें क्षमा कीजिए

और हमारे अवगुणों को दूर करके

अपने गुणों से परिपूर्ण करके

हमारे देह के मंदिर में विराजिए

ओ मेरे राम ।

परम गुरु राम

आप माँ गौरी हैं

आप महामंत्र

आप ही सर्व सिद्धियों के योगी हैं

आप श्री का नाम ही मूर्ति है

ओ राम आप ही उपासक व उपासना हैं

हे मेरे राम ।

कृपया मेरी सभी मानवीय प्रकृति

को क्षमा कीजिए

कृपया आकर मुझे अपना मंदिर

स्वीकार कर लीजिए ओ राम ।

मैं तो प्रार्थना करने में भी असमर्थ हूँ

मैं किसी काम का नहीं ।

मैं आपके श्री चरणों में हूँ प्रभु

मैं आपके सिवाय कुछ नहीं जानता

ओ मेरे प्यारे राम ।

हे परम गुरु

मेरे विचारों को पवित्र कर दीजिए

मेरे कर्मों को सुधार दीजिए

ताकि मैं पूर्ण रूप से

आपका मंदिर बन जाऊँ

ओ मेरे राम ।

मेरी देह बन जाए शिवालय

नामाकार बन जाए मूर्ति

मेरे जीवात्मा के गर्भ ग्रीहा की गहराइयों

में राम विराजित हों ।

अनाहद नाद की सतत गूँज

अंदर गूँजे

जैसे मेरा मन सतत सिमरन

अनवरत करे

राम राम राम राम राम राम

रामालय में दिव्य दीपक होता है

प्रकाशित जैसे ही दिव्य प्रकाश

सब ओर फैलता है और हमारे

आत्म तत्व को दिव्यता में लपेट लेता है ।

मन में हो जाय

जब हम ब्रह्माण्ड का संगीत

सुनते हैं

राम राम

हमारा उच्चारण बन जाता है पवित्र,

अच्छा मायने वाला और अच्छा चाहने वाला ।

मेरे विचार पवित्र और अहिंसक रहते हैं

और मेरे कृत्य जागरूक मंगलकारी

कर्म बन जाते हैं

ऐसे राम के गुण मेरी आकांक्षा हैं

और मेरा सखा भीतर से धीमे से

राम राम

उच्चारता है

और किस मुहूर्त में मैं उसका बन गया

मैं नहीं जानता

ऐसा प्रसाद स्वरूप आनंद

ओ मेरे राम ।

कृपा करो गुरुदेव

कि हम कभी न भूलें

कि हम एक चलते फिरते

राम के मंदिर हैं।

हमें अपने आप को स्मरण करवाते रहना है कि

हमारी विचार धारा, वाक् व कर्म

भीतर विराजमान राम द्वारा ही हो रहे हैं

जो पवित्र देह

प्रार्थनामय मन

व नीरोग्यता प्रदान करने वाले हो कर्म,

भक्ति व साधना

ओ मेरे राम

कोटि कोटि प्रणाम

कृपा करो, कृपा करो

दया करो, दया करो

क्षमा करो, क्षमा करो

ओ मेरी माँ,

ओ मेरे राम

\*\*\*

### **Premamaye Ati Kripalu Raaam**

Hey Raaam tu hi premamaye bhakti hai  
Tu hi hai bhakta.  
Tu hi ha araddhya  
Tu hi hai aradhana.  
Raam raas tu sanchare  
Bhakti hamari kerhlaye!  
Naam dhyan Ram mey lagaye  
Hamey Naam Dhyani Kehlaye!  
Etna pyar tuney humko diya  
Jis ko hum akaran kehlaye!  
Tu hi Raam Naad hai  
Sarva gyani hai  
Aur hamari aham mitaye.  
Aisa hai tu mere peyrey Raam  
Sab kuch tu dey ta hai  
Aur hamey sadhsk kehlaya hai!

Yehi kripa karna prabhu  
Terrey naam se kabhi na chute naata  
Chaye hazaro bar saans tutey  
Janma janantar ka.  
Merey pyarey Raaam  
Aspna banakey Rakhna mere Naath  
Raaaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuum.

## प्रेमामय अति कृपालु राम

हे राम तू ही प्रेममय भक्ति है

तू ही भक्त है

तू ही आराध्य है

तू ही आराधना है ।

राम रस तू संचारे

भक्ति हमारी कहलाई

नाम ध्यान राम में लगाई

हम ही नाम ध्यानी कहलाए!

इतना प्यार तूने हमको दिया

जिसको हम अकारण कहलाए

तू ही राम नाद है

सर्व जानी है

और हमारा अहम् मिटाए ।

ऐसा है तू मेरे प्यारे राम  
सब कुछ तू ही देता है  
और हमें साधक कहलाता है!  
यही कृपा करना प्रभु  
चाहे हज़ारों बार साँस टूटे  
तेरे नाम से कभी ना छूटे नाता  
जो है जन्म जन्मानंतर का ।  
मेरे प्यारे राम  
अपना बनाकर रखना मेरे नाथ

राम

\*\*\*

### **Smearing Mind with Raaam**

Swamiji Maharaj Shree taught us  
Move around the world of Mela  
But never forget who you are  
What is the name of your Eshta Naam.  
Duties of world must go on  
But keep all the work on the raam dhun  
So lyric be all karma but  
Be based on pious Ram Dhun.  
Let our body do all the duties  
But mind and lips be raamamaye.  
Karma and Bhakti merges  
For one goal be our bhav dharana.  
Karma is like yogic conjunction



*But core of all core of  
All thought of spiritualism and religion  
Is Bhakti only.  
Ramamaye Bhava  
Takes the bhakti to the level  
Of awakened consciousness of  
Kundalini.  
Raam Dhar aur prabaha  
Runs from mula dhar  
And evolves out of eight chakras  
And can make  
Sadhak merges into Raamatattwa  
Such is Raam Naam Bhava  
Sadhana and siddhi  
That assures even  
Universal wisdom  
Or awakened kundalini.  
Raaaaaaaaaaaaaaaauuuuuummm.*

### **मन का राम से लिप्त होना**

स्वामी जी महाराज श्री ने हमें सिखाया

दुनिया के मेले में घूमो

पर यह कभी न भूलो कि तुम कौन हो

कि तुम्हारे इष्ट का क्या नाम है

दुनिया के कर्तव्य चलने चाहिए

पर सभी कार्य राम धुन पर चलें

सभी कर्म गीत बनें राम नाम की पावन धुन पर

हमारे शरीर को करने दो सभी कर्तव्य

पर मन और होंठ रहें सदा राममय ।  
कर्म और भक्ति का सामन्व्य  
केवल एक भाव आराधना ही हो लक्ष्य हमारा ।  
कर्म एक योग का संयोजन है  
पर सब आध्यात्मिकता और धार्मिकता  
का मूल केवल भक्ति ही है  
राममय भाव भक्ति को कुंडलीनि की जागृत चेतना  
की अवस्था तक ले जाता है ।  
राम धार और प्रभा  
मूलाधार से चलकर आठ चक्करों से  
निकलकर  
साधक को रामतत्व से जोड़ देती है  
ऐसी है राम नाम भाव  
साधना और सिद्धी  
जो सार्वभौमिक ज्ञान या  
जागृत कुंडलिनी का आश्वासन देती है

\*\*\*

## **RAM NAAM DHAR AND DHARANA**

*Ram Naam sadhana  
Stands upon firmness and convictions  
And contemplating upon  
RAAAAM Dhaar  
The flow of Shree Naad Raaum  
Makes it a possibility  
For the celestial connect.  
Though mind will run amock  
with many hops and attractions  
yet we need to stem our mind  
by turing an insight within  
Where the Raam naam fountains  
Flowers light of wisdom.  
A sustained effort and  
Conscious deliberation  
Create this construct of  
Higher contemplation  
Or Raaam Naam Dhyan.  
Controlling Dharana or thoughts of  
Many hue  
Is Raam Naam upasana  
Where path mode and destiny  
All are Raaaauum  
Such is our Raam Dhyan  
Which journies into Raam Dhaam.  
Raaaaaaaaaaaauum!*

## **राम नाम धार और धारणा**

*राम नाम साधना*

*दृढ़ता व निष्ठा पर खड़ी होती है*

*और राम धार पर चिंतन करते हुए*

*श्री नाद का बहना दिव्य संयोजक*

*के लिए संभव करते हैं।*

मन दौड़ेगा विविध आकर्षणों के पीछे  
पर फिर भी हमें अपने मन को  
उस ओर मोड़ना है जहाँ राम नाम  
का फ़व्वारा ज्ञान का प्रकाश प्रस्फुटित करता है ।  
निरंतर प्रयास और चेतन विवेचना  
राम नाम ध्यान की रचना का निर्माण करता है ।  
राम नाम उपासना विभिन्न प्रकार के  
विचारों का नियंत्रण करता है  
जहाँ पथ, साधन और नियति  
सभी राम है  
ऐसा है हमारा राम ध्यान  
जो राम धाम में यात्रा करता है ।

राम

\*\*\*

*Once Swamiji Maharaj Shree told us a gymnast does huge pole vault and He is so precise in his concentration and contemplation that he never errs. Such should be Raam Dhyan by a sadhak. This precision saves the gymnast and same precision connects the sadhak with Ramatattwa. Raaaaaaauuum.*

एक बार स्वामीजी महाराश्री ने बताया कि एक कसरती लम्बे बास के डंडे से कूदता है और वह अपनी एकाग्रता व चिंतन में इतना यथावत् होता है कि कभी कोई गलती नहीं करता । एक साधक का ऐसा राम ध्यान होना चाहिए । यह यथार्थता कसरती को बचाती है और यही यथार्थता साधक को रामतत्व से जोड़ देती है । रामम

\*\*\*

## **NATURE OF RAAM**

*O my Raaaauum  
Your eternity stays in Prem.  
Your divine attributes are Bhakti.  
You only know how to spread love  
You embrace all  
Prakrit Prem is your Pravitti  
Prem Prakriti is you O Ram.  
Your immortal chord of love  
Emits in naad  
Shines like silver line in silence  
Become light beyond silence  
But eternal vibration is love  
Of celestial kind  
As you discriminate none  
Small or big  
Paapi ya punyatma  
Provided one comes to you  
O my Raaum to seek refuge  
With complete surrender  
Param prem Raam Bhava.  
You are Bhakti Bhava eshta  
You are again great Bhakta of your  
Own loving name  
O my Raauuum  
You are thus Bhakti and Bhakta as well.  
You are cosmic bliss  
Which is beyond happiness of mundane  
And architecture of forms.  
If we bow to your sublimity  
We beget your prem bhava  
Which is merciful, caring Raam Prem.  
Bhava Bhakti when sync  
We realize Raama Bhakti shrot.  
Egoless love and love smearing  
Atman bodh connects with  
Para bhakti of Raam.*

*Raam Naam aradhana is to  
Realize Eshwar Prem  
And do aradhana of eshwar  
With Prem.  
This is an inner journey of Maun  
And thoughtless mind  
Smears love for Nirakar Prem Pran  
Param Raaaum.*

*Eternal connectivity  
Passes within as naad strot  
That flows unto HIM.  
RAAM BHAVA IS ESHAT BHAVA  
ALL WE SEE AND FEEL  
ARE RAAAAAAAUUM.  
Loving Raaaaaaum resides in  
Jeevatman  
Loving Ram becomes a reality  
With Gurutattwa  
Aatman flowers  
On Loving Naad  
That merges in Ramamaye Tattwa  
As alukik Prakash appears  
At Dasham Dwar  
And loving sensation of kundulini  
Touches the feet or charan  
Of Brahma tallu(top of the head)  
Wherefrom atmik aura flashes as fountain  
And bhava becomes realization  
Of supra consciousness  
With chaitanya prem.  
Such is the eternal prem shakti  
Naad shakti  
Raaaaaaaaaaaaauuum.*

## **राम का स्वभाव**

*ओ मेरे राम*

*आपश्री की दिव्यता प्रेम में व्याप्त है।*

आपश्री के दिव्य गुण भक्ति स्वरूप हैं ।

आप ही केवल जानते हैं प्रेम बाँटना

सबको गले लगाते हैं

प्राकृत प्रेम आपश्री की प्रवृति है

ओ राम आप ही प्रेम प्रकृति हैं ।

आपश्री की शाश्वत प्रेम की तार

नाद के रूप में फैलती है

और कांस्य की भाँति मौन में चमकती है

और मौन के पार प्रकाश बन जाती है

पर दिव्य तरंग अनंत प्रेम का स्वरूप है

क्योंकि अगर कोई आपके पास

आपकी शरण ग्रहण करने

पूर्ण समर्पण भाव से आता है

ओ मेरे राम

आप परम प्रेम राम भाव से

किसी के साथ पक्षपात नहीं करते

चाहे छोटा हो या बड़ा

पापी हो या पुण्य आत्मा ।

आपश्री भक्ति भाव के इष्ट हैं

आप अपने ही प्यारे नाम के परम भक्त हैं

ओ मेरे राम

इसलिए आप भक्ति भी हैं और भक्त भी !

आपश्री अनंत आनंद हैं

जो कि बेविजूल के आकृतियों के खुशी के पार हैं

अगर हम आपश्री की दिव्यता को प्रणाम करते हैं

तो आपश्री का प्रेम भाव प्राप्त करते हैं जो कि

क्षमावान हैं, करुणावान राम प्रेम हैं।

जब भाव और भक्ति का मेल होता है

तब हम राम भक्ति का स्तोत्र अनुभव करते हैं

अहंकार रहित प्रेम और आत्मबोध के प्रेम से

ओत प्रोत होना राम की पराभक्ति के साथ जोड़ देता है ।

राम नाम आराधना से ईश्वर प्रेम को

अनुभव करते हैं

और ईश्वर की आराधना प्रेम से करते हैं

यह मौन की व निर्विचार मन की

अंतर की यात्रा है जो

निराकार प्रेम प्राण परम

राम को प्रेम से लिप्त कर देता है



*अनंत संयोजकता नाद स्रोत के रूप में*

*परमेश्वर में लीन हो जाता है ।*

*राम भाव ईष्ट भाव है*

*जो भी हम देखते व महसूस करते हैं वह सब राम है ।*

*जीवात्मा में प्यारे राम विराजमान हैं*

*प्यारे राम गुरुत्व के साथ यथार्थ बन जाते हैं*

*आत्मा प्रफुल्लित होता है जब*

*प्रेममयनाद राममय तत्व में समा जाता है*

*और अलौकिक प्रकाश दशम द्वार पर प्रकट होता है*

*और कुंडलिनी की प्रेममयी सनसनी जब*

*ब्रह्मतालु के चरण छूती है*

*जहाँ से आत्मिक प्रकाश फैलता है*

*और चैतन्य प्रेम के संग*

*भाव पूर्व चेतना की प्रबुद्धता प्रदान करते हैं ।*

*ऐसी है अनंत प्रेम शक्ति नाद शक्ति।*

*राममम*

*\*\*\**

***Ram Naam Adradhak's Vani is Manorath of Shree Raam Naad Shree. BUT OUR  
VANI HAS MANY AVAGUN. Let's explore.***

*It expresses Self Ego.*

*It does unnecessary and intended non constructive criticism called Nindya.*

*It utters untruth and become victim of falsification.*

*Vani also carry Anger, jealousy and creates conflicts. It lures and dupes people and even self.*

*Ram Naam Sadhak must consciously think that in their Vani they carry Saravashaktiman Naad Shree Raam, can they afford Nindya, Aham, Mithya, Krodh, Dwesh, Dwandha, Akrosh, kapat and Kalaha in the same vani.*

*Raam Naaam is purest of pure Vani both from uttered to the level of realized para vani. CAN WE AFFORD TO MAKE OUR VANI IMPURE? THINK IT OVER FOR A WHILE.*

**राम नाम आराधक की वाणी श्री राम नाद श्री का मनोरथ है । पर हमारी वाणी के बहुत अवगुण हैं । चलिए समन्वेषण करें-**

*वह स्वयं के अहंकार को प्रदर्शित करती है ।*

*वह बेफजूल और जानबूझकर नकारात्मक आलोचना करती है जिसे हम कहते हैं निंदा ।*

*वह असत्य उच्चारण करती है और झूठ का शिकार बनती है ।*

*वाणी क्रोध, ईर्ष्या और संघर्ष को भी जन्म देती है । वह दूसरों को और स्वयं को भी धोखा व प्रलोभन देती है ।*

*राम नाम साधक को चेतन रूप से मनन करना चाहिए कि वाणी जो सर्वशक्तिमान नाद श्री राम को धारण करती हैं तो क्या वह निंदा, अहम्, मिथ्या, क्रोध, द्वेष, द्वंद, आक्रोश, कपट और कलह को बर्दाश्त कर सकती है?*

*उच्चारण की हुई वाणी से परा वाणी तक राम नाम पावन व अति पावन वाणी है । क्या हम अपनी वाणी को अपवित्र बना सकते हैं ? ज़रा सोचिए इसके बारे ।*

\*\*\*

*Ram Naam Sadhana weaves the Naad fabric with vak, Vachan and vani. This becomes our karma as weaver. This is the cloth we wear. The purity of vani makes our karma as well. Vani we carry is the Samskar of our thinking as well.*

राम नाम साधना नाद रूपी कपड़ा वाक्, वचन और वाणी से बुना जाता है। एक जुलाहे के भाँति यह हमारे कर्म बन जाते हैं। यही कपड़ा हम ओढ़ते हैं। वाणी की पवित्रता हमारे कर्म भी बनाती है। वाणी हमारे विचारों के संस्कार भी ढोती है।

\*\*\*

*Communication beyond human interaction is para vani that is the path way of communication with Divya. This starts where our conscious Maun or silence ends and divinity speaks at that deepest silent zone where para naad is experienced which munijan refer as Para vani ..there starts divine whispers that ordains the cosmos.*

मानवी बातचीत के पार जो संपर्क होता है वह परा वाणी होती है जो कि दिव्यता के साथ संपर्क का मार्ग होता है। यह वहाँ से आरम्भ होता है जहाँ हमारे मौन का अंत होता है और परमेश्वर गहरे शांत क्षेत्र में बोलते हैं जहाँ परा नाद का मुनि जन अनुभव करते हैं और उसे कहते हैं परा वाणी .... वहाँ दिव्य वाणी का शुभारम्भ होता है जो समस्त ब्रह्माण्ड को निर्देश देती है।

\*\*\*

*Swamiji Maharaj Shree declares that eshta of Vani is Brihaspati Jagadish. And when divine is pleased He facilitates eternal connection...*

*Utterance of RAAAAAAAAUUUM*

स्वामी जी महाराज श्री कहते हैं कि वाणी के ईष्ट बृहस्पति जगदीश हैं। और जब परमेश्वर प्रसन्न होते हैं तब वे दिव्य तार प्रशस्त करते हैं ...

राम का उच्चारण करना

\*\*\*

*A loving utterance of Raaaaaaaauum takes 5 to 6 seconds. Cant'we devote 5 seconds in a paassionate Raam Naad aradhana in a jaap. But we instead do jaap in galloping speed to score numbers. Perhaps we tend to forget Ram Aradhana is Bhaav Naad aradhana. Utterance connects. Just do one mala with deepest bhava and see how our loving Ram blesses you. 20 sec x 108. This much time bandhuvareshu. Ram Ram.*

एक प्रेम भरा रामममम का उच्चारण 5-6 सैकंड लेता है। क्या हम 5 सैकंड तीव्रता से उच्चारण किए गए राम नाद आराधना के लिए नहीं ले सकते? पर हम गिनती के लिए दौड़ती हुई गति से जाप करते हैं। शायद हम भूल जाते हैं कि राम आराधना भाव नाद आराधना। उच्चारण हमें जोड़ता है। केवल एक माला गहरे

भाव सहित करिए और देखिए कैसे हमारे प्यारे राम हमें आशीर्वाद हैं । 20 सैकंड x 108 केवल इतना समय  
बंधुवरेशु। राम राम

\*\*\*

*Aaj Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharajji bahot bahot yaad arahen hain. Am loner not at top but in deep Viraha haunting me. His one look made me write billions of words. My Pranam on every Purnima are nostalgia. Am alive with them. He wanted me to visit him more often than I did but that was not to happen in system He was in. As He wanted to talk about Himself and no one was there for that. Its true leaders atop the summit are all alone. His Flower, sweet and shawl made me complete as these three gifts were celestial for anyone who is such low mortal like me from such a huge soul who could talk to eshta face to face. Maharishi subtly is always around us. RAM RAM. Have complete faith in HIM he is working for you 24 x7.*

आज महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी बहुत बहुत याद आ रहे हैं । मैं अकेला हूँ पर चोटि पर नहीं पर गहरा विरह हो रहा है । उनकी एक ही दृष्टि मुझसे करोड़ों शब्द लिखवा लेती थी । हर पूर्णिमा पर मेरे प्रणाम उनकी पुरानी यादें ले आते हैं । मैं उन्हीं के संग जीवित हूँ । वे चाहते थे कि मैं उनसे ज़्यादा मिलने आऊँ पर जिस तरह के नियमबद्धता में वे थे उसमें ऐसा सम्भव नहीं था । वे अपने बारे में बातचीत करना चाहते थे पर वहाँ कोई था नहीं उनके लिए । यह सच है कि चोटी पर सभी लीडर अकेले ही होते हैं । उनका दिया हुआ फूल, मिठाई व शॉल ने मुझे पूर्ण किया क्योंकि यह उपहार मुझ जैसे तुच्छ संसारी के लिए दिव्य ही होंगे कि ऐसी महान आत्मा जो अपने ईश्ट से आमने सामने वार्तालाप कर सकते थे, उन द्वारा दिए गए । महाराजश्री सूक्ष्म रूप से सदा हमारे संग हैं । राम राम । सम्पूर्ण विश्वास रखिए उनपर वे आप पर 24x 7 कार्य कर रहे हैं

|

\*\*\*

*Hey Param Bandhugan, Ram Ram. Naam Sadhana is no storyline enjoyment of Sahitya its pure atman bodh, Eshwar avataran, naam shakti aradhana, through karma, gyan and bhakti yoga.*

हे परम बंधुगण, राम राम । नाम साधना किसी साहित्य की कहानी का मनोरंजन नहीं है अपितु वह कर्म , ज्ञान व भक्ति योग द्वारा पूर्ण आत्म बोध , ईश्वर अवतरण, नाम शक्ति आराधना है ।

\*\*\*\*\*